सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh
www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number :
F.2 (P-2) Press/2023

वर्ष 03, अंक 151, नई दिल्ली, शनिवार 09 अगस्त 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

03 भारत छोड़ो आंदोलन: आज़ादी के सफर में मील का पत्थर

06 खेल के मैदान में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का दखल

08 बाबाधाम में प्रोटोकॉल उलंघन पर सांसद निशिकांत तथा मनोज तिवारी पर मामला दर्ज

E20 पेट्रोल से माइलेज कम होने के दावों पर गडकरी ने दी खुली चुनौती, कह दी ये बड़ी बात

केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी ने एथेनॉल मिश्रित पेट्रोल से माइलेज कम होने के दावों को चुनौती दी है। उन्होंने कहा कि E20 पेट्रोल से वाहनों को कोई समस्या नहीं होती। गडकरी ने पेट्रोलियम लॉबी पर हेरफेर का आरोप लगाया और स्थानीय एथेनॉल उत्पादन से किसानों को लाभ होने की बात कही। पेट्रोलियम मंत्रालय ने भी माना है कि E20 से माइलेज में थोड़ी कमी आ सकती है।

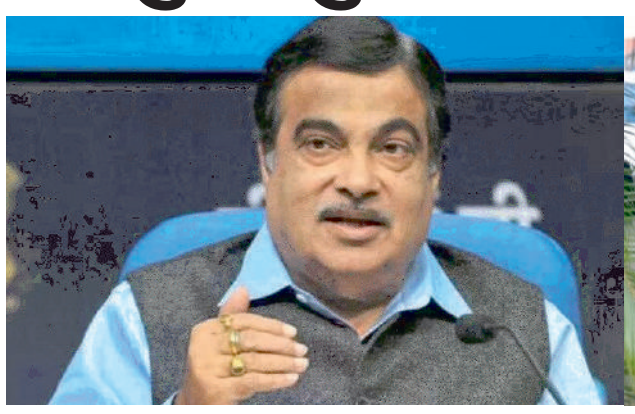

नईदिल्ली। हाल के समय में पेट्रोल में एथेनॉल मिले होने की वजह से गाड़ी के कम माइलेज मिलने को लेकर तरह-तरह की बातें चल रही है। इसपर सरकार की तरफ से पहले ही सफाई दी जा चुकी है। अब इस मामले पर भारत के सड़क परिवहन और राजमार्ग केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी ने भी खुलकर बात की। उन्होंने तो उन लोगों को खुली चुनौती दे दी है, जो इसको लेकर दावा कर रहे हैं कि पेट्रोल में एथेनॉल मिलाने की वजह से गाड़ी कम माइलेज देगी। आइए विस्तार में जानते हैं कि इस मामले में नितिन गडकरी ने क्या कहा?

गडकरी की खुली चुनौती

सड़क परिवहन मंत्री नितिन गडकरी ने शुक्रवार को एक शिखर सम्मेलन में शामिल हुए। यहां पर उन्होंने एक इंटरव्यू के दौरान कहा कि पेट्रोल में 20% एथेनॉल मिलाने (जिसे E20 कहा जाता है) से वाहनों का माइलेज कम होता है, इस तर्क में कोई सच्चाई नहीं है। इसके साथ ही कहा कि इस पर तो कोई चर्चा भी नहीं है। मुझे नहीं पता कि मुझे यह राजनीतिक रूप से कहना चाहिए या नहीं, लेकिन ऐसा लगता है कि पेट्रोलियम लॉबी इसे हेरफेर कर रही है। आप मुझे दुनिया में एक भी ऐसा वाहन दिखाओ जिसे E20 पेट्रोल के कारण समस्या हुई हो! मैं एक खुली चुनौती देता हूँ। E20 से बिल्कुल कोई समस्या नहीं है।

गडकरी ने आगे कहा कि स्थानीय रूप से उत्पादित एथेनॉल का इस्तेमाल भारत के आयात बिल को कम करने में मदद करता है और प्रदूषण को भी कम करता है। मक्के की कीमत 1,200 रुपये प्रति क्विंटल से बढ़कर 2,600 रुपये हो गई हैं, यह सब इसलिए है क्योंकि इससे एथेनॉल का उत्पादन हो रहा है। इससे बिहार और उत्तर प्रदेश में मक्का के तहत आने वाले क्षेत्र में तीन गुना की बढ़ोतरी हुई है। इससे किसानों की आय बढ़ रही है।

पेट्रोलियम मंत्रालय कह चुका है ये बात

नितिन गडकरी के इस खुली चुनौती से पहले पेट्रोलियम मंत्रालय की तरफ से पेट्रोल में एथेनॉल की वजह से माइलेज पर पड़ने वाले असर के बारे में बता चुका है। पेट्रोलियम मंत्रालय की तरफ से कह गया है कि इस फ्यूल के कारण इंजन को कोई बड़ा नुकसान या परफॉर्मेंस में कोई कमी नहीं आती है। हालांकि, उन्होंने स्वीकार किया कि नई कारों में माइलेज 2 प्रतिशत तक और पुरानी कारों में 6 प्रतिशत तक कम हो सकता है, जिन्हें अपडेटेड पार्ट्स की जरूरत हो सकती है। इसको लेकर मंत्रालय की तरफ से सोमवार को एक सोशल मीडिया पर पोस्ट भी किया गया था, जिसमें बताया गया था कि इसे नियमित रखरखाव के साथ संभाला जा सकता है।

इस पोस्ट में पेट्रोलियम मंत्रालय ने कहा था कि E20 पेट्रोल के इस्तेमाल पर पुराने वाहनों में 20,000 से 30,000 किमी के बाद रबर के पुर्जे या गैसकेट जैसे छोटे-मोटे अपडेट की जरूरत हो सकती है, जो सस्ते होते हैं और आमतौर पर नियमित सर्विसिंग के दौरान किए जाते हैं।

दिल्ली मेट्रो के पिंक लाइन पर दिसंबर तक पूरी तरह चलने लगेंगी ड्राइवरलेस मेट्रो, मेजेंटा लाइन पर काम पूरा

दिल्ली मेट्रो की पिंक लाइन पर ड्राइवर रहित मेट्रो का संचालन दिसंबर 2025 तक पूरी तरह से शुरू हो जाएगा। मजलिस पार्क से शिव विहार तक यह सेवा मार्च से ही चल रही है जिसके दो चरण पूरे हो चुके हैं। मैजेंटा लाइन के बाद पिंक लाइन पर भी यूटीओ लागू होने से दिल्ली मेट्रो दुनिया के सबसे बड़े ड्राइवर रहित मेट्रो नेटवर्क में शामिल हो जाएगी।

नई दिल्ली। डीएमआरसी की मजलिस पार्क से शिव विहार पिंक लाइन पर चालक रहित मेट्रो परिचालन मार्च से ही चल रहा है। अब तक दो चरण का काम भी पूरा कर लिया गया है। शेष दो चरण का काम अगले तीन से चार महीने में खत्म होते ही पिंक लाइन भी पूरी तरह चालक रहित मेट्रो का परिचालन होने लगेगा। हाल ही में मजेंटा लाइन पर अनअटेंडेड ट्रेन ऑपरेशन (यूटीओ) यानी चालक रहित मेट्रो के परिचालन का काम हुआ। मजेंटा लाइन पर ट्रेनों का पूरा बेड़ा अब यूटीओ पर ही चल रहा है।

दरअसल, मेट्रो रेल सुरक्षा आयुक्त (सीएमआरएस) के अनुमोदन के बाद चालक रहित मेट्रो के संचालन पर काम वर्ष 2020 में शुरू हुआ। सामान्य मेट्रो से चालक रहित मेट्रो में परिवर्तन चार चरणों में किया जाता है। पहले चरण में कैब को विभाजित करने वाले गेट हटाने के साथ ही ड्राइविंग कंसोल कवर कर दिए जाते हैं। दूसरे चरण में ट्रेन ऑपरेटर मेट्रो कैब में ही मौजूद रहता है।

मजेंटा लाइन पूरी तरह चालक रहित मेट्रो लाइन बन गई

तीसरे चरण में हर दूसरी मेट्रो में ट्रेन ऑपरेटर की मौजूदगी रहती है। वहीं चौथे चरण में ट्रेन आपरेटर को पूरी तरह हटा दिया जाता है। मई में चारों चरण का काम पूरा होने के साथ ही मजेंटा लाइन पूरी तरह चालक रहित मेट्रो लाइन बन गई।

वहीं पिंक लाइन पर भी नवंबर के अंत या दिसंबर के शुरू में चौथे चरण का काम पूरा कर लिया जाएगा। मजेंटा और पिंक दोनों लाइनों पर यूटीओ लागू होने के साथ ही दिल्ली मेट्रो दुनिया के सबसे बड़े चालक रहित मेट्रो नेटवर्क में से एक होगी। दिल्ली-एनसीआर में कुल 397 किलोमीटर के नेटवर्क में से 97 किलोमीटर पूरी तरह से आटोमेटेड कॉरिडोर हो जाएंगे।

रक्षाबंधन से पहले दिल्ली में हाहाकार, भीषण जाम से यातायात ठप; घंटों ट्रैफिक में फंसे रहे लोग

रक्षाबंधन की पूर्व संध्या पर नई दिल्ली के कई इलाकों में भीषण जाम लग गया। आनंद विहार बस अड्डा और रेलवे स्टेशन पर सबसे ज्यादा भीड़ रही क्योंकि लोग यूपी जाने के लिए निकले थे। मंडी हाउस तिलक मार्ग और चांदनी चौक जैसे इलाकों में भी शाम को जाम लगा। पुलिस के अनुसार खरीदारी के लिए निकले लोगों और पार्किंग की समस्या के कारण जाम हुआ।

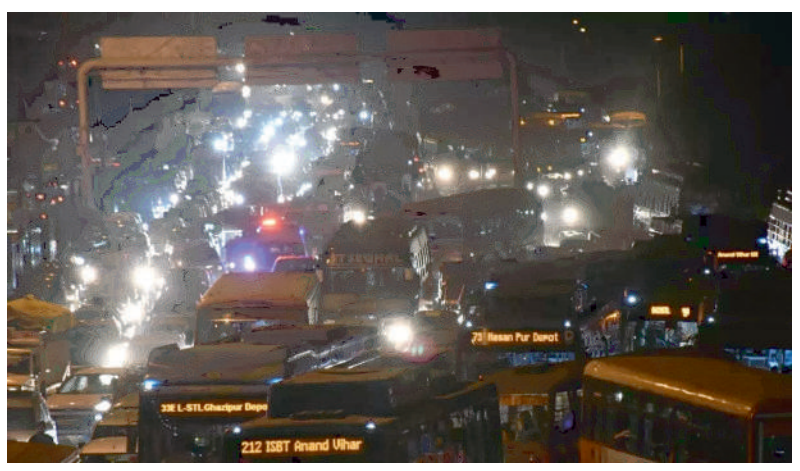

नई दिल्ली। रक्षाबंधन की पूर्व संध्या पर शुक्रवार को राजधानी के कई इलाकों में भीषण जाम लग गया, जिससे वाहन चालकों को भारी परेशानी का सामना करना पड़ा। आधे घंटे का सफर तय करने में वाहन चालकों को डेढ़ से दो घंटे का वक्त लगा। सबसे अधिक जाम आनंद विहार बस अड्डा, आनंद विहार रेलवे स्टेशन के बाहर और गाजीपुर व चौधरी चरण मार्ग पर देखने को मिला। बस अड्डा व रेलवे स्टेशन से लाखों की संख्या में लोग यूपी के विभिन्न जिलों के लिए निकले। जिससे भारी लग गया। पूर्वी दिल्ली के शाहदरा, विवेक विहार, यमुना बाजार आदि कई इलाकों में जाम लगा रहा। दक्षिण दिल्ली के भी कई इलाकों में जाम लगा।

शाम के समय भीषण जाम लग गया

नई दिल्ली जिले में मंडी हाउस, तिलक मार्ग, आइटीओ, विकास मार्ग, रेलवे स्टेशन अजमेरी गेट, पहाड़गंज, सदर बाजार, चांदनी चौक में शाम के समय भीषण जाम लग गया। पुलिस अधिकारी का कहना है कि रक्षाबंधन पर शाम के वक्त बड़ी संख्या में लोग अपने निजी वाहनों से खरीददारी करने निकले, जिससे जाम लग गया।

बाजारों में पार्किंग की दिक्कत के कारण वाहन चालक जहां तहां वाहन खड़े कर दिए, जो जाम का एक बड़ा कारण बना। शाम पांच बजे से देर रात दस बजे तक दिल्ली के कई इलाकों में वाहन चालकों को जाम का सामना करना पड़ा।

दिल्ली-सहारनपुर रोड निर्माण के लिए 32.73 करोड़ रुपये मंजूर, लोनी की जनता की मांग सीएम योगी ने की पूरी

परिवहन विशेष न्यूज

लोनी की लाइफ लाइन दिल्ली-सहारनपुर रोड का निर्माण 32.73 करोड़ रुपये से होगा। विधायक नंद किशोर गुर्जर ने बताया कि बारिश में जलभराव से लोगों को परेशानी होती थी। मुख्यमंत्री से मांग करने पर उन्होंने निर्माण कार्य की स्वीकृति दी जिससे अब जलभराव की समस्या से मुक्ति मिलेगी और लोगों का आवागमन सुगम होगा।

लोनी। दिल्ली सहारनपुर रोड के एक हिस्से का पुनर्निर्माण कराया जाएगा, जिसमें 32 करोड़ 73 लाख रुपये का खर्च आएगा। लोनी विधायक नंद किशोर गुर्जर ने इंटरनेट मीडिया पर दिल्ली-सहारनपुर रोड निर्माण की योजना की जानकारी जनता के साथ साझा की। उनके मुताबिक बरसात के बाद इस मार्ग पर जलभराव की स्थिति बन जाती है, जिससे आवाजाही में लोगों को परेशानी झेलनी पड़ती है।

कार्ययोजना के अनुसार रोड के खराब हिस्सों का पुनर्निर्माण होगा, उचित नालियों का निर्माण होगा और ड्रेनेज प्रणाली को मजबूत किया जाएगा।

इस तरह से बारिश का पानी जमा नहीं होगा और समय पानी वहां से निकल सकेगा। विधायक ने बताया कि लोनी की लाइफलाइन दिल्ली सहारनपुर रोड का निर्माण 32 करोड़ 73 लाख रुपये से किया जाएगा।

कहा कि यहां जलभराव से लोगों को आवाजाही में काफी परेशानी का सामना करना पड़ता है। लोगों की मांग पर चार अगस्त को प्रदेश के मुख्यमंत्री के मेरठ प्रवास के दौरान समीक्षा बैठक में समस्या बताकर समाधान कराने की मांग की थी।

इस पर मुख्यमंत्री ने निर्माण कार्य की स्वीकृति प्रदान की। जल्द ही दिल्ली सहारनपुर रोड का निर्माण कार्य शुरू कराया जाएगा और लोगों को जलभराव की समस्या से छुटकारा मिल सकेगा।

नोएडा के ईटा-2 से मकौड़ा तक छह लेन की बनेगी सड़क मल्टीमॉडल लॉजिस्टिक पार्क तक आवागमन होगा सुगम

ग्रेटर नोएडा में ईटा-2 गोलचक्कर से मकौड़ा गोलचक्कर तक की सड़क को छह लेन का बनाया जाएगा। इस सड़क के चौड़ीकरण से मल्टीमॉडल लॉजिस्टिक पार्क तक पहुंच सुगम होगी। नोएडा एयरपोर्ट के शुरू होने से पहले 130 मीटर चौड़ी सड़क को चौड़ा करना ज़रूरी है। इस परियोजना पर लगभग आठ करोड़ रुपये खर्च होंगे जिससे यातायात सुगम होगा और लॉजिस्टिक पार्क को लाभ मिलेगा।

ग्रेटर नोएडा। सेक्टर ईटा-टू गोलचक्कर से मकौड़ा गोलचक्कर के बीच की सड़क को छह लेन किया जाएगा। यह सड़क 105 मीटर चौड़ी सड़क से जुड़ती है।

सड़क चौड़ी होने से मल्टीमॉडल लॉजिस्टिक पार्क तक आवागमन सुगम हो जाएगा। गोलचक्कर का सुंदरीकरण भी किया जाएगा। ग्रेटर नोएडा व ग्रेनो वेस्ट को जोड़ने वाली 130 मीटर चौड़ी सड़क पर सेक्टर ईटा-टू गोलचक्कर से मकौड़ा गोलचक्कर के बीच की सड़क अभी चार लेन है। लगभग दो किलो मीटर लंबी यह सड़क जगह-जगह पर टूटी है, जिससे आवाजाही में दिक्कत होती है।

आने वाले कुछ महीनों में नोएडा इंटरनेशनल एयरपोर्ट चालू होने पर 130 मीटर चौड़ी सड़क समेत शहर की अन्य प्रमुखों सड़कों पर ट्रैफिक का दबाव और अधिक बढ़ जाएगा।

इससे निपटने के लिए सड़क को छह लेन किया जाएगा। प्राधिकरण के सीईओ से सैद्धांतिक व प्रशासनिक मंजूरी लेने के बाद निविदा जारी कर दी गई है। इसके निर्माण पर लगभग आठ करोड़ रुपये की लागत आएगी।

प्राधिकरण के वरिष्ठ प्रबंधक सन्नी यादव ने बताया सड़क चौड़ी होने से सेक्टर कप्पा-टू में विकसित किए जा रहे मल्टीमॉडल लॉजिस्टिक पार्क को भी मिलेगा।

बता दें कि करीब 174 एकड़ क्षेत्रफल में विकसित होने वाले लाजिस्टिक पार्क से 1200 करोड़ रुपये से अधिक निवेश और 5000 से अधिक युवाओं को रोजगार के अवसर मिलेंगे।

साथ ही उद्योगों के लिए माल ढुलाई आसान हो जाएगी। इस सेक्टर को सभी मुख्य सड़कों से जोड़ने का काम किया जा रहा है।

भाई बहन का अटूट रिश्ता : रक्षाबंधन आज

हर साल सावन पूर्णिमा के दिन भाई-बहन के प्रेम का प्रतीक पर्व राखी या रक्षा बंधन मनाया जाता है। इस शुभ अवसर पर बड़ी संख्या में साधक गंगा समेत पवित्र नदियों में स्नान-ध्यान कर लक्ष्मी नारायण जी की पूजा करते हैं। वहीं, पूजा के बाद बहनें अपने भाई की कलाई पर राखी बांधती हैं। वहीं, भाई अपनी बहनों को गिफ्ट देते हैं। साथ ही सुख और दुख में साथ देने का वचन देते हैं। यह पर्व देशभर में धूमधाम से मनाया जाता है।

दशकों बाद रक्षा बंधन पर दुर्लभ महासंयोग बन रहा है। यह संयोग साल 1930 समान है।

आसान शब्दों में कहें तो दिन, नक्षत्र, पूर्णिमा संयोग, राखी बांधने का समय लगभग समान है। इन योग में लक्ष्मी नारायण जी की पूजा करने और राखी बांधने से दोगुना फल मिलेगा।

रक्षा बंधन शुभ मुहूर्त

==========

वैदिक पंचांग के अनुसार, 08 अगस्त को दोपहर 02 बजकर 12 मिनट पर सावन महीने की पूर्णिमा तिथि की शुरुआत होगी। वहीं, 09 अगस्त को दोपहर 01 बजकर 24 मिनट पर पूर्णिमा तिथि समाप्त होगी। हालांकि, 08 अगस्त को भद्रा दोपहर 02 बजकर 12 मिनट से 09 अगस्त को देर रात 01 बजकर 52 मिनट तक है। इसके लिए 08 अगस्त के बदले 09 अगस्त को राखी का त्योहार मनाया जाएगा। भद्रा के धरती पर रहने के दौरान शुभ काम नहीं किया जाता है। इसके लिए भद्रा का साया रहने पर रक्षा बंधन का त्योहार अगले दिन मनाया जाता है।

राखी बांधने का सही समय

==========

09 अगस्त को राखी बांधने का सही समय सुबह 05 बजकर 21 मिनट से लेकर दोपहर 01 बजकर 24 मिनट तक है। इस समय तक बहनें अपने भाई को राखी बांध सकती हैं। इसके बाद भाद्रपद महीने की शुरुआत होगी।

रक्षा बंधन शुभ योग

==========

रक्षा बंधन के दिन सौभाग्य योग का संयोग बन रहा है। सौभाग्य योग का समापन 10 अगस्त को देर रात 02 बजकर 15 मिनट पर होगा। इसके बाद शोभन योग का निर्माण होगा। वहीं, सर्वार्थ सिद्धि योग का संयोग सुबह 05 बजकर 47 मिनट से लेकर दोपहर 02 बजकर 23 मिनट तक है। इसके साथ ही श्रवण नक्षत्र दोपहर 02 बजकर 23 मिनट तक है। जबकि करण, बव और बालव हैं। इन योग में राखी का त्योहार मनाया जाएगा।

साल 1930 का पंचांग

==========

वैदिक पंचांग गणना के अनुसार, साल 1930 में शनिवार 09 अगस्त के दिन राखी का त्योहार मनाया गया था। इस दिन पूर्णिमा का संयोग शाम 04 बजकर 27 मिनट तक था। वहीं, पूर्णिमा तिथि की शुरुआत दोपहर 02 बजकर 07 मिनट पर शुरु हुआ था। इस प्रकार महज 5 मिनट का अतंर पूर्णिमा तिथि में है। सौभाग्य योग का संयोग 10 अगस्त को सुबह 05 बजकर 21 मिनट पर हुआ था। श्रवण नक्षत्र शाम 04 बजकर 41 मिनट तक था। वहीं, बव और बालव करण के संयोग थे। कुल मिलाकर कहें तो 95 साल बाद राखी का त्योहार समान दिन एवं समय, नक्षत्र और योग में मनाया जाएगा।

भद्रा में क्यों नहीं बांधनी चाहिए राखी ?

==========

भद्रा को हिंदू धर्म में अशुभ समय माना गया है, खासकर जब इसका वास पृथ्वी या पाताल लोक में होता है। ऐसे समय में रक्षाबंधन जैसे शुभ पर्व को मनाने से परहेज़ किया जाता है। मान्यता है कि भद्रा काल में किए गए मांगलिक कार्यों में बाधाएं आती हैं और अनचाहे संकट खड़े हो सकते हैं। खासतौर पर अगर रक्षाबंधन पर भद्रा लगी हो, तो बहनें अपने भाइयों को राखी नहीं बांधतीं, क्योंकि ऐसा करना उनके जीवन में नकारात्मक असर डाल सकता है। हालांकि अगर भद्रा स्वर्ग में हो, तो राखी बांधने में कोई दोष नहीं माना जाता। यही वजह है कि भद्रा की स्थिति जानकर ही रक्षाबंधन का मुहूर्त तय किया जाता है।

रक्षाबंधन

रक्षाबंधन अर्थात राखी का त्यौहार। यह भाई-बहन का त्यौहार है। रक्षाबंधन का त्यौहार श्रावण पूर्णिमा के दिन मनाया जाता है। इसलिए इस दिन को राखी पूर्णिमा भी कहा जाता है। इस साल यह त्यौहार 9 अगस्त २०२५ को है। इस दिन बहन अपने भाई को प्रेम के प्रतीक के रूप में राखी बांधती है। राखी बांधने का उद्देश्य होता है, 'भाई का उत्कर्ष हो और भाई बहन की रक्षा करे।' राखी बांधने पर भाई अपनी बहन को उपहार देकर आशीर्वाद देता है। सहस्रों वर्षों से चले आ रहे इस रक्षाबंधन त्यौहार का इतिहास, शास्त्र, राखी सिद्ध करने की पद्धति और इस त्यौहार का महत्व आगे इस लेख में दिया है।

रक्षाबंधन कब मनाएं ?

'रक्षाबंधन भद्रारहित श्रावण पूर्णिमा के दिन अपराह्नकाल अथवा प्रदोषकाल (सूर्यास्त के उपरांत साधारणत: ढाई घंटे) में करें', ऐसा 'धर्मसिंधु' नामक ग्रंथ में लिखा है।

रक्षाबंधन कब न मनाएं ?

श्रावण पूर्णिमा के दिन 'विष्टी करण (भद्रा) के काल में रक्षाबंधन मनाना विनाश को न्योता देना है', ऐसा 'धर्मसिंधु' नामक ग्रंथ में लिखा है। इस काल में राखी बांधना सर्वथा निषिद्ध है।

रक्षाबंधन ऐसे मनाएं !

ये करें !

भाई अपनी बहन के घर जाएं।

बहन भाई का औक्षण कर उसे नि:स्वार्थ भाव से राखी बांधें।

बहन भाई को नमस्कार कर उसका आशीर्वाद लें।

यदि भाई अपनी बहन को स्वेच्छा से कुछ देना चाहे, तो सात्विक उपहार दें।

दोनों ने प्रार्थना करनी चाहिए।

ये ना करें !

भाई को देवताओं के चित्रवाली राखियां बांधकर देवताओं का अनादर ना करें।

बहन ने भाई को राखी बांधते समय कोई अपेक्षा नहीं रखनी चाहिए।

भद्राकाल में राखी ना बांधें।

रक्षाबंधन के दिन ये करें !

भाई अपनी बहन के घर जाएं।

राखी बांधने हेतु भाई को बैठने के लिए पीठा रखें। पीठे के चारों ओर रंगोली बनाएं। अब भाई एवं बहन दोनों एक-दूसरे की रक्षा के लिए देवताओंसे प्रार्थना करें।

बहन भाई का औक्षण कर उसे नि:स्वार्थ भाव से राखी बांधें। बहन ने भाई को कुमकुम का तिलक लगाना है, भाई की दाई कलाई पर राखी बांधनी है, फिर भाई का औक्षण करना है। औक्षण करते समय प्रथम सोने की अंगूठी एवं सुपारी से अर्धगोलाकार पद्धतिसे औक्षण करें एवं उसके उपरांत घी के निरांजन से अर्धगोलाकार पद्धतिसे * बार भाई की आरती उतारें।

बहन ने भाई को नमस्कार कर उसका आशीर्वाद लें।

यह दिन बहन-भाई के बीच का लेन-देन कम करने के लिए मनाया जाता है। बहन ने अपने भाई को नि:स्वार्थभाव से राखी बांधकर उसका आशीर्वाद लेने पर बहन-भाई का लेन-देन न्यून होने में सहायता होती है।

यदि भाई अपनी बहन को स्वेच्छा से कुछ देना चाहे, तो सात्विक उपहार दें।

रक्षाबंधन के दिन भाई अपनी बहन को शगुन के रूप में भेंट देता है। भेंट देने से एक-दूसरे की याद रहती है। बहन का भाई के प्रति जो प्रेम होता है, उसका मोल भाई कभी कर नहीं सकता; किन्तु बहन को प्रेम देकर वह इसे कुछ मात्रा में अल्प करने का प्रयास करता है। भाई उपहार जैसे स्थूल माध्यम द्वारा बहन के प्रति अपना प्रेम व्यक्त करता है। उपहार देते समय भाई के मन में ईश्वर के प्रति भाव होना चाहिए। इससे बहन को अधिक लाभ होता है।

बहन ने भाई को उपहार मांगना नहीं चाहिए। यदि भाई स्वेच्छा से उपहार दे, तो बहन ने उपहार का स्विकार कर उसका सम्मान करना चाहिए; अन्यथा वह उपहार लेना टालना अधिक उचित होता है।

सात्विक वस्तुओं का किसी जीव पर संसारिक परिणाम नहीं होता। सात्विक वस्तु उपहार स्वरूप देने पर जीव को २० प्रतिशत तथा लेनेवाले जीव को 18 प्रतिशत लाभ होता है। सात्विक कृति करने पर लेन-देन अल्प होकर उससे नया लेन-देन उत्पन्न नहीं होता है।

दोनों ने प्रार्थना करनी चाहिए।

येन बद्धो बली राजा दानवेन्द्रो महाबल:।

तेन त्वामपि बध्नामि रक्षे मा चल मा चल ।।

अर्थ : महाबली एवं दानवेंद्र बलि राजा जिससे बद्ध हुआ, उसी रक्षा से मैं तुम्हें भी बांधती हूं। हे राखी (रक्षा), तुम अडिग रहना।

रक्षाबंधन के दिन प्रत्येक भाई ईश्वर से प्रार्थना करे, 'मेरी बहन की रक्षा के साथ-साथ मुझसे समाज, राष्ट्र एवं धर्म की रक्षा के लिए प्रयास हों'। बहन अपने भाई के कल्याण हेतु प्रार्थना करें, तथा 'राष्ट्र एवं धर्म की रक्षा हेतु हमसे प्रयास होने दीजिए।' ऐसी भी प्रार्थना करें।

रक्षाबंधन के दिन ये ना करें !

भाई को देवताओं की चित्रवाली राखियां ना बांधें।

राखी के माध्यम से लेनेवाला देवताओं का अनादर रोकिए !

आजकल राखी पर 'ॐ' अथवा देवताओं के चित्र होते हैं। राखी का उपयोग होने के उपरांत वह यहां-वहां बिखरी दिखाई देती है। इससे देवता एवं धर्मप्रतीकों का अपमान होता है, जिससे पाप लगता है। इससे बचने के लिए राखी उतारने पर उसे जल में विसर्जित करना चाहिए !

भाई को राखी बांधते समय बहन उससे कोई अपेक्षा ना रखें। आजकल बहनें अपने भाई को पहले ही उन्हें रक्षाबंधन के दिन क्या भेंट चाहिए यह बताकर रखती है, तथा वह मिलने के लिए ठठ भी करती हैं। इस प्रकार मन में इच्छा अथवा अपेक्षा रखने पर बहनें उस दिन मिलनेवाले आध्यात्मिक लाभ से वंचित होती है। क्योंकि रक्षाबंधन मनाने का उद्देश तो बहन-भाई के बीच का लेन-देन अल्प करना है। अपेक्षा रखकर भाई से वस्तु की प्राप्ति करने पर लेन-देन * गुना बढता है तथा आध्यात्मिक दृष्टि से १२ प्रतिशत हानि होती है। अपेक्षा के कारण उस दिन वातावरण में जो प्रेम तथा आनंद की तरंगें होती है, उसका लाभ नहीं मिल सकता है।

भद्राकाल में राखी ना बांधें।

भद्राकाल में राखी ना बांधें। (संदर्भ : धर्मसिंधु)

जिस प्रकार से शनि की क्रूर दृष्टि हानिकारक होती है, उसी प्रकार से शनि की बहन भद्रा का प्रभाव भी हानिकारक होता है।

देवताओं के चित्रवाली राखियों का उपयोग न करें !

वर्तमान स्थिति में हाट में अर्थात मार्केट में रक्षाबंधन के लिए विभिन्न प्रकार की राखियां मिलती हैं। परंतु उनमें से अधिकांश राखियां दिखावटी होती हैं। वे सात्विक नहीं होतीं। दिखावटी राखी लेने की अपेक्षा सात्विक एवं जिसमें ईश्वरीय तत्त्व आकृष्ट करनेकी क्षमतावाली राखियां लें। सात्विक राखी के कारण सत्त्वगुण में भी वृद्धि होती है।

रक्षाबंधन का त्यौहार भाई-बहन में प्रेम की वृद्धि करने के साथ-साथ उनमें लेन-देन हिसाब राखी के माध्यम से अल्प करने में सहायता करता है। वैसे ही अन्य त्यौहारों का शास्त्र समझकर मनाने से हमें अधिक लाभ होता है।

रक्षाबंधन : इतिहास

1. 'पाताल के बलिराजा के हाथ पर राखी बांधकर, लक्ष्मी ने उन्हें अपना भाई बनाकर, नारायण को मुक्त करवाया। वह दिन था श्रावण पूर्णिमा।'

२. 'बारह वर्ष इंद्र और दैत्यों में युद्ध चला। पृथ्वी पर १२ वर्ष अर्थात उच्च लोक के १२ दिन। इंद्र थक गए थे और दैत्य उनपर भारी पड रहे थे। इंद्र इस युद्ध में स्वयं के प्राण बचाकर भाग जाने की सिद्धता में थे। इंद्र की यह व्यथा सुनकर इंद्राणी गुरु की शरण में पहुंची। गुरु बृहस्पति ध्यान लगाकर इंद्राणी से बोले, "यदि तुम अपने पतिव्रता बल का उपयोग कर यह संकल्प करो कि मेरे पतिदेव सुरक्षित रहें और इंद्र की दांयी कलाई पर एक धागा बांधो, तो इंद्र युद्ध में विजयी होंगे।" इंद्र विजयी हुए और इंद्राणी का संकल्प साकार हो गया।

येन बद्धो बली राजा दानवेन्द्रो महाबल:।

तेन त्वाम् अभिबध्नामि रक्षे मा चल मा चल ।।

अर्थ : 'जो बारीक रक्षासूत्र महाशक्तिशाली असुरराज बलि को बांधा था, वही मैं आपको बांध रही हूं। आपकी रक्षा हो। यह धागा न टूटे और सदैव आपकी रक्षा हो।'

*. भविष्यपुराण में बताए अनुसार रक्षाबंधन मूलत: राजाओं के लिए था। अब यह त्यौहार सभी लोग मनाते हैं।

4. प्राचीन काल की राखी

चावल, स्वर्ण एवं श्वेत सरसों को छोटी पोटली में एकत्रित बांधने से रक्षा अर्थात राखी बनती है। वह रेशमी धागे से बांधी जाती है।

येन बद्धो बली राजा दानवेन्द्रो महाबल:।

तेन त्वामपि बध्नामि रक्षे मा चल मा चल ।।

अर्थ : महाबली एवं दानवेंद्र बलि राजा जिससे बद्ध हुआ, उसी रक्षा से मैं तुम्हें भी बांधती हूं। हे राखी, तुम अडिग रहना।

राखी बांधने का शास्त्र

भाई – बहन के बीच का लेन-देन घटता है

बहन एवं भाई का एक-दूसरे के साथ साधारणत: *० प्रतिशत लेन-देन का हिसाब होता है। लेन-देन का हिसाब राखी पूर्णिमा जैसे त्यौहारों के माध्यम से घटता है अर्थात वह स्थूल से एक-दूसरे के बंधन में अटकते हैं; परंतु सूक्ष्म-रूप से आपसी लेन-देन के हिसाब को समाप्त करते हैं।

आध्यात्मिक दृष्टिकोण : पुरुषों में कार्यरत हानिकारक यम-तरंगें रोकना

राखी पूर्णिमा अर्थात रक्षाबंधन के दिन वातावरण में यमतरंगों की मात्रा अधिक होती है। यमतरंगे पुरुषों की देह में अधिक मात्रा में गतिमान होती हैं। पुरुषों की देह में यमतरंगों का प्रवाह प्रारंभ होने पर उनकी सूर्यनाडी जागृत होती है। सूर्यनाडी जागृत होने के कारण देह में रज-तम की प्रबलता बढती है। यमतरंगें संपूर्ण शरीर में प्रवेश करती हैं। इन यमतरंगों की मात्रा *० प्रतिशत से अधिक बढने पर जीव के प्राणों को धोखा होने की संभावना होती है; इसलिए प्रत्यक्ष शक्तिबीजरूपीय बहन द्वारा प्रवाहित होनेवाली यमतरंगों को तथा सूर्यनाडी को राखी का बंधन बांधकर शांत किया जाता है। इससे पुरुषों में विद्यमान शिव-तत्त्व को जागृत होकर सुषुम्नानाडी अंशत: जागृत होती है।'

भावनिक दृष्टिकोण : भाई-बहन के निर्मल प्रेम से काम-क्रोध को निष्प्रभावी करना

'रक्षाबंधन यह विकारों में अटकनेवाले युवा-युवतियों के लिए एक व्रत है। भाई को राखी बांधने से अधिक महत्त्वपूर्ण है किसी युवती / स्त्री द्वारा किसी युवक / पुरुष को राखी बांधना। इससे विशेषत: युवकों एवं पुरुषों का युवती अथवा स्त्री की ओर देखने का दृष्टिकोण परिवर्तित होने में सहायता होती है।

रक्षाबंधन के विषय में प्राप्त सूक्ष्म ज्ञान

चावल (कच्चे) के कणों का समुच्चय राखी के रूप में रेशमी धागे से बांधने की पद्धति क्यों है ?

'चावल सर्वसमावेशकता का प्रतीक है। अर्थात वे सभी को अपने में समा लेनेवाले तथा सर्व तरंगों का उत्तम आदान-प्रदान करनेवाला है। चावल का समुच्चय श्वेत वस्त्र में बांधकर वह रेशम के धागे से शिवरूपी जीव के दांए हाथ पर बांधना अर्थात एक प्रकार से सात्विक रेशमी बंधन सिद्ध करना। रेशमी धागा सात्विक तरंगों का गतिमान वहन करने में अग्रणी है। कृति के स्तर पर प्रत्यक्ष कर्म होने हेतु यह रेशमी बंधन प्रत्यक्ष सिद्ध किया जाता है। राखी बांधनेवाले जीव में विद्यमान शक्तितरंगें चावल के माध्यम से शिवरूपी जीव की ओर संक्रमित होने से उसकी सूर्यनाडी कार्यरत होती है तथा उसमें विद्यमान शिवतत्त्व जागृत होता है। चावल के कणों के माध्यम से शिव की क्रियाशक्ति कार्यरत होती है एवं वायुमंडल में कार्यतरंगों का गतिमान प्रक्षेपण करती हैं, जिससे वायुमंडल के रज-तम कणों का विघटन होता है। इस प्रकार रक्षाबंधन का मूल उद्देश्य शिव और शक्ति के संयोग से इस दिन का लाभ प्राप्त करना है। यह मानवजाति की दृष्टि से अधिक इष्ट होता है।'

।। हनुमान ।।

जन्मस्थान- सुमेरु पर्वत

वर्ग- किंपुरुष

गण - वानर

माता- अंजना (शापित पुंजिक्स्थला)

पिता- केसरी

मानस पिता- महारुद्र शिव(ग्यारहवें रुद्र)

संरक्षक पिता- मरुद्गण(पवनदेव)

कार्यस्थान- किष्किंधा व अयोध्या

लंबाई- सामान्य पुरुष की तुलना में लंबे

शरीर सौष्ठव-- सुगठित, वज्रसमान कठोर

पहचान चिन्ह-- वज्र प्रहार से टेढी ठोड़ी।

अतिरिक्त विशेषता-- सक्रिय पूंछ।

शिक्षा-- सम्पूर्ण वेदवेदांग, शस्त्र व शास्त्र।

गुरु -- विवस्वान (सूर्य), शिव, मरुद्गण

प्रमुख शस्त्र-- गदा

प्रमुख युद्ध--

1-- देवलोक का युद्ध-- विरुद्ध विवस्वान, राहु, इंद्र।

2-- गुरुदक्षिणा का युद्ध -- विरुद्ध शनि

3-- अशोकवाटिका का युद्ध-- विरुद्ध अक्षकुमार, इंद्रजीत

4-- लंका का युद्ध-- विरुद्ध रावण, कुंभकर्ण

5-- वीरपुर का युद्ध-विरुद्ध महारुद्र शिव

6--सरयू तट का युद्ध- विरुद्ध श्रीराम

7-- वाल्मीकि आश्रम का युद्ध-- विरुद्ध लव-कुश

हिंदू देवमंडल में समस्त देवी देवताओं में हनुमान ही इतने लोकप्रिय क्यों हैं ? जरा याद कीजिये अपने बचपन को।

रामलीला और फिर टीवी सीरियल रामायण में हनुमानजी की एंट्री....किस कदर हम पुलकित हो उठते थे।

भारत ही नहीं दक्षिण पूर्व एशिया से लेकर सुदूर अतीत में पश्चिम एशिया में हित्तियों की मुद्राओं, मूर्तियों व लोकनाट्यों में उनका अंकन मंचन होता रहा है।

हनुमान जो एक छोटे बच्चे से लेकर गोस्वामी तुलसीदास जैसे गंभीर वेदज्ञ विद्वान के मन में बसे हुये।

हनुमान जो दुर्बलों के भी हैं और मल्लों व योद्धाओं के आराध्य भी।

क्यों ?

जवाब प्रश्न में ही छिपा हुआ है।

हनुमान एक ओर बच्चे की तरह अबोध, निश्छल और सरल हैं तो दूसरी ओर वे ज्ञानियों में भी अग्रगण्य हैं।

हनुमान एक ओर वज्रांग शरीर तो दूसरी ओर उनका शक्तिसंयम व ब्रह्मचर्य का आदर्श।

हनुमान के व्यक्तित्व में सरलता और गंभीरता के दो विपरीत ध्रुवीय गुणों का यह अद्भुत समावेश ही उन्हें दैवीय बनाता है।

कुछ ऐसे ही गुण महाभारत में भीम में भी हैं और इसीलिये लोकप्रिय भी परंतु वे कभी भी ईश्वरत्व की श्रेणी में नहीं आ सके क्योंकि भीम में प्रतिशोध था जबकि हनुमान ने सदैव निष्काम कर्म किया,

भीम में नीरक्षीर विवेक का अभाव था जबकि हनुमान का विवेक उन्हें स्पष्ट राह दिखता था।

यही कारण है कि श्रीराम के प्रति अविचल भक्ति के बावजूद वे अपने उन्हीं आराध्य के विरुद्ध कर्तव्य की पुकार पर युद्ध में उतर गये।

त्याग ऐसा कि अपनी लिखी रामायाण को पानी में इसलिये डुबो दिया कि वाल्मीकि उनकी कथा सुनकर दु:खी हो गये कि उनकी लिखी रामायण को अब कोई नहीं पढ़ेगा।

संगीतज्ञ और गायक ऐसे कि उनके गायन को सुनकर संगीतशास्त्र के प्रणेता साक्षात शिव और नारद सहित समस्त देवता द्रवीभूत हो गए।

ऐसे हैं हमारे आराध्य हनुमान जो एक ओर चंदेल और जेठवा जैसे राजकुलों के प्रेरणापुरुष बने तो वहीं ओर उत्तर में गोस्वामी तुलसीदास द्वारा और दक्षिण में समर्थगुरु रामदास की प्रेरणा से स्थापित अखाड़ों में उन हिंदू युवकों के लिये प्रेरणास्रोत बने जिन्होंने आततायी विदेशी मुस्लिम शासकों के विरुद्ध स्वतंत्रता संग्राम का नेतृत्व किया।

ब्रिटिश गुलामी के काल में भी ये अखाड़े और वहाँ स्थापित बजरंगबली हिंदू युवकों में निरंतर शक्तिशाली शरीर और शक्तिशाली मन की प्रेरणा देते रहे।

आज अखाड़ों का स्थान जिमों ने और अखाड़े के कोने पर स्थापित बजरंगबली की प्रतिमा का स्थान बॉडीबिल्डर्स के पोस्टरों ने ले लिया है जिसका नतीजा है चरित्र से रहित लड़कियों को प्रभावित करने वाले दिखावटी सौष्ठव वाले आदर्शरहित खोखले युवा।

गैस, एसिडिटी और डकार आने का संभावित कारण

1. वात दोष / वायु विकार...

डकार मुख्यत: वायु विकार का संकेत है।

2. खाली पेट में गैस निर्माण .... देर रात तक खाली पेट रहना।

3. कुपाचन (Indigestion) ....

दिन भर का खाना अच्छे से पच न पाना।

4. अनियमित भोजन समय....

5. रात का खाना देर से या बहुत भारी खाना।

5. नर्वस सिस्टम / एंग्जायटी....

6. कुछ मामलों में चिंता से भी डकार आती है।

6. Silent Reflux ....एसिडिटी जैसा लक्षण न होते हुए भी डकारें आ सकती हैं।

स्थायी उपाय (प्राकृतिक और आयुर्वेदिक)....

1. भोजन सुधार (Diet Correction)....

समय कार्य

रात 7:00 PM तक हल्का, सुपाच्य भोजन करें (उदाहरण: मूंग की खिचड़ी, दलिया, सूप)

भोजन के बाद 100 कदम टहलना

दिनभर में अत्यधिक तला-भुना, चाय, कॉफी, मैदा, कोल्ड ड्रिंक्स से बचें

2. आयुर्वेदिक घरेलू उपाय....

हिंग वा स व (Hingwasava) – 2 चम्मच पानी के साथ, रात को भोजन के बाद

अविपत्तिकर चूर्ण – 1 चम्मच गुनगुने पानी के साथ रात को सोने से पहले

त्रिफला चूर्ण – 1 चम्मच गर्म पानी में, रात को (यदि कब्ज है)

जीरा + अजवाइन + सौंठ का पाउडर – समान मात्रा में मिलाकर, आधा चम्मच भोजन के बाद लें

3. लाइफस्टाइल सुधार....

रात को लेटने से पहले 2 घंटे का गैप रखें भोजन और नींद के बीच

मोबाइल/स्क्रीन का उपयोग कम करें रात में

बाएं करवट लेटें – इससे डाइजेशन में मदद मिलती है

दिन में कम से कम 20 मिनट वॉक या योगासन

4. योग और प्राणायाम.....

वज्रासन (भोजन के बाद 5-10 मिनट)

अनुलोम-विलोम (रोज़ 10 मिनट)

पवनमुक्तासन (सुबह खाली पेट,) करना चाहिए

H. Pylori टेस्ट कभी-कभी करना चाहिए – यह बैक्टीरिया पेट में गैस और डकार की समस्या दे सकता है

आयुर्वेद अपनाएं स्वस्थ जीवन पाएं....

धीरे धीरे से साइलेंट हार्ट अटैक भी होता है खतरनाक ये अंदर ही अंदर बनाता है दिल को बीमार : डॉ ह्रदयेश कुमार

अखिल भारतीय मानव कल्याण ट्रस्ट फ्री शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाएं नि:शुल्क प्रदान करने के साथ आम लोगों को स्वास्थ्य के लिए जागरूक होना चाहिए इस लिए बल्लबगढ़ तिरखा कॉलोनी शिव मंदिर परिसर में संगोष्ठी का आयोजन किया डॉ ह्रदयेश कुमार ने विशेष रूप से कहा कि आजकल हार्ट अटैक के मामले बढ़ रहे हैं जिनमें साइलेंट हार्ट अटैक भी शामिल है जिसके लक्षण स्पष्ट नहीं होते। लगातार थकान इसका मुख्य चेतावनी संकेत है क्योंकि दिल ठीक से खून पंप नहीं कर पाता। डायबिटीज और हाई बीपी वाले लोगों को ज्यादा सावधान रहना चाहिए और नियमित जांच करानी चाहिए।

साइलेंट हार्ट अटैक और इसके लक्षण, खतरे और बचाव के उपाय इन दिनों दिल से जुड़ी बीमारियों के मामले तेजी से बढ़ते जा रहे हैं।

इन दिनों युवाओं में भी हार्ट अटैक के मामले तेजी से बढ़ रहे हैं।

खराब लाइफस्टाइल और गलत खानपान लोगों के दिल को कमजोर बना रहा है। पहले जहां बुजुर्गों में यह समस्या देखने को मिलती थी, वहीं अब युवा भी तेजी से इसका शिकार होते जा रहे हैं। ये सब हमारे खाने पीने की वजह से ही सब समस्याएं होती हैं यह एक ऐसी समस्या बन चुकी है, जिसके बारे में

हर कोई बात करता है, लेकिन शायद ही कोई साइलेंट हार्ट अटैक के बारे में बात करता नजर आता होगा। धीरे धीरे हार्ट अटैक (Silent Heart Attack), जिसे रूमायोकार्डियल इन्फार्क्शनर भी कहा जाता है, एक ऐसा हार्ट अटैक है, जो व्यक्ति को पता भी नहीं चलता। इसलिए इसे ज्यादा खतरनाक माना जाता है। इन सभी जानकारी को अखिल भारतीय मानव कल्याण ट्रस्ट के संस्थापक डॉ ह्रदयेश कुमार ने विस्तार से बताया कि साइलेंट हार्ट अटैक से

क्या होता है साइलेंट हार्ट अटैक ?

जैसाकि नाम से भी पता चल रहा है, यह एक ऐसा अटैक है, जिसके आने के बारे में अक्सर पता ही नहीं चलता। इसमें सीने में दर्द या अचानक बेहोशी नहीं होती, बल्कि व्यक्ति को हफ्तों, महीनों या सालों बाद नियमित ईसीजी के जरिए ही पता चल सकता है। भले ही इसके कोई खास संकेत दिखाई नहीं देते, लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि इससे कोई खतरा नहीं है। इसके कुछ संकेतों पर ध्यान देना बेहद जरूरी है।

सबसे बड़ा चेतावनी संकेत

साइलेंट हार्ट अटैक से पहले एक ऐसा लक्षण नजर आता है, जिसे लोग आम समझकर अनदेखा कर देते हैं। यह लक्षण कुछ और नहीं, बल्कि लगातार होने वाली थकान है। यह सिर्फ किसी लंबे दिन के बाद होने वाली सामान्य थकान नहीं है। यह एक लगातार होने वाली थकावट है, जो रात भर अच्छी नींद या पर्याप्त आराम के बाद भी दूर नहीं होती। अगर आपको भी ऐसा कुछ महसूस होता है, तो इसे हल्के में न लें।

तुरन्त ही अपने नजदीकी डॉक्टर से परामर्श अवश्य लें ये सब जानकारी आम लोगों को जागरूक करने के लिए बताया गया है।

यहां मिर्थी स्थित आईटीबीपी परिसर के मनोरंजन कक्ष में शुक्रवार को 'रक्षाबंधन' का त्योहार हर्षोल्लास पूर्वक मनाया गया।

परिवहन विशेष

इस अवसर पर पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय से शिक्षकों और स्कूली बच्चों ने आईटीबीपी अधिकारियों, अधीनस्थ अधिकारियों तथा हिमवीरों को रक्षासूत्र बांधे। इस मौके पर वाहिनी परिसर में कार्यक्रम का उद्घाटन वाहिनी कमांडेंट श्री प्रशांत यादव के मार्गदर्शन में एंडजूटेंट श्री मलविन्द्र सिंह, उपसेनानी/जीडी द्वारा किया गया। अपने संबोधन के दौरान श्री सिंह ने कहा कि-'रक्षाबंधन का पर्व पर्व भाई-बहन के बीच के प्यार, सम्मान और समर्पण को दर्शाता है। उन्होंने आगे कहा कि-'भारतीय संस्कृति की यह विशेषता रही है कि यहां हर पर्व केवल पूजा का अवसर नहीं, बल्कि जीवन के गहन मूल्यों का भी उत्सव होता है और रक्षाबंधन भी एक ऐसा ही विशेष पर्व है, जो अपने भीतर आध्यात्मिकता, आत्मीयता और बौद्धिकता को समेटे हुए है।' रक्षाबंधन पर्व के इस अवसर पर सांस्कृतिक प्रस्तुतियों से स्कूली बच्चों ने समां बांध दिया और कार्यक्रम की शुरुआत श्री राम स्तुति से की गई। इस दौरान वाहिनी की ओर क्रमशः रंगोली प्रतियोगिता, कविता वाचन प्रतियोगिता, नृत्य प्रतियोगिता, पेंटिंग प्रतियोगिता और राखी मेकिंग प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के अंत में एंडजूटेंट श्री मलविन्द्र सिंह उपसेनानी द्वारा सभी बच्चों को पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर मंच संचालन निरीक्षक राजभाषा सुनील कुमार किया गया। रक्षाबंधन के अवसर पर आयोजित इस कार्यक्रम के दौरान श्री गिरधर सिंह, सहायक सेनानी/जीडी, श्री प्रीतम सिंह, सहायक सेनानी, सउपनिरी/ईएससी पीयूष और भूपेश कुमार के अलावा महिलाएं, बच्चे व हिमवीर मौजूद रहे। सभी बच्चों, शिक्षकों व उपस्थित जवानों के लिए इस अवसर पर जलपान की व्यवस्था की गई थी। कार्यक्रम के अंत में सभी स्कूली बच्चों द्वारा सामूहिक नृत्य की प्रस्तुति भी दी गई।

आखिरकार दगाबाज चीन पर भरोसा करके फिर चोट खाने का रिस्क क्यों उठा रहे हैं भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी?

कमलेश पांडेय

जब भी हमारे देश का कोई प्रधानमंत्री चीन, पाकिस्तान और बंगलादेश जैसे शत्रु देशों से वैश्विक कूटनीति के नाम पर प्रेम और भरोसे की पींगे बढ़ाना चाहता है या फिर नेपाल, श्रीलंका, मालदीव, म्यांमार या तिब्बतियों पर भारतीयों की गाढ़ी कमाई लुटाता है तो मेरे मन में एक ही सवाल पैदा होता है कि हमारे इन नेताओं को इतिहास का ज्ञान नहीं है, या फिर भौगोलिक सच्चाई से ये नादान हैं। क्या इन्हें उन वीर जवानों और साम्प्रदायिक दंगा, आतंकवाद, नक्सलवाद, संगठित अपराध की भेंट चढ़े आमलोगों व सुरक्षा कर्मियों के चेहरे याद नहीं आते, उनकी विधवाओं और बच्चों, वृद्ध माता पिता आदि की याद नहीं आती जिनकी असमय मौत का एकमात्र कारण चीन, पाकिस्तान, बंगलादेश या इनका रिंग मास्टर अमेरिका की विध्वंसक नीतियां रही हैं।

मसलन, यहां पर सवाल भूमि के किसी कब्जाए हुए टुकड़े या सांप्रदायिक मिजाज पर वर्चस्व की मानसिकता का नहीं है बल्कि उन दुर्भाग्यपूर्ण राजनीतिक-प्रशासनिक फैसलों से जुड़ा हुआ है जिसकी कीमत हमारे वीर जवानों और आम आदमियों को चुकानी पड़ती है। जैसा कि पूर्व प्रधानमंत्री अटलबिहारी बाजपेयी ने कहा था कि हम इतिहास बदल सकते हैं लेकिन भूगोल नहीं, के बारे में सिर्फ इतनी सी दलील देना चाहूंगा कि आप इतिहास और भूगोल को यथावत रहने दीजिए, बस अपने राजनीति विज्ञान के विषय वस्तु बदल दीजिए।

आपको पता होना चाहिए कि राजनीति विज्ञान परिवर्तन शील होता है, इसलिए इसे हमारे वीर जवानों और आम आदमियों के अनुकूल बना दीजिए। आपको भी इस बात का आभास होगा कि हमारे दलित-पिछड़े लोग इन सूक्ष्म प्रशासनिक बारीकियों को नहीं समझ पाते हैं, इसलिए इस अहम बदलाव के लिए किसी जनादेश का इंतजार मत कीजिए बल्कि अपनी अंतरआत्मा से फैसले लीजिए। यह बात मैं इसलिए उठा रहा हूँ कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी शंघाई सहयोग संगठन (एससीओ) के शिखर सम्मेलन में हिस्सा लेने के लिए इस महीने के

आखिर में चीन जा सकते हैं। यह सम्मेलन 31 अगस्त और 1 सितंबर को चीन के उत्तरी शहर तियानजिन में होना है।

सवाल है कि ऐसा अप्रत्याशित कदम वह तब उठा रहे हैं जब अमेरिका-चीन प्रेरित हिन्दू विरोधी पाकिस्तानी आतंकवादी पहलगाम हमला और ऑपरेशन सिंदूर से मिले जख्मों को ज्यादा दिन नहीं बीते हैं जबकि साल 2020 में पूर्वी लद्दाख की गलवान घाटी में भारत और चीन के सैनिकों के बीच झड़प के बाद यह मोदी की पहली चीन यात्रा होगी। वह इससे पहले 2018 में चीन गए थे।

सीधा सवाल है कि जब प्रधानमंत्री मोदी गलवान सैन्य झड़प से इतने व्यथित थे कि लगातार पांच सालों तक चीन नहीं गए तो अब फिर पहलगाम कांड के तुरंत बाद ऐसा क्यों कर रहे हैं? क्या आपकी अंतरात्मा अब मर चुकी है या फिर अप्रत्याशित अमेरिकी धोखे मिलने के बाद अगले चीनी धोखे खाने की बुनियाद रखने को लालायित मालूम पड़ते हैं! क्या आपको नहीं पता कि जवाहरलाल नेहरू और नरेंद्र मोदी की सद्भावना को मुंह को मुंह चिढ़ाने वाला चीन कभी भी भारत का सगा नहीं हो सकता।

सुलगता सवाल है कि वर्ष1962 से साल 2020 तक जब चीन की फितरत नहीं बदली तो आगे फिर किस नीतिगत करिश्मे की उम्मीद आपको है। क्या वह डोकलाम झड़प विस्मृत कर चुके हैं? क्या वह तवांग दंश भूल चुके हैं? क्या बोमडिला उन्हें याद नहीं? क्या आपकी इस यात्रा से लद्दाख से लेकर अरुणाचल प्रदेश तक की उसकी क्षुद्र मानसिकता बदल जाएगी? क्या भारत को उसके ही पड़ोसियों द्वारा घेरने की उसकी फ़ितरत बदल जाएगी?

यहां पर मैं यह समझ सकता हूँ कि हमारे कतिपय असरदार पर गद्दार नेताओं-अधिकारियों-उद्योगपतियों की तिकड़ी ने क्षणिक लाभवश अदूरदर्शिता दिखाते हुए अमेरिकी दबाव में भारतीय अर्थव्यवस्था को चीनी अर्थव्यवस्था पर निर्भर बना दिया लेकिन इसी दिक्कत को दूर करने के लिये ही तो यूपीए के प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह को 10 वर्षों के बाद सत्ता से बाहर करते हुए एनडीए के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को केंद्रीय सत्ता सौंपी गई। आप पिछले 11 वर्षों से सत्ता में हैं लेकिन यह समझने में असमर्थ प्रतीत हो रहे हैं कि रूसी दबाव में चीनी मित्रता का प्रयास अपने ही पैर में कुल्हाड़ी मारने जैसा मूर्खता भरा कदम साबित होगा। यह जान लीजिए कि इतिहास खुद को दोहराता है और आप इससे बच नहीं सकते।

मेरी स्पष्ट राय है कि अमेरिका से तल्खी के बीच चीन-ईरान से बढ़ रही नज़दीकी कदापि भारत के पक्ष में नहीं होगी।

खबर है कि पीएम नरेन्द्र मोदी एससीओ लीडर्स समिट में चीन के राष्ट्रपति शी चिनफिंग से मुलाकात कर सकते हैं।

वहीं इस दौरान वो रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन से भी द्विपक्षीय मुलाकात कर सकते है। वहीं, चीन यात्रा से एक दिन पहले पीएम का जापान जाने का भी कार्यक्रम है। भारतीय विदेश मंत्रालय ने इन दोनों ही यात्राओं को लेकर फिलहाल कोई औपचारिक बयान नहीं दिया है लेकिन बीते कुछ वक्त से भारत और चीन के संबंध सामान्य होने की दिशा में है।

बीते महीने विदेश मंत्री एस जयशंकर चीन की यात्रा पर थे। उन्होंने राष्ट्रपति शी चिनफिंग के साथ मुलाकात में इस बात का जिक्र किया था कि किस तरह से पीएम मोदी और चिनफिंग के निर्देशन से द्विपक्षीय संबंधों को सकारात्मक दिशा मिली है। उसी चीन यात्रा के लिए ग्राउंड वर्क तैयार रहा करने के लिहाज से अहम थी। इससे पहले जून महीने में ही राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजीत डोभाल और रक्षा मंत्री राजनाथ भी चीन का दौरा किया था।

सवाल है कि इतने तल्खी भरे रिश्ते के बावजूद भी दोनों देश कैसे करीब आए तो जवाब होगा कि पिछले वर्ष रूस में मोदी-जिनपिंग की हुई मुलाकात के बाद द्विपक्षीय रिश्तों की बर्फ़ ही नहीं पिघली बल्कि पहलगाम आतंकी हमला और ऑपरेशन सिंदूर जैसा तात्कालिक जख्म भी मिला जिससे अमेरिका-चीन दोनों बेनकाब हुए। इससे पहले बंगलादेश से भारत समर्थक शेख हसीना की सरकार का तख्ता पलट किया गया। भारत ने यहां भी आत्मघाती चुप्पी साधी जिससे अमेरिका-चीन के हौसले बढ़े।

यह ठीक है कि गत 23 जुलाई को पांच साल के अंतराल के बाद भारत ने चीन के लिए टूरिस्ट वीजा की बहाली की। वहीं, इस साल की शुरुआत में कैलाश मानसरोवर पर सहमति बनने के बाद 26 अप्रैल को इसके शेड्यूल की घोषणा हुई। वहीं, अब सीधी फ्लाइट्स की बहाली को लेकर भी सकारात्मक चर्चा चल रही है।

इन परिस्थितियों में हमारी स्पष्ट सोच है कि अमेरिका, रूस, चीन को बातचीत के टेबल पर स्पष्ट कर दिया जाए कि आसेतु हिमालय के भारत के पड़ोसी देशों, अरब देशों, आशियान देशों में कोई भी भारत विरोधी कदम बर्दाश्त नहीं किया जाएगा क्योंकि भारत गुटनिरपेक्ष देश ही नहीं बल्कि ग्लोबल साउथ का अगुवा राष्ट्र भी है। यदि चीन सहमत हैं तो प्रेम के पींगे बढ़ाइए अन्यथा फुलस्टॉप लगा दीजिए। ऐसा करना ही हमारे लिए आर्थिक और सैन्य दृष्टि से श्रेयस्कर होगा। इससे भारत-चीन की ब्रेक के बाद होने वाली लड़ाई भी थम जाएगी।

वरिष्ठ पत्रकार व राजनीतिक विश्लेषक

जब राखी के एक धागे से एकजुट हुआ था बंगाल

रवींद्रनाथ टैगोर ने रखी थी हिंदू-मुस्लिम एकता की नींव

'रक्षा-बंधन' भाई और बहन के भावनात्मक प्रेम को उत्सव का रूप देने वाला एक विशेष अवसर होता है। इस अवसर पर बहनें अपने भाईयों की कलाइओं पर एक पवित्र धागा 'राखी' बांधती हैं। यह प्रदर्शित करता है कि बलवान को सभी बुराइयों से निर्बलों की रक्षा करनी चाहिए। यह मुख्य रूप से भारत, मारीशस, नेपाल और पाकिस्तान के कुछ भागों में हिंदू, जैन एवं अधिकांश सिक्खों द्वारा मनाया जाता है।

गुरूदेव रवींद्रनाथ टैगोर की दृष्टि में रक्षाबंधन का मनाया जाना पूर्णतः भिन्न था। उनके अनुसार राखी केवल बच्चों का त्योहार नहीं था बल्कि यह मानव जाति और मानवता का एक त्योहार था। उनका विश्वास था कि सामाजिक जीवन को सौहार्दपूर्ण बनाने के लिए एक-दूसरे की सहायता एवं सुरक्षा करना समाज के सभी सदस्यों की जिम्मेदारी है। उनके लिए रक्षा-बंधन सहानुभूति का त्योहार था।

1905 ई0 में जब अंग्रेजों ने धर्म के आधार पर बंगाल के विभाजन का निश्चय किया, तो रवींद्रनाथ टैगोर ने बंगाल के हिन्दु और मुसलमानों के बीच ब्रिटिश सम्राज के विरूद्ध उनके संघर्ष में प्रेम और एकता के बंधन को मजबूत करने के लिए रक्षाबंधांतो उत्सव के लिए एक समारोह आयोजित किया। उन्होंने 'रक्षाबंधांतो' को विभिन्न धर्मों के लोगों के बीच भ्रातृत्व और राष्ट्रीयता की अनुभूति के प्रसार के लिए एक प्लेटफॉर्म के रूप में प्रयोग किया। शांति निकेतन में उन्होंने शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व की भावना और विश्वास को बढ़ाने के लिए राखी महोत्सव जैसी मंडलियों की शुरूआत की।

रक्षाबंधन सावन के पूर्णिमा के दिन मनाया जाता है। इस दिन बहनें अपने भाईयों की कलाईयों पर पवित्र राखी का धागा बांधती हैं और उनके दीर्घायु होने की प्रार्थना करती है। राखियां अनेक रंगों और डिजाईनों में उपलब्ध होती हैं। आदर्श रूप में राखियां रेशमी धागों के साथ सोने और चाँदी में सुन्दर रूप में बहुमूल्य पत्थरों से सज़ा कर बनाई जाती हैं। भाई बदले में अपनी बहनों को उपहार देते हैं और उनके देखभाल करने की प्रतिज्ञा लेते हैं।

उत्तर भारत में राखी पुर्णिमा को कजरी पूर्णिमा या कजरी नवमी भी कहा जाता है, जब गेहूं या जौ बोया जाता है और देवी भगवती की पूजा की जाती है। पश्चिमी राज्यों में यह त्यौहार नारियल पूर्णिमा कहलाता है। दक्षिणी भारत में श्रावण पूर्णिमा एक महत्वपूर्ण धार्मिक अवसर होता है।

ऐतिहासिक रूप से राखी का यह बंधन विभिन्न साम्राज्यों और शाही राज्यों के बीच एक मजबूत बंधन के रूप में सामने आया। भारतीय इतिहास साक्षी है कि राजपूत और मराठा रानियों ने मुगल राजाओं को भी राखियां भेजीं, उनके बीच मतभेदों के बावजूद उन्हें आपात स्थिति में सहयोग एवं संरक्षण प्रदान किया और उनके भाई होने के दावे को सम्मानित किया।

इसलिए अगर हमलोग आज के संसार में, जो संकट एवं संघर्ष से भरा हुआ है, इस उत्सव की वास्तविक महत्ता को देखें तो इस प्रकार के धार्मिक कृत्य शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व की कुंजी है। रक्षा-बंधन का शुभ दिन सामाजिक परिवर्तन के एक अवसर के रूप में मनाया जा सकता है। यह बंधन लोगों को प्रेम और बंधुत्व के एक स्थाई बंधन में बाँध सकता है। रवींद्रनाथ टैगोर ने मित्रों के बीच रक्षा-बंधन को लोकप्रिय बनाने के लिए सफेद धागों का प्रयोग किया। रक्षा-बंधन पर उनकी कविता-'बंगलार माटी, बंगलार जल(ईश्वर, बंगाल की भूमि और जल को अपनी आशीर्वाद प्रदान करे) मातृभूमि और लोगों के प्रति उनके प्रेम को दर्शाता है।

कुमार कृष्णन

बाढ़, मोक्ष और मंत्रीजी की 'पैरधोई' राजनीति

जब देश में बाढ़ आती है, तो पानी सिर्फ खेतों और घरों को नहीं डुबोता — वह सत्ता की संवेदनशीलता को भी भिगोकर बेनकाब कर देता है। मगर हमारे नेता इस तबाही को आस्था की मिठास में लपेटकर ऐसा परोसते हैं कि डूबता इंसान भी ताली बजाकर कहे - वाह, सरकार। कानपुर देहात में बाढ़ से तबाही मची हुई है, गांव-के-गांव डूबे पड़े हैं, लोग छतों पर भूख से तड़प रहे हैं, मवेशी बह गए, स्कूल-हॉस्पिटल कीचड़ में तब्दील हो गए और इन हालात में मंत्रीजी का बयान आता है: गंगा मैया तो गंगा पुत्र का पैर धोने आती हैं और आदमी सीधा स्वर्ग जाता है।

वाह रे लोकतंत्र, क्या शानदार 'पैरधोई नीति' गढ़ी है। माने अब बाढ़ कोई प्राकृतिक आपदा नहीं रही, वो मोक्ष-मार्ग बन गई है। अब जनता के घर डूबें, बच्चे बिलखें, बूढ़े तड़पें — कोई फर्क नहीं पड़ता, क्योंकि मंत्रीजी की दृष्टि में यह तो एक पवित्र स्नान है, जिसमें डूबने वाला सीधे स्वर्ग पहुंचता है। कितनी विचित्र विडंबना है – जिनकी जिम्मेदारी थी बाढ़ से बचाने की व्यवस्था करना, वो अब डूबने की महिमा गा रहे हैं। यानी सिस्टम फेल हो गया, और उसकी लीपा-पोती धर्म और दर्शन के घोल से की जा रही है।

दरअसल, यह बयान उस राजनीतिक प्रवृत्ति का उदाहरण है, जहां नेता जनता का सेवक नहीं, बल्कि दैवीय दूत बन बैठा है। जो बाढ़ को वरदान बताए, सूखे को तपस्या, और महामारी को पुण्य। इस बयान में सिर्फ संवेदनहीनता नहीं है, बल्कि एक गहरा राजनीतिक खेल भी छिपा है। जब नेता जवाबदेही से भागना चाहता है, तो वह जनता को श्रद्धा में उलझा देता है। उसे भूख नहीं, मोक्ष का सपना दिखाया जाता है। राहत शिविर नहीं, स्वर्ग का टिकट बांटा जाता है।

अब सोचिए, अगर बाढ़ में मरने वाला सीधा स्वर्ग जाता है, तो क्या मंत्रीजी अगली बार खुद अपने बंगले के बाहर खड़े होंगे, जब गंगा जी पैर धोने आएंगी? या फिर उनके लिए बाढ़ सिर्फ गरीबों के घरों की शोभा है? अगर सच में यह पैर धोने की परंपरा है, तो कृपया इसे राजधानी तक भी लाया जाए। वीआई पी कॉलोनियों में भी यह गंगाजल बहाया जाए ताकि वहां भी कुछ लोगों को स्वर्ग की अनुभूति हो। लेकिन अफसोस, वहां बाढ़ नहीं आती, वहां हेलिकॉप्टर उतरते हैं और जनता की तकलीफ सिर्फ प्रेस कांफ्रेंस में इस्तेमाल होती है।

कभी-कभी लगता है कि इन नेताओं ने जनता को ईश्वर की प्रयोगशाला बना दिया है। जहां हर आपदा एक नई लीला है – बाढ़ मतलब स्नान, सूखा मतलब तपस्या, और महामारी मतलब यमराज की वीआईपी एंट्री। बाढ़ आई – गंगा मैया। सूखा पड़ा – सूर्य देव। भूकंप आया – धरती माता की करवट। महामारी फैली – काली मां का प्रकोप। बस सरकार की नाकामी का ठीकरा किसी देवी-देवता पर पटक दो, और खुद कैमरा देखकर मुस्कुरा दो।

अरे साहब! जनता का पेट 'भक्ति' से नहीं भरता। और वोट देने वाले लोग, देवता नहीं, इंसान होते हैं – जिन्हें खाना, छत, दवा, और इंसाफ चाहिए। लेकिन यहां तो हर आपदा एक त्योहार बना दी जाती है। लेकिन सवाल ये है – मरता कौन है? जनता, रोता कौन है? किसान, डूबता कौन है? बच्चा, और बयान कौन देता है? मंत्री जी। उन्हें क्या फर्क पड़ता है? बाढ़ उनके बंगले में नहीं आती, वो तो एसी में बैठकर मोक्ष एक्सप्रेस चला देते हैं।

हकीकत ये है कि प्राकृतिक आपदाएं हमारे देश में सरकारी लापरवाही का आईना बन चुकी हैं। हर साल बाढ़ आती है, हर साल वही तस्वीरें, वही हवाई सर्वेक्षण, वही बयान – और हर साल गरीब मरता है, नेता बयान देता है, और फिर सब भूल जाते हैं। अब वक्त आ गया है कि हम इन बयानों की 'आध्यात्मिक पैकिंग' खोलें और उसके अंदर की सड़ी हुई हकीकत देखें। बाढ़ कोई धार्मिक उत्सव नहीं है, वो प्रशासनिक विफलता की धूप में सूखती इंसानियत है। और जो नेता इस त्रासदी को 'गंगा स्नान' कहे, उससे सवाल जरूर पूछा जाना चाहिए – अगर मरना मोक्ष है, तो जीने का हक किसके पास है?

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

अधूरी मोहब्बत,यादों की ज़ंजीरें ।

डॉ. मुश्ताक अहमद शाह

मोहब्बत एक ऐसा जज़्बा है जो पूरा होने की शर्त पर नहीं, बल्कि सच्चे एहसास की गहराई पर ज़िंदा रहता है। कुछ मोहब्बतें मंज़िल तक नहीं पहुँच पातीं, फिर भी उनकी गूंज उम्र भर दिल और ज़हन में तैरती रहती है। वो वादे जो कभी पूरे न हो सके, वो ख्वाब जो आँखों में ही टूट गए, और वो लम्हे जो वक्त की रफ़्तार में पीछे छूट गए,दिल उन्हें भुलाने के बाद भी अपने अंदर सहेजे रखता है।

"वो मोहब्बतें जो मिल न सकीं, इश्क़ अधूरा ही रहा",इन अल्फ़ाज़ में वो दर्द दबा है जो वक्त बीत जाने के बाद भी कम होने का नाम नहीं लेता। शायद तक़दीर ने साथ न दिया, हालात ने राहें बदल दीं, मगर दिल वहीं ठहर गया, जहाँ कभी चाहत ने जन्म लिया था।

कसमें, वादे और ख्वाब , सब बेमानी लगने लगे जब मंज़िल न मिल सकी। वो हर लम्हा जो कभी दो दिलों के बीच पिरोया गया था, अब सिर्फ़ यादों की तस्वीर बनकर रह गया। फिर भी क्यों वो चेहरे, वो आवाज़ें, वो लम्हे ज़ेहन से मिटते नहीं? क्यों हर रात चाँद को देखकर दिल ये चाहता है कि वो उनका पैगाम पहुँचा दे— जैसे कोई चकोर चाँद के दीदार का प्यासा हो।जब मोहब्बत अधूरी रह जाए, तो वो एक रोग बन जाती है,न जीने देती है, न मरने।ज़िंदगी अपनी रफ़्तार से चलती रहती है, मगर दिल के किसी ख़ामोश कोने में वही नापाई मोहब्बत सांस लेती रहती है।शायद इसी लिए कहा जाता है,रकुछ यादें उम्र की क़ैद होती हैं, और कुछ चेहरे वक्त की धूल में भी नहीं मिटते।रचाहे वो मोहब्बत कभी मुकम्मल न हुई हो, लेकिन उसकी पवित्रता और बेनियाज़ी आज भी रूह को छू जाती है। यह इश्क़ की नाकामी नहीं, बल्कि उसकी शिद्दत की जीत है कि वो आज भी दिल में ज़िंदा है।

साल की सबसे बड़ी फिल्म होम्बले फिल्म्स की कंतारा चैप्टर 1 में कणकवती का किरदार निभाएंगी रुक्मिणी वसंत, फर्स्ट लुक हुआ जारी

परिवहन विशेष न्यूज

वरमहालक्ष्मी जैसे शुभ पर्व पर, होम् बले फिल्म्स ने अपनी सबसे ज्यादा इंतेज़ार की जाने वाली फिल्म कंतारा चैप्टर 1 से अभिनेत्री रुक्मिणी वसंत के किरदार 'कणकवती' का पहला लुक रिलीज कर दर्शकों को खास तोहफा दिया है। इस मौके ने फिल्म की दुनिया में एक नया रोमांच भर दिया है, खासकर उन दर्शकों के लिए जो इस सिनेमाई यूनिवर्स से गहराई से जुड़े हैं।

कंतारा चैप्टर 1 को लिखा और निर्देशित किया है ऋषभ शेट्टी ने, जो खुद भी फिल्म में मुख्य भूमिका निभा रहे हैं। यह फिल्म 2022 की ब्लॉकबस्टर कंतारा की प्रीक्वल है, जिसने जड़ें पकड़कर कहानी कहने के अंदाज़ को नए स्तर पर पहुंचाया और दुनियाभर के दर्शकों और समीक्षकों का दिल जीता। इससे पहले ऋषभ शेट्टी का पहला लुक उनके जन्मदिन पर सामने आया था, जिसने सोशल मीडिया पर खलबली मचा दी थी।

अब रुक्मिणी वसंत की कणकवती के रूप में पहली झलक ने फिल्म की प्रमोशन के सफर में एक अहम पड़ाव जोड़ दिया है। फिल्म भारतीय संस्कृति में गहराई से रची-बसी एक नई और भावनात्मक कहानी के साथ दर्शकों को एक अलग अनुभव देने का वादा करती है। बेहतरीन सिनेमैटोग्राफी

अरविंद एस. कश्यप और आत्मा को छू लेने वाला संगीत बी. अजनिश लोकनाथ की रचना है, जबकि निर्माण किया है विजय किरगंदूर ने, होम्बले फिल्म्स के बैनर तले।

कंतारा चैप्टर 1 2 अक्टूबर 2025 को दुनियाभर में रिलीज होगी, वो भी कन्नड़, तेलुगु, हिंदी, तमिल, मलयालम, बंगाली और अंग्रेज़ी भाषाओं में। जैसे आज देशभर में माता लक्ष्मी का आशीर्वाद मांगा जा रहा है, उसी भाव में होम्बले फिल्म्स ने कणकवती के इस यादगार किरदार की पहली झलक पेश की है, जो यकीनन दुनियाभर के दर्शकों के दिलों में अपनी गहरी छाप छोड़ेगी।

अमेज़न MGM स्टूडियोज़ की 'निशानची' का दमदार टीज़र हुआ रिलीज, दिल थाम कर मिलिए किरदारों से!

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। दिल थाम लीजिए, क्योंकि अमेजन MGM स्टूडियोज इंडिया पेश कर रहा है निशानची की एक खास झलक! इस अपकमिंग थिएट्रिकल फिल्म का ऑफिशियल टीज़र आ गया है और इसमें है भरपूर मसाला, इमोशंस, ड्रामा और ढेर सारा स्वैग। अनुराग कश्यप के डायरेक्शन में बनी ये फिल्म एक दमदार देसी एंटरटेनर लग रही है जिसमें है एक तगड़ा तड़का एक्शन, ह्यूमर और सब कुछ फिल्मी अंदाज़ का।

निशानची को अजय राय और रंजन सिंह ने जार पिक्चर्स के बैनर तले, फ्लिप फिल्म्स के साथ मिलकर प्रोड्यूस किया है। फिल्म की कहानी प्रसून मिश्रा, रंजन चंदेल और अनुराग कश्यप ने लिखी है। 19 सितंबर को थिएटर्स में रिलीज़ होने जा रही ये फिल्म दो भाइयों की उलझी हुई ज़िंदगी को दिखाएगी, जो बिल्कुल अलग रास्तों पर चलते हैं और कैसे उनके फैसले उनकी तकदीर तय करते हैं। देसी मिट्टी की खुशबू लिए ये कहानी आपको एक ऐसे दुनिया में ले जाएगी जो असली, जोशीली और पूरी तरह देसी रंग में रंगी हुई है।

टीज़र की शुरुआत होती है एक दमदार लाइन से रबिना बॉलीवुड, काउनों ज़िंदगी कैसे जिए?र और बस, वहीं से आप घुस जाते हैं एक ऐसी दुनिया में जो म्यूज़िक, डांस, तगड़ी एक्शन, बिना फिल्टर के ड्रामा और डबल धमाल से भरी है। यहां मिलते हैं बबलू (ऐश्वर्य ठाकरे) से एक रंग-बिरंगा लोकल हीरो, जो अपनी स्टाइल और एटीट्यूड में कमाल है। उसके साथ दिखती हैं रिंकू (वैदिका पिंटो), जो हर कदम पर बबलू की टक्कर देती है।

लेकिन तभी होता है असली ट्विस्ट यानी एंट्री होती है डबलू की। अम्मा (मोनिका पंवार) का आज्ञाकारी बेटा डबलू, उतना ही संस्कारी है जितना बबलू जुगाड़ है। और भाई, बिना मसाले के देसी फिल्म कैसी? फिर टीज़र में दिखते हैं कुछ मज़ेदार कैरेक्टर्सः कमाल अजीब (मोहम्मद ज़ीशान अय्यूब) जो कभी समझ नहीं आता, लेकिन नजरें नहीं हटतीं उनसे। और अंबिका चाचा (कुमुद मिश्रा), बाहर से शांत लेकिन अंदर से पूरे खेल वाले।

इसके साथ बजता है एक जबरदस्त बीट्स वाला गाना, जो और भी एनर्जी भर देता है माहौल में। फिर दिखती है सीटी-मार एंट्रीज़, बड़े-बड़े किरदार और भरपूर ड्रामा। अगर टीज़र पर भरोसा किया जाए, तो निशानची वाकई में देगा आपको देसी अंदाज़ में तगड़ा एंटरटेनमेंट, भरपूर धमाके, रॉ इमोशंस और अनुराग कश्यप का अलग ही टच।

तो तैयार हो जाए, क्योंकि निशानची 19 सितंबर को पूरे भारत के थिएटरों में लेकर आ रही है — गोलियां, गद्दारी और जबरदस्त भाईचारा।

वादा करना है..।

बहन और भाई का अटूट स्नेह
रिश्तों के धागों की सबसे मजबूत कड़ी
रक्षा करें हर समय बहनों की
वादा करना है भाई।
क्योंकि आजकल दूरियां बढ़ गई है
मजबूरियां भी ज्यादा हो गई है
रिश्तों की मिठास ना जाने कहां खो गई है
पर भाई आपका साथ हैं ना, वादा करना है।
अपनी बहन को कभी दु:ख ना हो
भाई हमेशा खुश हो
यहां राखी बंधन कभी टूटें ना
हम दोनों को वादा करना है।
यहां रक्षाबंधन की डोर कच्ची जरूर है
पर रिश्तों को कच्चा मत होने देना
भाई बहन का प्यार कम मत होने देना
हमेशा रक्षाबंधन का रिश्ता बना रहे, हमें दोनों को वादा करना है।।

हरिहर सिंह चौहान जबरी बाग़ नसिया इन्दौर मध्यप्रदेश

सप्लाई चेन क्षेत्र में भारत की ग्लोबल लीडर बनने की क्षमता

मुख्य संवाददाता

नई दिल्ली में आयोजित इंटरनेशनल प्रोक्योरमेंट एंड सप्लाई चेन कॉन्फ्रेंस (IPSC) 2025 में भारत के पूर्व क्रिकेट कप्तान और ब्लू ओशन कॉरपोरेशन के बोर्ड सदस्य सौरव गांगुली ने कहा, रभारत में सप्लाई चेन के क्षेत्र में ग्लोबल लीडर बनने की क्षमता है, और यह यात्रा हमारे युवाओं को सशक्त बनाने से शुरू होती हैर।

कॉन्फ्रेंस के दौरान पूर्व भारतीय क्रिकेटर ने सप्लाई चैन में युवाओं की अहम भूमिका के साथ साथ शैक्षणिक जगत और औद्योगिक सहयोग पर भी बल देने की बात कही.

इस दौरान ग्रुप के सीईओ सत्या मेनन ने सहमति जताते हुए वैश्विक मानकों पर आधारित शिक्षा और ब्ल्यू ओशन कारपोरेशन की पहल के बारे में बताते हुए कहा कि हम भारत के प्रमुख एकेडमिक और स्किलिंग इंस्टीट्यूशन के साथ महत्वपूर्ण साझेदारी कर रहे हैं.

आगे आने वाले समय में ब्लू ओशन महानगर समेत टियर 2 और टियर 3 शहरों में भी अपना विस्तार करेगी.

आपको बता दें कि ब्लू ओशन कारपोरेशन लॉजिस्टिक चैन की सप्लाई करने वाली कंपनी है जिसका मुख्यालय ब्रिटेन में है वहीं कई देशों में इसके ब्रांचेस चल रहे हैं।

अमृतसर में खालिस्तान समर्थक नारे लिखने के मामले को 24 घंटे में सुलझाया; नाबालिग समेत दो व्यक्ति गिरफ्तार

अमृतसर (साहिल बेरी)

मुख्यमंत्री भगवंत सिंह मान के दिशा-निर्देशों के तहत पंजाब को एक सुरक्षित राज्य बनाने के अभियान में एक और बड़ी सफलता हासिल करते हुए अमृतसर कमिश्नरेट पुलिस ने खालिस्तान समर्थक नारे लिखने के मामले को 24 घंटे के भीतर सुलझाते हुए एक नाबालिग समेत दो आरोपियों को गिरफ्तार किया है। इस संबंध में जानकारी पुलिस महानिदेशक (डीजीपी) पंजाब गौरव यादव ने दी।

प्राप्त जानकारी के अनुसार, बुधवार और गुरुवार की दरमियानी रात शहर में तीन स्थानों पर खालिस्तान समर्थक नारे लिखे गए थे। उल्लेखनीय है कि अमेरिका स्थित प्रतिबंधित संगठन 'सिख्स फॉर जस्टिस' (एस एफ जे) के प्रमुख गुरपतवंत सिंह पन्नू ने इस घटना की जिम्मेदारी लेते हुए सोशल मीडिया पर एक वीडियो भी जारी किया था।

गिरफ्तार आरोपियों में बटाला के दरगाबाद गांव निवासी जशनप्रीत सिंह (22 वर्ष) और एक 17 वर्षीय नाबालिग शामिल हैं।

डीजीपी गौरव यादव ने बताया कि प्रारंभिक जांच में पता चला है कि दोनों आरोपी विदेश में रह रहे शमशेर सिंह उर्फ शेरा मान के संपर्क में थे, जिन्होंने उन्हें गुरपतवंत पन्नू के निर्देशों पर यह कार्रवाई करने को कहा था। उन्होंने बताया कि आरोपियों को स्नैपचैट के जरिए भेजे गए डिज़ाइन देखकर खालिस्तान समर्थक नारे लिखने को कहा गया, लेकिन वादे के अनुसार उन्हें कोई भुगतान नहीं मिला। डीजीपी ने कहा कि इस मामले की गहराई से जांच जारी है।

विस्तृत जानकारी साझा करते हुए अमृतसर के पुलिस कमिश्नर (सीपी) गुरप्रीत सिंह भुल्लर ने बताया कि डीसीपी रविंदरपाल सिंह के नेतृत्व में गठित टीम – जिसमें एडीसीपी जगबिंदर सिंह, एडीसीपी हरपाल सिंह, एसीपी हरमिंदर सिंह, एसीपी शिवदर्शन सिंह और इंस्पेक्टर अमोलक सिंह (सीआईए इंचार्ज), इंस्पेक्टर मोहित कुमार (एसएचओ छावनी), इंस्पेक्टर गुरप्रीत सिंह (एसएचओ सिविल लाइंस), और इंस्पेक्टर अमनदीप कौर (एसएचओ ए डिवीजन) शामिल थे – ने आरोपियों की पहचान कर उन्हें पकड़ने की कार्रवाई तुरंत शुरू कर दी थी।

पुलिस कमिश्नर ने बताया कि आरोपियों को नारे लिखने के बदले पैसे देने का लालच दिया गया था, लेकिन उन्हें कोई भुगतान नहीं किया गया। जांच में यह भी सामने आया कि जशनप्रीत ने नाबालिग के साथ मिलकर बटाला से स्प्रे पेंट खरीदा और फिर इस घटना को अंजाम दिया। इसके बाद उन्होंने इस कार्रवाई की तस्वीरें सबूत के तौर पर शेरा मान के साथ साझा कीं।

इस संबंध में भारतीय दंड संहिता (बी एन एस) और सरकारी संपत्ति को नुकसान से बचाने संबंधी अधिनियम की धाराओं के तहत पुलिस थाना छावनी, डिवीजन-ए और सिविल लाइंस में तीन अलग-अलग एफआईआर दर्ज की गई हैं।

समाज सेवा से होती है आत्मिक संतोष की अनुभूति : डॉ. सुरुचि सक्सेना

इनर व्हील क्लब ऑफ़ वृंदावन दिव्य शक्ति का हुआ चौथा अधिष्ठापन

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

वृन्दावन। तराश मन्दिर क्षेत्र स्थित शारदा रेस्टोरेंट में समाज सेवा की अंतरराष्ट्रीय इनर व्हील संस्था वृंदावन इकाई की इनर व्हील ऑफ़ वृंदावन दिव्य शक्ति का चौथा अधिष्ठापन बड़े ही हर्षोल्लास एवं धूमधाम के साथ संपन्न हुआ। जिसमें जिला - 311 की अध्यक्ष डॉ. सुरुचि सक्सेना ने मुख्य अतिथि के रूप में इस वर्ष की निर्वाचित अध्यक्ष निशा शर्मा एवं सचिव राधिका गोस्वामी को क्लब की शपथ दिलाई।

मुख्य अतिथि डॉ. सुरुचि सक्सेना ने कहा कि समाज सेवा करने से आत्मिक शांति की अनुभूति होती है। समाज सेवा करने के लिए

ईश्वर कुछ ही लोगों को चुनता है।महिलाओं में लोगों के प्रति सहयोग, दया, करुणा का भाव होता है। इसी कारण से इनर व्हील क्लब आज विश्व में सेवा का पर्याय बना हुआ है।

पी.डी.सी. शिक्षाविद लता गोयल ने कहा कि इनर व्हील क्लब ने संपूर्ण विश्व में सेवा कार्यों की एक पहचान बनाकर के महिलाओं की शक्ति को उजागर किया है।

विशिष्ट अतिथि जिला की ISO मंजू पारीक ने कहा की वृंदावन क्लब की महिलाओं ने पूरे जिला में शिक्षा, स्वास्थ्य स्वच्छता पर्यावरण एवं जल संरक्षण में अभूतपूर्व कार्य किए हैं।हमें आशा है कि इस वर्ष भी यह नई टीम सेवा कार्यों के नए कीर्तिमान स्थापित करेगी।

इस अवसर पर अध्यक्ष निशा शर्मा ने 2025- 26 में किए जाने वाले कार्यों की विस्तृत जानकारी दी।

पूर्व अध्यक्ष संध्या शर्मा ने अपने कार्यकाल की रिपोर्ट प्रस्तुत की और अच्छे कार्य करने वाले साथियों को पुरस्कार प्रदान किया।

इस अवसर पर क्लब से पांच नए मेंबर और जोड़े गए।जिनमें राधिका गोस्वामी, रिचा वर्मा, नवीन तोडकर, गीता गोस्वामी और रेनू आदि ने अतिथियों का स्वागत किया एवं स्मृति चिन्ह प्रदान करे

कार्यक्रम में प्रमुख रूप से नीरजा शर्मा, निर्जला, निर्मल, श्रीं शांडिल्य, डॉ. सुनीता पचार, विनीता द्विवेदी, अंजू अग्रवाल, प्रख्यात साहित्यकार डॉ. गोपाल चतुर्वेदी, देवेन्द्र शर्मा, डॉ. राधाकांत शर्मा आदि की उपस्थिति विशेष रही। अधिष्ठापन समारोह की अध्यक्षता निशा शर्मा ने एवं संचालन सुनीता पचार ने किया। धन्यवाद ज्ञापन राधिका गोस्वामी ने किया।

श्रीकृष्ण बलराम मन्दिर में धूमधाम से संपन्न हुआ श्रीपाद रूप गोस्वामी का तिरोभाव महोत्सव

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

वृन्दावन। सेवाकुंज गली स्थित श्रीकृष्ण बलराम मन्दिर में श्रावण मास के अवसर पर चल रहे झूलन महोत्सव के अंतर्गत गौडीय सम्प्रदाय की बहुमूल्य विभूति रूप गोस्वामी महाराज का तिरोभाव महोत्सव अत्यंत श्रद्धा एवं धूमधाम के साथ सम्पन्न हुआ।सर्वप्रथम श्रीपाद रूप गोस्वामी महाराज के चित्रपट का वैदिक मंत्रोच्चार के मध्य पूजन-अर्चन किया गया।तत्पश्चात संत-विद्वत सम्मेलन का आयोजन हुआ।जिसकी अध्यक्षता करते हुए चतुःसम्प्रदाय के श्रीमहंत फूलडोल बिहारीदास महाराज ने कहा कि श्रीपाद रूप गोस्वामी महाराज गौडीय सम्प्रदाय के संवर्धक व उन्नायक थे।उन्होंने ब्रजभूमि में साधमरत रहकर 17 ग्रंथों की रचना की।जिनमें उज्ज्वल नीलमणि,भक्ति रसामृत सिंधु,विदग्ध माधव नाटक, ललित माधव नाटक, हंसदूत व उद्धव संदेश आदि प्रमुख हैं।

श्रीकृष्ण बलराम मन्दिर के सेवायत भक्ति वेदांत स्वामी मधुसूदन महाराज ने कहा कि श्रीपाद रूप गोस्वामी महाराज गौडीय सम्प्रदाय के षट गोस्वामियों में सर्वप्रमुख थे।कलयुग पावनावतार चैतन्य महाप्रभु से प्रेरित होकर उन्होंने अपना मंत्री पद का त्याग कर अपना समूचा जीवन ब्रज में रह कर श्रीकृष्ण भक्ति में समर्पित कर दिया।

वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. गोपाल चतुर्वेदी व पंडित बिहारी लाल वशिष्ठ ने कहा कि श्रीपाद रूप गोस्वामी ने असंख्य व्यक्तियों का कल्याण कर उन्हें ब्रज की विशुद्ध प्रेमा भक्ति व रागानुगा भक्ति की ओर प्रेरित कर सन्मार्ग पर चलना सिखाया।

भक्ति वेदांत दामोदर महाराज व भक्ति वेदांत गोपानंद वन महाराज ने कहा कि श्रील रूप गोस्वामी महाराज ने श्रीधाम वृन्दावन के भक्तिमय स्वरूप को उजागर किया।साथ ही भक्तों के कल्याणार्थ ठा. श्रीगोविन्द देव भगवान का दिव्य विग्रह प्रगट किया।जिसके लिए समस्त सनातन धर्मावलंबी उनके सदैव आभारी रहेंगे।

तिरोभाव महोत्सव में भक्ति वेदांत साधु महाराज, ध्रुव कुमार गोस्वामी, सन्त रामदास महाराज, युवा साहित्यकार डॉ. राधाकांत शर्मा, आचार्य ईश्वर चंद्र रावत, प्रेम प्रदीप दास, राधा नाथ दास, भोलेश्वर उपमन्यु आदि के अलावा विभिन्न क्षेत्रों के तमाम गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।संचालन व धन्यवाद ज्ञापन भक्ति वेदांत मधुसूदन महाराज ने किया।इससे पूर्व संगीताचार्य दामोदर महाराज ने झूलन के पदों का संगीत की मृदुल स्वर लहरियों के मध्य गायन किया।

जानकी वल्लभ मंदिर में धूमधाम से सम्पन्न हुआ बैकुंठवासी स्वामी भगवानदासाचार्य महाराज का 26 वां त्रिदिवसीय त्रिपाद्विभूति प्राप्ति महोत्सव

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

वृन्दावन। केशीघाट स्थित ठा. श्रीजानकी वल्लभ मंदिर में श्रीमद् वेदान्त देशिक आश्रम ट्रस्ट के द्वारा चल रहे बैकुंठवासी श्रीवेदान्तदेशिक पीठाधीश्वर अनंतश्री विभूषित जगद्गुरु स्वामी रामानुजाचार्य परमहंस स्वामी भगवानदासाचार्य महाराज के 26वें त्रिदिवसीय त्रिपाद्विभूति प्राप्ति महोत्सव के अंतर्गत संतों व विद्वानों की सन्निधि में स्वामी भगवानदासाचार्य महाराज का पावन स्मरण किया गया।साथ ही वैदिक मंत्रोच्चार के मध्य उनकी प्रतिमा का पूजन-अर्चन किया गया।

इस अवसर पर आयोजित संत-विद्वत संगोष्ठी में अपने विचार व्यक्त करते हुए सुग्रीव किला अयोध्या/वृंदावन पीठाधीश्वर श्रीमज्जगद्गुरु स्वामी विश्वेशप्रपनाचार्य महाराज एवं महामंडलेश्वर स्वामी नवल गिरी महाराज ने कहा कि बैकुंठवासी स्वामी भगवानदासाचार्य महाराज बहुत ही दयालु एवं सात्विक प्रवृत्ति के संत थे।उनके द्वारा निरंतर समाज के हित में कई कार्य किए गए।वे श्रीधाम वृंदावन की दिव्य विभूति थे।

श्रीजानकी वल्लभ मंदिर के अध्यक्ष जगद्गुरु स्वामी अनिरुद्धाचार्य महाराज व स्वामी रघुनाथाचार्य महाराज ने कहा कि हमारे सद्गुरुदेव स्वामी भगवानदासाचार्य महाराज सहजता, सरलता, उदारता व परोपकारिता आदि अनेकों सद्गुणों की खान थे।हम लोग यदि उनके किसी एक गुण को भी अपने जीवन में धारण कर लें तो हमारा कल्याण हो सकता है।

वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. गोपाल चतुर्वेदी एवं शुकाचार्य पीठाधीश्वर डॉ. रमेश चंद्राचार्य ₹विधिशास्त्री₹ महाराज ने कहा कि बैकुंठवासी अनंतश्री विभूषित जगद्गुरु रामानुजाचार्य स्वामी भगवानदासाचार्य महाराज श्रीरामानुज सम्प्रदाय की बहुमूल्य विभूति थे।उनके द्वारा स्थापित सेवा प्रकल्पों का निर्वाह श्रीजानकीवल्लभ मंदिर में स्वामी अनिरुद्धाचार्य महाराज के निर्देशन में आज भी पूर्ण समर्पण के साथ संचालित हो रहा है।

संस्कृत के प्रकांड विद्वान पंडित राजाराम मिश्र एवं पूर्व प्राचार्य डॉ. रामसुदर्शन मिश्र ने कहा कि हम सभी को सदैव ही सद्गुरु के द्वारा बताए गए सन्मार्ग पर चलना चाहिए।तभी हमारा कल्याण हो सकता है।

सन्त सम्मेलन में श्रीउमाशक्ति पीठाधीश्वर स्वामी रामदेवानंद सरस्वती महाराज, विश्वविख्यात भागवताचार्य डॉ. श्याम सुन्दर पाराशर, आचार्य/भागवत पीठाधीश्वर आचार्य मारुतिनन्दन वागीश महाराज, स्वामी देवनारायणाचार्य महाराज, स्वामी मुकुंदाचार्य महाराज, पंडित बिहारीलाल वशिष्ठ, संत सेवानंद ब्रह्मचारी, आचार्य ऋषि तिवारी, आचार्य भूतिकृष्ण महाराज, स्वामी गोविन्द ब्रह्मचारी महाराज, अनुज कृष्ण शास्त्री, मुकेश शास्त्री, सर्वेश द्विवेदी, नीरज आचार्य, अनुज गोपाल, रामधनी चतुर्वेदी आदि ने भी अपने विचार व्यक्त किए।संचालन आचार्य यशोदानंदन शास्त्री (लालजी महाराज) ने किया।

इस अवसर पर बालकृष्ण (रायपुर), अनूप अग्रवाल (रांची), रमेश अग्रवाल (दिल्ली), हरिप्रसाद (ग्वालियर), रामनारायण (कोटा), गुलशन (जम्मू), सुभाष गुप्ता आदि के अलावा विभिन्न क्षेत्रों के तमाम गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।कार्यक्रम में पधारे सभी आगंतुक अतिथियों का स्वागताध्यक्ष राम अवतार नरसारिया ने ठाकुरजी का पटुका-प्रसादी-माला एवं अंगवस्त्र भेंट कर स्वागत किया।

महोत्सव का समापन सन्त, ब्रजवासी, वैष्णव सेवा एवं वृहद भंडारा (तदीयाराधन) के साथ हुआ।जिसमें असंख्य व्यक्तियों ने भोजन प्रसाद ग्रहण किया।

लक्ष्मी व्रत करने से दूर होती है दरिद्रता : - श्री गौरी शंकर प्रिया

भारत विख्यात श्री श्री गौरी शंकर प्रिया जी ने भारत ही नहीं बल्कि विदेशों में भी सनातन धर्म का प्रचार प्रसार से डंका बजाया है इसके लिए डॉ ह्रदयेश कुमार के सौजन्य से सिंगापुर से अवॉर्ड दिया गया था लेकिन अब श्री गौरी शंकर प्रिया जी ने सनातन धर्म की सभी व्रत और अन्य जानकारी को सभी लोगों को विस्तार से बता कर अभियान चला कर अपना पूर्ण रूप से मानव कल्याण के लिए लिए अपना जीवन समर्पण कर दिया है खैरा बिहार जमुई के शिव मंदिर परिसर में लक्ष्मी व्रत करने से दूर होती है दरिद्रता के विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया श्री गौरी शंकर प्रिया ने

बताया कि कहा जाता है कि ये दिन दिवाली की तरह ही मनाया जाता है, इस दिन मां लक्ष्मी की भव्य रूप से पूजा की जाती है. मान्यता है कि सावन माह के अंतिम शुक्रवार को किए जाने वाला ये व्रत कलियुग में सौभाग्य प्राप्ति की चाबी है. इसके फलस्वरूप निर्धन भी धनवान हो जाता है. वरलक्ष्मी व्रत के दिन कथा पढ़ने मात्र से सौभाग्य की प्राप्ति होती है.

वरलक्ष्मी व्रत की कथा

वरलक्ष्मी व्रत कथा के अनुसार बहुत पौराणिक समय मैं मगध राज्य में कुण्डी नामक एक नगर था. यह नगर मगध राज्य के मध्य स्थापित था. इस नगर में एक ब्राह्मणी नारी चारुमति अपने परिवार के साथ रहती थी. जिस पर माता लक्ष्मी का बहुत अटूट विश्वास था. वह हर दिन माता लक्ष्मी की पूजा करती थी.

एक रात्रि में माँ लक्ष्मी ने उस महिला से प्रसन्न होकर उसे स्वप्न में दर्शन दिए और उसे वर लक्ष्मी नामक व्रत करने का सुझाव दिया और कहा इस व्रत के प्रभाव से तुम्हे मनोवांछित फल प्राप्त होगा.

अगले सुबह चारुमति ने मां लक्ष्मी के बताये गए वरलक्ष्मी व्रत को समाज की अन्य नारियों के साथ विधिवत पूजन किया. पूजन के संपन्न होने पर सभी नारियां कलश की परिक्रमा करने लगीं, परिक्रमा करते समय समस्त नारियों के शरीर विभिन्न स्वर्ण आभूषणों से सज गए. उनके घर भी सोने से सुसज्जित हो गए. घोड़े, हाथी, गाय आदि पशु भी आ गए. कालांतर में यह कथा भगवान शिव जी ने माता पार्वती को सुनाई थी. माता पार्वती ने भी इस व्रत को किया था।

भारतीय सांस्कृतिक विरासत का वैश्विक उत्सव और भाई-बहन के अटूट बंधन का प्रतीक

एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी गोंदिया

भारत में वर्ष 1959 में रिलीज हुई हिंदी फीचर फिल्म छोटी बहन का गीत, भैया मेरे राखी के बंधन को निभाना और 1971 में रिलीज हुई फिल्म बेईमानका गीत ये राखी बंधन है ऐसा, जैसे गीतों को सुने बिना रक्षाबंधन का त्योहार अधूरा सा लगता है। यही कारण है कि हमें पिछले एक सप्ताह से राखी व अन्य बाजारों में रौनक के साथ उपरोक्त दोनों गीतों सहित अनेक रक्षाबंधन के गीत सुनाई दे रहे हैं, जो दशकों पूर्व के हैं परंतु आज भी ध्यान आकर्षित करते हैं, क्योंकि यह रक्षाबंधन त्योहार ही ऐसा है कि भाई बहन की डोर से रिश्तो में अटल मजबूती आ जाती है। भारत विविधताओं का देश है, जहां प्रत्येक क्षेत्र, धर्म और परंपरा में त्योहारों का विशेष स्थान है। इन त्योहारों का उद्देश्य केवल धार्मिक अनुष्ठान भर नहीं होता, बल्कि यह समाज में आपसी प्रेम, एकता, सामूहिक चेतना और मानवीय मूल्यों को बढ़ावा देने का कार्य भी करते हैं। इन्हीं पावन पर्वों में से एक अत्यंत महत्वपूर्ण और लोकप्रिय त्योहार है ₹रक्षाबंधन₹, जिसे आम भाषा में ₹राखी₹ भी कहा जाता है।रक्षाबंधन, भाई-बहन के प्रेम और विश्वास का पवित्र पर्व, इस साल 9 अगस्त 2025 को असाधारण रूप से खास है।

साथियों बात अगर हम इस वर्ष राखी उत्सव की करें तो श्रावण शुक्ल पूर्णिमा को मनाया जाने वाला यह त्योहार इस बार 95 साल बाद एक दुर्लभ ज्योतिषीय संयोग के साथ आ रहा है, जो इसे ऐतिहासिक और आध्यात्मिक रूप से विशेष बनाता है। सौभाग्य योग, सर्वार्थ सिद्धि योग, और श्रवण नक्षत्र का संयोग इस दिन को समृद्धि, सुख, और आध्यात्मिक उन्नति का प्रतीक बनाता है। इसके अलावा, इस बार भद्रा का साया भी नहीं रहेगा, जिससे राखी बांधने का समय और भी शुभ हो गया है।मैं एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र मेरा व्यक्तिगत मानना है कि आज की नई युवा पीढ़ी या नई यंग जनरेशन को हमारे हर भारतीय त्योहारों का महत्व समझाने की अति आवश्यकता है, क्योंकि मैं देख रहा हूं कि युवाओं के हृदय में आज त्योहारों के प्रति वह भाव नहीं दिख रहें हैं जो दशकों पूर्व के युवाओं में देखे थे जो आज बूढ़े हो चुके हैं। यानें वर्तमान डिजिटल युग में हमारे युवा, त्योहारों की मर्यादा व गरिमा को कुछ हद तक भूलते जा रहे हैं, क्योंकि आज जमाना आ गया है सब कुछ ऑनलाइन होता जा रहा है, जबकि मेरा मानना है कि सभी त्योहारों को हमारी भारतीय संस्कृति मुहूर्त बेला से करना चाहिए। वैसे भी इस बार रक्षाबंधन राखी 09 अगस्त 2025 को ही आ रहा है। चूंकि राखी एक ऐसा त्यौहार है जो, दुनियां में जब तक चंदा बादल धरती आकाश रहेगा, भाई बहन का प्यार मौजूद रहेगा व बहन का हमेशा सम्मान व रक्षा का प्रण लेना होगा, चूँकि राखी के खुशी वाले दिन भाई के भर-भर आए नैना, कदर बहन की उनसे पूछो जिनकी नहीं है कोई बहना, इसलिए आज हम मीडिया में उपलब्ध जानकारी व स्वयं के विचारों के सहयोग से इस आर्टिकल के माध्यम से चर्चा करेंगे, अमर प्रेम है भाई बहन का..यह राखी बंधन है ऐसा....युवाओं को त्योहारों का महत्व समझने की जरूरत है।

साथियों बात अगर हम रक्षाबंधन राखी महोत्सव 09 अगस्त 2025 की करें तो रक्षाबंधन, भारतीय सांस्कृतिक और धार्मिक परंपरा का महत्वपूर्ण त्योहार है, जिसे भाई बहन के रिश्ते को मजबूत करने के लिए मनाया जाता है। यह त्योहार हर साल श्रावण मास की पूर्णिमा को बड़े धूमधाम से मनाया जाता है। इस दिन बहनें अपने भाइयों की कलाई पर राखी बांधती हैं और उनके लंबी उम्र और खुशहाली की कामना करती हैं, जबकि भाई अपनी बहनों को उपहार देकर उन्हें सुरक्षा का आश्वासन देते हैं।यह एक महत्वपूर्ण भारतीय त्योहार है जो भाई-बहन के पवित्र रिश्ते का प्रतीक है। इसे राखी के नाम से भी जाना जाता है। रक्षाबंधन का अर्थ है रक्षा का बंधन। इस दिन बहनें अपने भाइयों की कलाई पर राखी बांधती हैं, जिससे भाई अपनी बहनों की सुरक्षा का वचन देते हैं। यह त्योहार भाई-बहन के अटूट प्रेम, विश्वास और सुरक्षा के भाव को समर्पित है। रक्षाबंधन का धार्मिक और सांस्कृतिक महत्व बहुत गहरा है। पौराणिक कथाओं के अनुसार, रक्षाबंधन की शुरुआत भगवान इंद्र की पत्नी शची (इंद्राणी) द्वारा इंद्र की कलाई पर रक्षा धागा बांधने से हुई थी, जिस से इंद्र ने असुरों के खिलाफ युद्ध में विजय प्राप्त की। इसी तरह, महाभारत में भी द्रौपदी द्वारा भगवान कृष्ण को रक्षा सूत्र बांधने की कथा है, जिसके बदले कृष्ण ने द्रौपदी की लाज बचाई थी।रक्षा बंधन भले ही भाई-बहन के प्रेम का प्रतीक हो, लेकिन भारत की सांस्कृतिक विविधता ने इस दिन को अनेक रूपों में सजाया है. गायों की पूजा से लेकर समुद्र अर्पण, यज्ञोपवीत से लेकर झूला उत्सव तक सावन पूर्णिमा हर राज्य में अपने मायने रखती है. यह पर्व हमें हमारी जड़ों से जोड़ता है और याद दिलाता है कि भिन्नताओं में ही हमारी एकता छिपी है, सावन की पूर्णिमा सिर्फ एक पर्व नहीं, बल्कि भारत की विविध संस्कृति और परंपरा की झलक है. हर राज्य ने इस दिन को अपनी- अपनी मान्यता, आस्था और रीति-रिवाज से सींचा है. यही विविधता भारत की सबसे बड़ी खूबी भी है, जो हर पर्व को केवल धार्मिक नहीं, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक उत्सव बना देती है।

साथियों बातें कर हम रक्षाबंधन पर्व के महत्व और परंपराओं की करें तो, रक्षाबंधन केवल एक धार्मिक पर्व नहीं, बल्कि इसका सामाजिक और सांस्कृतिक पहलू भी अत्यंत महत्वपूर्ण है:- (1)भाई-बहन के संबंधों का उत्सवः यह त्योहार भाई-बहन के पवित्र रिश्ते को सशक्त करता है, जो सामाजिक ताने-बाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह पर्व भाई-बहन के बीच विश्वास, समर्थन और प्रेम को उजागर करता है। (2)सामाजिक समरसता का संदेशः रक्षाबंधन जाति, धर्म, वर्ग से ऊपर उठकर मानवीय एकता का संदेश देता है। कई स्थानों पर महिलाएं सैनिकों, नेताओं और समाज के रक्षकों को भी राखी बांधती हैं, जिससे रक्षा का दायरा व्यापक होता है। (3) नारी शक्ति का सम्मानः यह पर्व अप्रत्यक्ष रूप से नारी सम्मान, गरिमा और उसकी सुरक्षा की ओर ध्यान आकर्षित करता है। बहन केवल उपहार पाने वाली नहीं, बल्कि वह समाज की संरक्षिका और मार्गदर्शिका भी होती है, भारत के विभिन्न क्षेत्रों में रक्षाबंधन को विभिन्न तरीकों से मनाया जाता है, जो क्षेत्रीय संस्कृति और परंपराओं का प्रतिनिधित्व करता है:- (1) उत्तरभारतः दिल्ली, उत्तर प्रदेश, पंजाब, हरियाणा, बिहार और मध्यप्रदेश में यह पर्व विशेष रूप से धूमधाम से मनाया जाता है। बहनें घर-घर जाकर भाइयों को राखी बांधती हैं और विशेष पकवान बनते हैं। (2) राजस्थान में लांबा या रक्षा-सूत्रः यहाँ महिलाएं अपने भाइयों केअलावा राज परिवारों या पुजारियों को भी राखी बांधती हैं। लांबा नामक विशेष राखी होती है जो सिरपर बांधी जाती है। (3) महाराष्ट्र में नारली पूर्णिमाः यहाँ मछुआरे समुद्र देवता को नारियल अर्पित करते हैं और अपनी बहनों को राखी बांधते हैं। यह पर्व समुद्र की कृपा और सुरक्षा की कामना से भी जुड़ा है। (4)बंगाल में झूलन पूर्णिमाः यहाँ राधा-कृष्ण की झांकी सजाकर उनकी झूलन यात्रा की जाती है, और साथ ही भाई-बहन भी रक्षाबंधन मनाते हैं। (5) उत्तराखंड, हिमाचल में राखी के साथ लोकगीतः यहाँ पारंपरिक पहाड़ी गीत और लोकनृत्य के साथ रक्षाबंधन को रंगीन बनाया जाता है।

साथियों बातें अगर हम डिजिटल युग में समय के साथ बदलते समय के साथ बदलती परंपरा और आधुनिक परिप्रेक्ष्य में राखी महोत्सव मनाने की करें तोसमय के साथ रक्षाबंधन की परंपराओं में बदलाव भी आया है। आज की आधुनिक पीढ़ी इस पर्व को तकनीकी माध्यमों से भी मना रही है, बहनें वीडियो कॉल के ज़रिए राखी बांधती हैं, डाक या ऑनलाइन प्लेटफॉर्म से राखी भेजती हैं। कई परिवारों में बहनें भाई के स्थान पर अपनी बहनों को भी राखी बांधती हैं, व आजकल भाई के साथ भाभी को एक साथ बैठाकर उनकी आरती उतारकर दोनों को राखी बांधी जाती है, जिससे इस पर्व की व्यापकता और भावना की विशालता सिद्ध होती है।(1)सैन्य बलों को राखीः- देशभर की बहनें सीमाओं पर तैनात भारतीय जवानों को राखी भेजकर उनके त्याग और समर्पण को नमन करती हैं।इससे राखी देशभक्ति और राष्ट्रीय एकता का भी प्रतीक बन जाती है। (2) विद्यालयों और सामाजिक संस्थाओं मेंरक्षाबंधनः स्कूलों, कॉलेजों, एनजीओ आदि में यह पर्व सांस्कृतिक कार्यक्रम के रूप में मनाया जाता है, जिसमें छात्र-छात्राएं परस्पर राखी बांधकर भाईचारे की भावना को शालीनता से बढ़ावा देते हैं।

साथियों बात कर हम, रक्षाबंधन के पर्व में व्यापारिक और आर्थिक पक्ष के एंगल से देखने की करें तो, रक्षाबंधन केवल एक पारिवारिक पर्व नहीं रहा, यह अब आर्थिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण हो गया है:-मिठाई उद्योग, कपड़े, राखी निर्माण, गिफ्ट आइटम, डाक सेवा, कूरियर कंपनियाँ और ऑनलाइन प्लेटफार्म इस पर्व से भारी लाभ कमाते हैं। राखी की बिक्री में करोड़ों का व्यापार होता है, जिससे कई कुटीर उद्योगों को भी प्रोत्साहन मिलता है, विशेष रूप से महिलाओं द्वारा बनाई गई हस्तशिल्प राखियाँ को बहुत महत्व मिलता है और बहुत सी महिलाओं के रोजगार का साधन हो गया हुआ वर्ष भर राखियां बनती है व एक महीने के अंदर उनकी पूरी आंखें बिक जाती है।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे किरक्षाबंधन 9 अगस्त 2025:-भारतीय सांस्कृतिक विरासत का वैश्विक उत्सव और भाई-बहन के अटूट बंधन का प्रतीक₹रक्षाबंधन₹ यह पर्व भाई-बहन के अटूट प्रेम, विश्वास और सुरक्षा के रिश्ते का प्रतीक है-युवाओं को त्योहारों का महत्व समझाने की ज़रूरत।आज खुशी के दिन भाई के भर भर आए नैना, कदर बहन की उनसे पूछो जिनकी नहीं है बहना, रक्षाबंधन की बधाईयां।

वैगन आर दुनिया में सबसे ज्यादा बिकने वाली गाड़ियों की लिस्ट में शामिल, 1 करोड़ का आंकड़ा

परिवहन विशेष न्यूज

मारुति सुजुकी वैगनआर ने वैश्विक बाजार में एक करोड़ से ज्यादा मॉडलों की बिक्री का आंकड़ा पार कर लिया है। WagonR को पहली बार जापान में 1993 में लॉन्च किया गया था। भारतीय बाजार में इसे 1999 में पेश किया गया था। WagonR की टॉल-बॉय स्टाइलिंग और बेहतर माइलेज ने इसे भारतीय परिवारों के बीच लोकप्रिय बना दिया। इसकी बिक्री में भारत का सबसे बड़ा योगदान रहा है।

नई दिल्ली। मारुति सुजुकी वैगनआर दुनियाभर में सबसे पॉपुलर मॉडलों में से एक है। इसके साथ ही यह अब यह ग्लोबल बाजार में सबसे ज्यादा बिकने वाले वाली गाड़ियों की लिस्ट में भी शामिल हो गई है। हाल ही में WagonR ने ग्लोबल बाजार में एक करोड़ से ज्यादा मॉडल की बिक्री के आंकड़े को पार किया है, जो बड़ी उपलब्धि है। WagonR को सबसे पहले जापान में सितंबर 1993 में लॉन्च किया गया था, इस मुकाम को लॉन्च होने के 31 साल और नौ महीने के बाद इस आंकड़े को पार किया है।

WagonR की ग्लोबल बिक्री में 1 करोड़ का आंकड़ा पार

Suzuki WagonR ने भारतीय बाजार में 1999 में लॉन्च किया गया था, इसके भारत आने से पहले इसकी बिक्री एशियाई और यूरोपीय बाजारों में की जा रही थी, जिसने इसे खुले हाथों से स्वीकार किया और इसकी बिक्री तेजी से होने लगी। इस हैचबैक हैचबैक का उत्पादन हंगरी और इंडोनेशिया में भी होता है, और इसे दुनिया भर के 75 से अधिक देशों में बेचा गया है।

WagonR की बिक्री में भारत का सबसे बड़ा योगदान

WagonR की टॉल-बॉय स्टाइलिंग की वजह से इसमें बड़ी केबिन दी जाती है, जो बढ़ते भारतीय परिवारों के लिए काफी बेहतरीन रहा। इसे भारतीय बाजार में 1.1-लीटर इंजन के साथ ऑफर किया जाता है, जिसे बेहतर माइलेज के लिए जाना जाता है। वहीं, 2019 में पेश किए गए नए जनरेशन के वर्जन में 1.0-लीटर और 1.2-लीटर स्वाभाविक रूप से एस्पिरेटेड इंजन ऑप्शन को लेकर आया गया, जिसमें पहले से ज्यादा केबिन स्पेस दिया गया। साथ ही इसे CNG इंजन के साथ लाया गया है, जिसकी वजह से इसकी बिक्री पहले से ज्यादा बढ़ गई।

WagonR की बिक्री का एक बड़ा हिस्सा भारतीय बाजार से आता है। यह देश में सबसे ज्यादा बिकने वाली कारों में से एक है। इस हैचबैक ने पिछले साल भारत में 25 साल पूरे किए थे और उस समय 32 लाख यूनिट की बिक्री का आंकड़ा पार कर लिया था।

एक साथ कावासाकी की चार सुपरस्पोर्ट बाइक हुई अपडेट, नए चमचमाते कलर मिले

कावासाकी ने निंजा ZX-6R और निंजा 650 को नए रंग विकल्पों के साथ अपडेट किया है। ZX-6R में 636cc का इंजन है जो 127hp की पावर देता है जबकि निंजा 650 में 649cc का इंजन है जो 67hp की पावर देता है। निंजा 500 और निंजा ZX-4RR को भी नए रंग विकल्प मिले हैं। ये अपडेटेड मॉडल 2026 के लिए हैं।

नई दिल्ली। कावासाकी ने हाल ही में ग्लोबल बाजार में अपने कई मॉडलों के 2026 वर्जन के लिए नए कलर को पेश कर चुकी है, जिसमें Kawasaki Versys 1100 S और SE शामिल है। अब कंपनी ने इन्हीं दोनों बाइक की तरह ही मिड-कैपेसिटी सुपरस्पोर्ट मोटरसाइकिल Ninja ZX-6R और Ninja 650 को नए कलर ऑप्शन के साथ अपेडट किया है। आइए जानते हैं कि इन दोनों बाइक को कौन-से नए कलर ऑप्शन दिए गए हैं?

Kawasaki Ninja ZX-6R में क्या है नया?

ग्लोबल बाजार में Kawasaki Ninja ZX-6R को मैटेलिक मैट ग्रेफेनेस्टील ग्रे/मैटेलिक स्पार्क ब्लैक/लाइम ग्रीन कलर दिया गया है। इसके साथ ही इस मोटरसाइकिल को लाइम ग्रीन लिवरी का एक अपडेटेड वर्जन भी मिला है।

Ninja ZX-6R कावासाकी की WorldSSP रेसिंग टीम के लिए बेस मॉडल है। इसमें 636 cc इन-लाइन फोर-सिलेंडर लिक्विड-कूल्ड इंजन का इस्तेमाल किया गया है। यह इंजन 127 hp की पावर और 69 Nm का टॉर्क जनरेट करता है। बाइक से निकलने वाले पावर को कंट्रोल करने का काम सामने 310 डुअल सेमी-फ्लोटिंग डिस्क और पिछले हिस्से में 220 मिमी सिंगल डिस्क करते हैं।

2026 Kawasaki Ninja 650 को क्या मिला?

कावासाकी की इस मिड-कैपेसिटी सुपरस्पोर्ट बाइक को दो नए कलर ऑपर्न दिए गए हैं, जिसमें मैटेलिक मैट ग्रेफेनेस्टील ग्रे/मैटेलिक फ्लैट स्पार्क ब्लैक शामिल है। इसके साथ ही एक लाइम ग्रीन वर्जन भी दिया गया है। ZX-6R के विपरीत Ninja 650 में एक पैरेलल-ट्विन इंजन का इस्तेमाल किया गया है। इसमें 649 cc का लिक्विड-कूल्ड इंजन मिलता है, जो 67 hp की पावर और 64 Nm का टॉर्क जनरेट करता है। इसके इंजन को 6-स्पीड ट्रांसमिशन के साथ जोड़ा गया है।

इन्हें भी मिले नए कलर

Ninja ZX-6R और Ninja 650 के साथ ही Ninja 500 को भी नए कलर ऑप्शन दिए गए हैं। इसमें मैटेलिक फ्लैट स्पार्क ब्लैक/मैटेलिक स्पार्क ब्लैक कॉम्बिनेशन दिया गया है, जबकि SE मॉडल को लाइम ग्रीन और मैटेलिक मैट ट्वाइलाइट ब्लू/कैंडी पर्सिमोन रेड कलर में लेकर आया गया है। वहीं, Ninja ZX-4RR को भी MY26 के लिए नए कलर दिए गए हैं, जिसमें लाइम ग्रीन और मैटेलिक मैट ग्रेफेनेस्टील ग्रे/मैटेलिक स्पार्क ब्लैक शामिल है।

2026 तक हीरो लॉन्च करेगी कई बाइक और स्कूटर, लिस्ट में पेट्रोल और इलेक्ट्रिक व्हीकल शामिल

हीरो मोटोकॉर्प 2026 तक भारतीय बाजार में नए स्कूटर और मोटरसाइकिल लॉन्च करेगी जिसमें 125cc सेगमेंट पर ध्यान केंद्रित किया जाएगा। कंपनी पेट्रोल और इलेक्ट्रिक दोपहिया वाहनों के साथ-साथ Harley-Davidson के साथ प्रीमियम बाइक भी लाएगी। Vida सब-ब्रांड का विस्तार होगा और Harley Davidson के साथ मिलकर दूसरी 440cc प्लेटफॉर्म पर बेस्ड मोटरसाइकिल लॉन्च की जाएगी। इसका उद्देश्य होंडा से प्रतिस्पर्धा का सामना करना है।

नई दिल्ली। हीरो मोटोकॉर्प साल 2026 तक भारतीय बादार में कई नए प्रोडक्ट को लॉन्च करने की तैयारी कर रही है। कंपनी अपने आगामी मॉडलों को ग्राहकों को जरूरतों और मांग के आधार पर कई सेगमेंट में अपने स्कूटर और मोटरसाइकिल को लेकर आने वाली है। कंपनी पेट्रोल के साथ ही इलेक्ट्रिक टू-व्हीलर तक लाने की तैयारी कर रही है। इसके साथ ही Harley-Davidson के साथ पार्टनरशि में प्रीमियम दोपहिया भी लाने की तैयारी कर रही है।

पेट्रोल सेगमेंट में नए मॉडल

कंपनी पेट्रोल कैटेगरी में ज्यादा प्रतिस्पर्धी 125 cc सेगमेंट पर अपना ध्यान केंद्रित करेगा। कंपनी इस तिमाही में कई प्रोडक्ट को लॉन्च करने की तैयारी कर रही है। कंपनी की तरफ से हाल में 125 cc सेगमेंट में Xtreme 125cc R, Glamour, Super Splendor XTec और Glamour XTech जैसी मोटरसाइकिल को पेश करती है। वहीं, हाल ही में Glamour के अपडेटेड वर्जन पर काम कर रही है, जिसे जल्द ही भारत में लॉन्च किया जा सकता है।

प्रीमियम और इलेक्ट्रिक वाहन

कंपनी अपने सब-ब्रांड Vida के पोर्टफोलियो को बढ़ाने पर काम कर रहा है। इसके नए वेरिएंट को जल्द लॉन्च किया जा सकता है। इसके साथ ही कंपनी Harley Davidson के साथ मिलकर बनाई गई अपनी दूसरी मोटरसाइकिल को लॉन्च करने की तैयारी कर रही है। यह नया मॉडल भी 440 cc प्लेटफॉर्म पर बेस्ड होगा, जो हाल ही में बंद हुई Hero Mavrick 440 और Harley Davidson X440 को आधार बनाता है।

यह अपडेट ऐसे समय में आया है जब Hero MotoCorp की घरेलू टू-व्हीलर बाजार में अग्रणी स्थिति को पिछले महीने, जुलाई 2025 में Honda Motorcycle & Scooter India (HMSI) के पीछे दूसरे स्थान पर आने के कारण पीछे छोड़ दिया गया था। नए मॉडलों को लॉन्च करने से कंपनी को बढ़ती प्रतिस्पर्धा से निपटने में मदद मिलने की उम्मीद है, साथ ही नए सेगमेंट पर भी ध्यान केंद्रित किया जाएगा।

हमेशा के लिए बंद होने वाला है इस एसयूवी का प्रोडक्शन, 2002 में पहली बार हुई थी लॉन्च, पोर्श-ऑडी ने मिलकर...

वोक्सवैगन जल्द ही अपनी पॉपुलर फ्लैगशिप SUV Touareg का प्रोडक्शन बंद करने की योजना बना रही है। 2002 में लॉन्च हुई इस SUV की तीन जनरेशन आ चुकी हैं। इसे Volkswagen Porsche और Audi ने मिलकर बनाया था। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक यूरोप में लागत को लेकर बदलाव के कारण 2026 तक इसका प्रोडक्शन पूरी तरह बंद हो जाएगा। भारत में इसका सफर 2009 में शुरू हुआ था।

नई दिल्ली। वोक्सवैगन जल्द ही अपनी पॉपुलर फ्लैगशिप SUV Touareg के प्रोडक्शन को बंद करने की तैयारी कर रही है। मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार, इसके प्रोडक्शन को साल 2026 तक पूरी तरह से बंद कर दिया जाएगा। इसे साल 2002 में पहली बार लॉन्च किया गया था। तब से लेकर अभी तक इसकी तीन जनरेशन को लाया जा चुका है। इसे Volkswagen, Porsche और Audi ने मिलकर तैयार किया था। आइए विस्तार में जानते हैं कि Volkswagen Touareg को किन खास फीचर्स के साथ ऑफर किया जाता रहा है?

Touareg का इतिहास और खासियत

Volkswagen Touareg को पहली बार 2002 में लॉन्च किया गया था। इसे Volkswagen, Porsche और Audi ने मिलकर तैयार किया था। इसे Cayenne और Q7 के प्लेटफॉर्म पर डेवलप किया गया था। Touareg को पावरफुल इंजन के साथ लेकर आया गया था। इसे दो पावरफुल इंजन ऑप्शन के साथ लेकर आया गया था। इसका 5.0-लीटर डीजल V10 इंजन 350hp की पावर और 850Nm का टॉर्क जनरेट करता है और 6.0-लीटर पेट्रोल W12 इंजन 450hp की पावर और 600Nm का टॉर्क जनरेट करता है।

Touareg क्यों बंद हो रही है?

एक रिपोर्ट के मुताबिक, Touareg को बंद करने का निर्णय यूरोप में अधिक लागत-सचेत, मास-मार्केट वाहन लाइन-अप बनाने की ओर Volkswagen के ध्यान में बदलाव का हिस्सा है। अभी तक यह जानकारी सामने नहीं आई है कि इसकी जगह पर कोई दूसरी SUV कंपनी लेकर आने वाली है, जिसका मतलब हो सकता है कि इस प्रीमियम एसयूवी को 24 साल के प्रोडक्शन के बाद रिटायर किया जा सकता है।

Touareg के बाहर होने के बाद, Volkswagen Tayron कार निर्माता की यूरोप और अन्य प्रमुख बाजारों के लिए सबसे बड़ी एसयूवी होगी। 2023 के अंत में पेश की गई, Tayron दो- और तीन-रो सीटिंग कॉन्फिगरेशन में आती है और इसे मौजूदा पीढ़ी के Touareg, जिसे 2018 में लेकर आया गया था उसकी तुलना में एक ज्यादा आधुनिक प्लेटफॉर्म पर बनाया गया है। Volkswagen 2025 के अंत तक भारत में भी Tayron को लॉन्च करने की योजना बना रही है।

भारत में Volkswagen Touareg का सफर

Volkswagen ने भारत में पहली पीढ़ी की Touareg को 2009 में लॉन्च किया था, जिसकी कीमत डीजल V6 इंजन के लिए 51.85 लाख रुपये थी। इस लाइन-अप में बाद में डीजल V8 और V10 पावरप्लांट भी जोड़े गए और 2012 में दूसरी पीढ़ी की Touareg ने इसकी जगह ली। भारत में दूसरी पीढ़ी की Touareg की कीमतें 58.5 लाख रुपये से शुरू हुईं, और इसे डीजल और पेट्रोल V6 इंजनों के साथ पेश किया गया था। 2019 में तीसरी पीढ़ी की Touareg के भारत में लॉन्च की बात चली, लेकिन Volkswagen ने इसे भारतीय बाजार में नहीं लेकर आई।

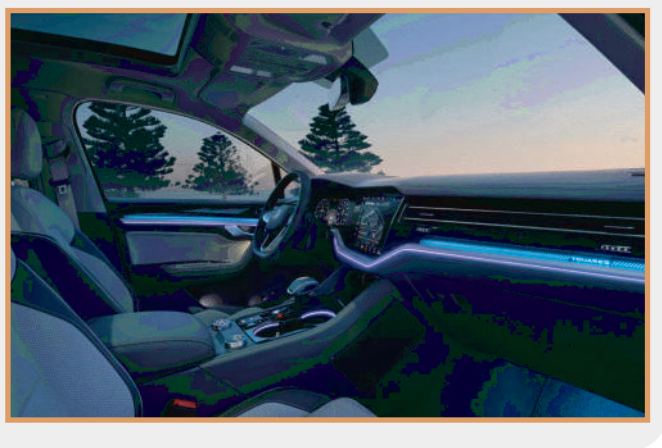

खेल के मैदान में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का दखल

(महिला खिलाड़ी, दिव्यांगजन, आदिवासी और पारंपरिक खेलों को विशेष समर्थन मिलेगा)

विजय गर्ग

भारत में खेलों की परंपरा सदियों पुरानी है किसी गांव के धूल भरे अखाड़े से लेकर शहर के चमचमाते सिंथेटिक ट्रैक तक, हमारी साझी स्मृति में पसीने की गंध और माटी की सोंधी खुशबू बराबर रची-बसी है। मगर पिछले कुछ वर्षों में इस पारंपरिक दृश्य के सामने एक नई रोशनी चमकी है, जैसे स्क्रीन, स्मार्ट रीडर और कलाइयों में लिपटी स्मार्ट-बैंड। बीते कुछ वर्षों में खेल का मैदान केवल खिलाड़ियों की मेहनत और अभ्यास का अखाड़ा नहीं रहा, बल्कि अब यह तकनीक की प्रयोगशाला बनता जा रहा है। जहां पहले एक कोच की आंख और खिलाड़ी की संवेदनाएं प्रदर्शन को मापती थीं, वहीं आज कृत्रिम मेधा (एआइ) की आंखें, डेटा विश्लेषण और आधुनिक तकनीकी उपकरण खेल के हर पल को बारीकी से पकड़ते हैं। ऐसे में उभरती खेल शक्ति के रूप में भारत के लिए यह बदलाव का अवसर भी है और चुनौती भी खिलाड़ी के शरीर का के हर सूक्ष्म कंपन अब डेटा है, जिसे 'एल्गोरिदम' पलक झपकते पढ़ लेते हैं।

हाल ही में जारी हुई 'इंडिया एआइ मिशन और राष्ट्रीय खेल नीति-2025' ने इस बदलाव को संस्थागत जामा पहना दिया है। खेल नीति दरअसल तीन बड़े वादों पर टिकी है। पहला, जनभागीदारी- मतलब हर बच्चे को कम से कम एक खेल से जोड़ना। दूसरा, उच्च प्रदर्शन- यानी वर्ष 2036 के ओलंपिक तक भारत पदकों की दहलीज पर खड़े रहने के बजाय ऊपर की सीढ़ियां चढ़े। तीसरा, खेल उद्योग का विकास- यानी खेल को करिअर, बाजार और नवाचार का पूर्णकालिक तंत्र बनाना। इन तीनों वादों को गति देने के लिए खेल नीति में कृत्रिम मेधा को ईंधन मान लिया गया है, जैसे किसी रथ को तीन घोड़े खींच रहे हों और कृत्रिम उनकी लगाम थामे सारथी हो। विद्यालयों में तंदरुस्ती संबंधी आंकड़े एकत्र करना, राज्यों में खेल विज्ञान केंद्र खोलना और निजी क्षेत्र को कर- रियायत देकर वाचार की राह चौड़ी

करना, ये सब उसी विचार-श्रृंखला का हिस्सा हैं।

आज खिलाड़ी की तंदुरुस्ती का स्तर, हृदयगति, थकान, नींद और यहां तक कि उसकी मानसिक स्थिति भी तकनीकी उपकरणों और साफ्टवेयर से मापी जाती है। फुटबाल, क्रिकेट और हाकी जैसे खेलों तो यह सामान्य बात हो गई है, लेकिन अब भारत जैसे देशों में कुश्ती, कबड्डी और एथलेटिक्स जैसे पारंपरिक खेलों में भी यह तकनीकी हस्तक्षेप दिखाई देने लगा है। 'मशीन की आंख' यानी कृत्रिम मेधा सिर्फ आंकड़े इकट्ठा नहीं करती, बल्कि कोच और खेल संस्थानों को यह समझने में मदद करती है कि कौन-सा खिलाड़ी किस समय किस तरह का प्रदर्शन करेगा।

दिल्ली के इंदिरा गांधी इंडोर स्टेडियम में अब कबड्डी खिलाड़ियों को 'स्मार्ट रीडर जैकेट पहनाई जाती है। इससे खिलाड़ी के कूदने, मुड़ने, सांस की गति, यहां तक कि पैंतरे बदलते वक्त उसकी आंखों की सूक्ष्म झपक भी दर्ज हो जाती है। लखनऊ की महिला हाकी अकादमी में 'सेंसर स्टिक' से पता चला कि 'ड्रैग फ्लिक' के समय ज्योति सिंह की दाहिनी कलाई जरूरत से अधिक घूमती है। एक हफ्ते में सुधार आया और उसने एशियन चैंपियंस ट्राफी में निर्णायक गोल दागा। पेरिस ओलंपिक 2024 की तैयारियों के दौरान फ्रांस और अमेरिका कृत्रिम मेधा का बड़े पैमाने पर इस्तेमाल किया। अमेरिका की जिम्नास्टिक टीम ने खिलाड़ियों की 'बाडी मूवमेंट' का थ्री डी विश्लेषण करने के लिए एक कृत्रिम मेधा उपकरण का इस्तेमाल कर व्यक्तिगत कमजोरियों की पहचान की और प्रशिक्षण को उसी मुताबिक बदला फ्रांस की साइक्लिंग टीम ने स्मार्ट हेलमेट का उपयोग कर खिलाड़ियों के दिल की धड़कन, आक्सीजन स्तर और थकान को मापा, जिससे उन्हें प्रतियोगिता के दौरान रणनीति बदलने में मदद मिली।

भारत की नई राष्ट्रीय खेल नीति में भी इस तकनीकी क्रांति को जगह दी गई है। सरकार ने कृत्रिम मेधा, डेटा विश्लेषण और खेल विज्ञान के उपयोग को नीति के मूल में रखा है। इसका उद्देश्य सिर्फ ओलंपिक में पदक लाना नहीं है, बल्कि खेल को जन आंदोलन बनाना, युवाओं को सशक्त करना और देश को एक 'फिट इंडिया' में भी बदलना है। चयन प्रक्रिया में भी कृत्रिम मेधा ने बड़ा उलटफेर किया है। पूरे सत्र के प्रदर्शन का आंकड़ा खिलाड़ी की निरंतरता और तंदरुस्ती का सच सामने रख देता है। पारदर्शिता बढ़ी है और यह अच्छी बात है लेकिन सवाल यह भी उठता है कि सुदूर क्षेत्रों से आने वाले खिलाड़ियों के पास अगर सेंसर-युक्त जूते नहीं हैं, तो उनकी दौड़ का 'डेटा' बनेगा कैसे? संभावना यह भी है कि गांव की कोई धाविका तकनीकी अभाव के के कारण चयन सूची से से बाहर रह रह सकती है। उधर, कृत्रिम मेधा ने। एक नया बाजार खोल दिया है- 'स्पोर्ट्स टेक' । केपीएमजी की एक रपट बताती है कि भारत का स्पोर्ट्स टेक बाजार 18 फीसद वार्षिक दर से बढ़ रहा है और वर्ष 2030 तक यह ढाई अरब डालर का हो जाएगा। नई नीति में निजी निवेश को बढ़ावा देने के लिए 50 फीसद पूंजीगत मदद की बात कही गई है। मगर बाजार के साथ जोखिम भी भी आते हैं। सबसे बड़ा खतरा निजी जानकारी की गोपनीयता का है। खिलाड़ी के हार्मोन, हृदय गति, नींद और सोशल मीडिया रुझान आदि के आंकड़े अगर सट्टेबाजों के हाथ लग जाएं, तो उनका करिअर तबाह हो सकता है। दूसरा, खतरा एल्गोरिदम के पूर्वाग्रह का है। अगर प्रशिक्षण आंकड़ा शहरों से आता है, तो मशीनी सीख इसी ढांचे को आदर्श मान लेगी। उदाहरण के लिए छत्तीसगढ़ के बस्तर क्षेत्र के आदिवासी युवाओं द्वारा भाला फेंकने की 'टुक्का थ्रो' शैली को कृत्रिम मेधा आधारित कोचिंग प्रणाली 'डिफार्म टेक्नीक' मान सकती है, जबकि यह तकनीक उनकी कलाई की ताकत, वर्षों की स्थानीय अभ्यास विधि और क्षेत्रीय शारीरिक क्षमता का अनूठा उदाहरण है।

तीसरी चुनौती कोचिंग के 'मानवीय कौशल' से जुड़ी है। दशकों के अनुभव से प्रशिक्षक कभी-कभी ऐसा निर्णय लेते हैं, जिसे 'डेटा' नहीं पकड़ पाता। फुटबाल के मैच में कोच ने देखा कि उसका स्ट्राइकर भले ही थका लग रहा हो, मगर प्रतिद्वंद्वी उससे भी ज्यादा हांफ रहा है; कोच ने स्ट्राइकर को रुके रहने दिया और मैच पलट गया। अगर उस क्षण एल्गोरिदम का सुझाव सुनते, तो शायद बदलाव हो जाता और नतीजा अलग होता। इसीलिए जरूरी है कि अंतिम फैसला इंसानी विवेक का ही रहे। कृत्रिम मेधा सलाह दे, संचालक न बने। सबसे बड़ा सवाल यह है कि क्या खेल मानवीय त्रुटियों, भावनात्मक क्षणों और बेजोड़ हुनर का रंग खो देगा? जवाब है नहीं, अगर हम चेतन रहें। शतरंज के उदाहरण से अगर समझें तो कंप्यूटर के आने के बाद डर था कि खेल उबाऊ हो जाएगा, लेकिन मैग्नस और र विदित गुजराती जैसे खिलाड़ी उन्हीं इंजनों को चुनौती दे रहे हैं और नई रचनात्मक चालें ढूंढ़ रहे हैं।

हमें तीन सूत्र पकड़ने होंगे। पहला, 'डेटा' तक बराबर पहुंच- अगर संसाधन शहर के ही हिस्से हुए, तो सपने भी शहर तक सीमित रह जाएंगे। दूसरा, अंतिम निर्णय में इंसानी विवेक- एल्गोरिदम सलाह दे सकता है, मगर खेल की 'कहानी' इंसान ही लिखेगा। तीसरा, खिलाड़ी कल्याण- बीमा, मानसिक स्वास्थ्य, डेटा सुरक्षा सब एक ही ताने-बाने में बुने जाएं। खेल का उद्देश्य पदक ही नहीं, एक स्वस्थ और नैतिक समाज बनाना भी है। हालांकि, तस्वीर का दूसरा पहलू यह भी है कि कृत्रिम मेधा और डेटा एनालिटिक्स खिलाड़ियों के प्रदर्शन की रोज निगरानी होगी और सुधार के मौके समझ में आएंगे। महिला खिलाड़ी, दिव्यांगजन, आदिवासी और पारंपरिक खेलों को विशेष समर्थन मिलेगा, ताकि वे भी कामयाबी की यात्रा का हिस्सा बन सकें।

जनभागीदारी से संरक्षित होगी आर्थिक

विजय गर्ग

ट्रंप की टैरिफ दादागीरी और तमाम देशों के आर्थिक संरक्षणवाद से भारत के लिए उभरी आर्थिक चुनौतियों के बीच स्वदेशी का मंत्र ही एक कारगर विकल्प सिद्ध हो सकता है। वाराणसी में अपने लोकसभा क्षेत्र से एक बार फिर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने देशवासियों का आह्वान किया है कि संकल्प लें कि हम अपने घर स्वदेशी सामान ही लाएंगे। उल्लेखनीय है कि कोरोना संकट के दौरान जब वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला डगमगाई थी, तब भी प्रधानमंत्री ने देश में स्वदेशी आंदोलन का आह्वान किया था। निस्संदेह, इस दिशा में कुछ प्रगति हुई है, लेकिन हकीकत है कि अपेक्षित परिणाम हासिल नहीं हुए। आज के ऐसे दौर में जब दुनिया की बड़ी अर्थव्यवस्थाएं घोर संरक्षणवाद का सहारा ले रही हैं, भारत को अपनी अर्थव्यवस्था को स्वदेशी के संकल्प से ही संरक्षण देना होगा। ये कदम मौजूदा आर्थिक परिदृश्य में अपरिहार्य हैं क्योंकि दुनिया के तमाम देश अपने-अपने आर्थिक हितों पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं। अमेरिका द्वारा भारतीय उत्पादों पर अन्यायपूर्ण ढंग से लगाया गया 25 फीसदी का टैरिफ इस कड़ी का ही विस्तार है। ऐसे वक्त में जब भारत दुनिया की चौथी बड़ी अर्थव्यवस्था बन गया है तो हमें घरेलू अर्थव्यवस्था का स्वास्थ्य सुधारने को अपनी प्राथमिकता बनाना ही होगा। यदि हमारी अर्थव्यवस्था आत्मनिर्भर होगी तो फिर कोई वैश्विक नेता दबाव बनाकर हमारी विदेश व आर्थिक नीतियों को प्रभावित न कर सकेगा। विडंबना यह है कि चीन के लगातार शत्रुतापूर्ण व्यवहार व सीमा पर तनाव के बावजूद चीनी उत्पादों का आयात बढ़ता ही जा रहा है। यहां तक कि हमारे त्योहारों का सामान भी चीन से बनकर आ रहा है।

इसमें दो राय नहीं कि स्वदेशी का संकल्प देश की वर्तमान जरूरत है, लेकिन देश के उद्यमियों को भी सुनिश्चित करना होगा कि स्वदेशी वस्तुओं का विकल्प गुणवत्तापूर्ण हो। आज के उपभोक्तावादी युग में लोग गुणवत्ता से समझौता करने को तैयार नहीं होते। उद्यमियों को सोचना होगा कि कैसे चीन के उद्यमी कम लागत में गुणवत्तापूर्ण उत्पाद उपलब्ध करा रहे हैं। सरकार को भी उद्योग व व्यापार जगत पर नौकरशाही के शिकंजे को कम करना होगा। उत्पादन क्षेत्र को हमें उस स्तर तक ले जाने के लिये अनुकूल वातावरण तैयार करना होगा, जहां गुणवत्तापूर्ण सस्ते उत्पाद तैयार किए जा सकें। जरूरत इस बात की भी है कि हम अपने विशाल असंगठित क्षेत्र को संगठित क्षेत्र में शामिल करने के लिये प्रयास करें। हम याद रखें कि चीन ने अपने देश में लघु उद्योगों को संगठित करके ही दुनिया में उत्पादन के क्षेत्र में बादशाहत हासिल की है। विश्व में सबसे बड़ी आबादी वाले देश भारत को अपनी युवा आबादी की क्षमता का उपयोग करने के लिये इस दिशा में बड़ी पहल करनी होगी। हमारा शिक्षा का ढांचा इस तरह तैयार हो कि हम कौशल विकास को अपनी प्राथमिकता बनाएं। जिससे हम कालांतर कृत्रिम बुद्धिमत्ता और आधुनिक तकनीक का उपयोग उत्पादन बढ़ाने के लिये कर सकें। तब स्वदेशी के संकल्प से भारत न केवल आत्मनिर्भर होगा, बल्कि हम गुणवत्तापूर्ण निर्यात के जरिये अपने दुर्लभ विदेशी मुद्रा भंडार को भी समृद्ध कर सकेंगे।

मणिपुर से बंगाल तक अस्तित्व की लड़ाई

कुलदीप चंद अग्निहोत्री

मणिपुर के विभिन्न समुदायों में आपसी संवाद की संभावनाएं काफी देर से तलाशी जा रही थीं। इन्हीं संभावनाओं में से मणिपुर में स्थायी शांति की स्थापना हो सकती है। मणिपुर में मोटे तौर पर तीन समुदाय रहते हैं, मैतेयी, थादौ और तांखुल। संख्या के लिहाज से मैतेयी सबसे ज्यादा हैं और उसके बाद थादौ और तांखुल की बारी आती है। मैतेयी समुदाय के लोग मैदानी इलाकों में रहते हैं और शेष दो समुदाय पहाड़ों में बसते हैं, इसलिए उन्हें पहाड़ी भी कहा जाता है। थादौ और तांखुल के अतिरिक्त पच्चीस-तीस अन्य छोटे छोटे समुदाय भी हैं, लेकिन उनकी संख्या कम होने के कारण वे थादौ या तांखुल के केन्द्र के इर्द-गिर्द घूमते रहते हैं। फिलहाल मणिपुर में जो विवाद पिछले एक-दो साल से चल रहा है, उसका ताल्लुक थादौ और मैतेयी समुदाय से है, तांखुल का उससे कुछ लेना देना नहीं है। इससे पहले जब भी मणिपुर में विवाद होता था, वह थादौ और तांखुल के बीच में ही होता था। उससे मैतेयी का कुछ लेना-देना नहीं होता था। पिछले दिनों कुछ सीमा तक सरकार के प्रयासों से और कुछ सीमा तक इन दोनों समुदायों के आपसी प्रयासों से, मैतेयी और थादौ बातचीत के लिए सांझे मंच पर मिलने के लिए तैयार हुए हैं। इसका श्रेय थादौ समुदाय के युवा नेतृत्व को दिया जाना चाहिए। थादौ समुदाय पिछले कुछ साल से उस उपनिवेशवाद जकडन से मुक्त होने का प्रयास कर रहा था जिसके चलते मणिपुर में विभिन्न समुदायों में विवाद चलता रहता है।

ब्रिटिश राज के दिनों में गोरे शासकों ने थादौ समुदाय की पहचान समाप्त कर, उसे कुछ दूसरे छोटे छोटे और जनसंख्या के लिहाज से नगण्य समुदायों के साथ नत्थी कर, उसकी ऐतिहासिक पहचान समाप्त करने की कोशिश की थी। इन सभी समुदायों को 'कुकी' नाम से नई पहचान दी गई और उसका इतिहास भी गढ़ा गया। इस कृत्रिम 'कुकी' समुदाय को नृविज्ञान के कारकों पर स्थापित कर उसे मैतेयी के खिलाफ खड़ा कर दिया गया। शुरू में तो ये समुदाय इस उपनिवेशवादी षड्यंत्र को पहचान नहीं पाए। कुकी समुदाय को लेकर ढेरों किताबें लिखी जाने लगीं। लेकिन समय रहते थादौ समुदाय के विद्वानों की गहरी नजर से यह षड्यंत्र छिपा न रह सका। कुकी की छाया में थादौ को ग्रहण लग रहा था। उसका इतिहास, उसके महापुरुषों और उनके देवी देवताओं के नाम गुम होते जा रहे थे। यह भी बहस होने लगी कि आखिर थादौ के स्थान पर उन्हें कुकी क्यों कहा जाने लगा है? लेकिन इन प्रश्नों का उनके पास कोई उत्तर नहीं था, जो कुकी शब्द का प्रयोग कर रहे थे। एक तर्क यह जरूर दिया जा रहा था कि इससे विभिन्न समुदायों में एकता स्थापित होती है। लेकिन नाम बदले बिना भी तो एकता हो सकती है। अपना नाम सुरक्षित रखने से एकता में बाधा होती है, यह अजीब तर्क था। लेकिन तथाकथित एकता की यह गाथा म्यांमार के चिन प्रांत तक फैला दी गई। मिजोरम को भी जुमी के नाम से इसमें शामिल कर लिया गया। कुकी का इतना बड़ा जाल बुनने के बाद उसमें ईसाइयत की छौंक लगा कर नया रणक्षेत्र तैयार किया गया। लेकिन धीरे धीरे थादौ समुदाय ने अपने अस्तित्व को लेकर बढ़ते इस खतरे को पहचान और इस जाल से बाहर निकलने का उपक्रम शुरू किया। मैतेयी और थादौ का संवाद इसी में से निकला है।

आशा की जानी चाहिए कि इससे मणिपुर में स्थायी शांति का रास्ता निकलेगा। दूसरा विषय बांग्लादेशियों का है। राहुल गांधी और ममता बनर्जी को छोडक़र इस देश में सभी जानते हैं कि बंगलादेश से लाखों लोग भारतवर्ष में गैर कानूनी रूप से घुसे हुए हैं। उनको इस देश में लाने और बसाने के लिए देवों व देशों में कुछ संगठित गिरोह काम करते हैं। सबसे पहला काम इन बांग्लादेशी नागरिकों के लिए राशन कार्ड बनाने, आधार कार्ड बनाने का होता है। यह काम पश्चिमी बंगाल में कुछ सरकारी अधिकारियों के साथ मिल कर किया जाता है। एक बार ये दस्तावेज बन जाते हैं, उसके बाद ये बांग्लादेशी देश भर में फैल जाते हैं। उसके बाद अपने अपने स्थान पर अपना वोट भी बनवा लेते हैं। अब सरकार इन अवैध तथाकथित नागरिकों की पहचान कर उन्हें देश से बाहर निकालने की कोशिश कर रही है। उससे विपक्ष की चिंता बढ़ रही है। सबसे ज्यादा हल्ला बंगाल और बिहार को लेकर हो रहा है। लेकिन इन अवैध बांग्लादेशियों को लेकर विपक्ष ही चिंतित क्यों है। इसका एक ही कारण हो सकता है। विपक्ष को यह पक्का विश्वास है कि इस प्रकार के अवैध बांग्लादेशी चुनाव में कांग्रेस, टीएमसी या इस प्रकार के सहयोगी दलों को ही वोट देते हैं। पश्चिमी बंगाल में तो चुनाव आयोग ने कुछ ऐसे कर्मचारियों की पहचान भी की है जिन्होंने हैरानीजनक संख्या में इस प्रकार के दस्तावेज जारी किए हैं।

आयोग ने पश्चिमी बंगाल सरकार से आग्रह किया है कि इन अधिकारियों पर कानूनी कार्रवाई की जाए। लेकिन ममता बनर्जी इसे बंगला भाषा पर प्रहार बता रही हैं और उसने इन कर्मचारियों की रक्षा करने का अपना संकल्प दोहराया है। इतना ही नहीं, जब हरियाणा इत्यादि अन्य प्रदेशों में वहां की सरकारें अवैध बांग्लादेशियों के खिलाफ कुदम उठाती हैं तो बंगाल सरकार इसे बंगालियों के खिलाफ चलाया जाने वाला अभियान बताने लगती हैं। यदि पुलिस रपटों को आधार बनाया जाए तो बहुत से बांग्लादेशी गिरोह भारत में आतंकवादी गतिविधियों में संलिप्त पाए गए हैं। उच्चतम न्यायालय अनेक बार कह चुका है कि अवैध घुसपैठियों को बाहर निकालना चाहिए। लेकिन दुर्भाग्य से विपक्षी दल वोट की राजनीति के चक्कर में देश के नागरिकों के हितों को प्राथमिकता न देते हुए सत्ता हथियाने की जल्दी में बांग्लादेशियों को बैसाखियों के तौर पर इस्तेमाल कर रहा है। कांग्रेस ऐसा करती है, तो किसी को आश्चर्य नहीं होता क्योंकि कांग्रेस केवल सोनिया गांधी परिवार के भीतर सिमट कर रह गई है, लेकिन इस मामले में ममता बनर्जी का व्यवहार चिंतित करता है। यह प्रश्न बंगला संस्कृति और भाषा का प्रश्न है, क्या ममता बनर्जी चाहती हैं कि बंगलादेश उसको सोख ले? सत्ता के लिए यह बहुत घटिया खेल ही कहा जाएगा।

कृषि प्लास्टिक प्रदूषण से निपटना

विजय गर्ग

प्लास्टिक मानव समाज के लिए निर्विवाद लाभ लाते हैं। लेकिन अब, प्लास्टिक 'असहनीय संकट' के रूप में उभर रहा है। पहला सिंथेटिक प्लास्टिक 1907 में तैयार किया गया था। 1950 तक, दुनिया दो मिलियन टन (एमटी) का उत्पादन कर रही थी। यह अब सालाना 450 मीट्रिक टन से अधिक का उत्पादन करता है। केवल नौ प्रतिशत को सफलतापूर्वक पुनर्नवीनीकरण किया जाता है।

हर साल, 19-23 मीट्रिक टन प्लास्टिक अपशिष्ट जलीय पारिस्थितिक तंत्र में लीक होता है, झीलों, नदियों और समुद्रों को प्रदूषित करता है और 13 मीट्रिक टन प्लास्टिक मिट्टी में जमा होता है। प्लास्टिक का कचरा अब हर जगह है, जो हमारे जंगलों, मिट्टी, पानी और हवा को नुकसान पहुंचाता है। माइक्रोप्लास्टिक ने जानवरों, पौधों, फलों और यहां तक कि मानव शरीर में प्रवेश किया है। एक हालिया अध्ययन में एक लीटर बोतलबंद पानी मिला जिसमें प्लास्टिक के लगभग 240,000 छोटे टुकड़े शामिल थे।

प्लास्टिक ने दुनिया के हर कोने में घुसपैठ की है - हमारे द्वारा पीने वाले पानी, हमारे द्वारा खाए जाने वाले भोजन और सांस लेने वाली हवा को दूषित करना। हम में से प्रत्येक के लिए इस कचरे के जिम्मेदार उपयोग और प्रबंधन के लिए सूचित सामूहिक कार्रवाई करने का उच्च समय है।

कृषि में प्लास्टिक का उपयोग पिछले दशकों में, प्लास्टिक कृषि का एक अभिन्न हिस्सा बन गया है और आधुनिक वाणिज्यिक कृषि की तीव्रता के साथ यह उपयोग बढ़ रहा है। खेत भर में पॉलीथीन फिल्म का आवेदन 1950 के दशक में शुरू हुआ क्योंकि यह मिट्टी के तापमान को सफलतापूर्वक मध्यम कर सकता है, खरपतवार के विकास को सीमित कर सकता है और नमी के नुकसान को रोक सकता है। यह विधि कपास, मक्का और गेहूं की पैदावार को अपेक्षाकृत कम लागत पर औसतन 30 प्रतिशत तक बढ़ाती पाई गई। प्लास्टिक का उपयोग अब मल्चिंग, अंकुर ट्रे, सूक्ष्म सिंचाई, तालाब लाइनर, पॉलीहाउस, खाद्य भंडारण, पैकेजिंग और परिवहन में किया जाता है। पॉलीथीन अवशेष अब प्रति हेक्टेयर 300 किलोग्राम तक के स्तर पर उपचारित मिट्टी में तेजी से प्रचलित है।

2021 में, खाद्य और कृषि संगठन (एफएओ) ने कृषि में प्लास्टिक के उपयोग का आकलन करते हुए एक ऐतिहासिक रिपोर्ट जारी की। रिपोर्ट में गणना की गई है कि, 2019 में, कृषि मूल्य श्रृंखलाओं ने संयंत्र और पशु उत्पादों में 12 मीट्रिक टन प्लास्टिक उत्पादों और खाद्य पैकेजिंग में 37.3 मीट्रिक टन का उपयोग किया।

सिर्फ एक किलो पतली मल्चिंग शीट 700 वर्ग फीट की कृषि भूमि को कवर करने और दूषित करने के लिए पर्याप्त है। कृषि भूमि में प्लास्टिक कचरे का संचय मिट्टी के स्वास्थ्य को नुकसान पहुंचाता है, पारिस्थितिक तंत्र को बाधित करता है, और स्थायी खेती प्रथाओं के लिए एक बढ़ती चुनौती बन जाता है। कृषि भूमि में प्लास्टिक का कचरा मिट्टी की उर्वरता को कम करता है। प्लास्टिक के टुकड़े वायु परिसंचरण में बाधा डाल सकते हैं और मिट्टी के स्वास्थ्य के लिए महत्वपूर्ण माइक्रोबियल समुदायों को नकारात्मक रूप से प्रभावित कर सकते हैं। वे रूट बायोमास और समग्र पौधे के विकास पर प्रतिकूल प्रभाव डाल सकते हैं, केंचुओं जैसे मिट्टी के जीवों को नुकसान पहुंचा सकते हैं, उनके भोजन और उत्सर्जन को प्रभावित कर सकते हैं। माइक्रोप्लास्टिक्स को पौधों द्वारा अवशोषित किया जा सकता है, संभावित रूप से खाद्य श्रृंखला और मानव निकायों में प्रवेश कर सकता है। कृषि में प्लास्टिक प्रदूषण दुर्भाग्य से नीति और अभ्यास स्तरों पर आवश्यक ध्यान का अभाव है और खेती और पारिस्थितिक तंत्र की समग्र स्थिरता को खतरे में डाल रहा है।

आम तौर पर, कृषि निर्णयों में अपर्याप्त समग्र, पर्यावरणीय और दीर्घकालिक दृष्टिकोण के साथ एक विशेष फसल के मौसम की आर्थिक उत्पादकता का प्रभुत्व होता है। प्लास्टिक की तीव्रता में वृद्धि और प्रसार और व्यवस्थित निपटान की कमी और प्रबंधन विनाशकारी परिणाम पैदा करते हैं। खेती समुदाय इन परिणामों के बारे में अनभिज्ञ और असूचित हैं। यहां तक कि प्लास्टिक प्रदूषण के प्रवचन को शहरी कचरे और जल निकायों के प्रदूषण पर भारी पड़ता है, जिसमें कृषि-प्लास्टिक पर कोई गंभीर कार्रवाई नहीं होती है। महाराष्ट्र प्लास्टिक एक्शन रोडमैप जैसी हालिया रणनीतिक पहलों में से कुछ भी कृषि-प्लास्टिक मुद्दे को पर्याप्त रूप से नहीं पहचानते हैं।

कृषि-प्लास्टिक प्रदूषण से होने वाले नुकसान के बारे में ज्ञान और समझ हाल ही में है। एफएओ ने 2019 में अध्ययन किया और अक्टूबर 2024 में कृषि में प्लास्टिक के सतत उपयोग और प्रबंधन पर स्वैच्छिक आचार संहिता जारी की।

एफएओ के आकलन के अनुसार, एशिया को कृषि-प्लास्टिक का सबसे बड़ा उपयोगकर्ता माना जाता है, जो वैश्विक उपयोग का लगभग आधा हिस्सा है। इस बात के सबूत हैं कि अधिकांश प्लास्टिक जलाए जाते हैं, दफन किए जाते हैं, या लैंडफिल होते हैं, हालांकि रिकॉर्ड कीपिंग आम तौर पर अस्तित्वहीन होती है। माइक्रोप्लास्टिक पर कर्नाटक और महाराष्ट्र में हुए शोध में मिट्टी में सबसे अधिक माइक्रोप्लास्टिक संदूषण के सबूत मिले - महाराष्ट्र में एक डंपसाइट पर 87.57 टुकड़े प्रति किलोग्राम मिट्टी। एक हालिया नमूना अध्ययन से पता चलता है कि 90 प्रतिशत भारतीय गांवों में कोई अपशिष्ट प्रबंधन प्रणाली नहीं है, जबकि 67 प्रतिशत परिवार प्लास्टिक कचरे को जलाना पसंद करते हैं।

कृषि-प्लास्टिक प्रदूषण से निपटना समयबद्ध कार्रवाई-उन्मुख नीति ढांचे की तत्काल आवश्यकता है। उपयोग किए जाने वाले प्लास्टिक उत्पादों की मात्रा और पर्यावरण में रिसाव की निगरानी करने की भी आवश्यकता है। परिचालन स्तर पर, एग्री-प्लास्टिक के बेहतर प्रबंधन की दिशा में तत्काल कार्रवाई और एकल उपयोग प्लास्टिक के उपयोग पर तत्काल रोक लगाने की आवश्यकता है। रोकथाम, कमी, पुनः उपयोग और रीसाइक्लिंग के माध्यम से प्लास्टिक अपशिष्ट उत्पादन को कम करने के लिए परिपत्र दृष्टिकोण को बढ़ावा देना आवश्यक है।

खेत के फैसलों की जानकारी दी लचीला और टिकाऊ कृषि खाद्य प्रणालियों को प्राप्त करने के लिए कृषि प्लास्टिक प्रदूषण से निपटना सर्वोपरि है। सबसे पहले, हमें कृषक समुदाय को विनाशकारी परिणामों को समझने की आवश्यकता है। जो लोग अल्पकालिक मौद्रिक लाभ का आनंद ले रहे हैं, उन्हें कृषि कार्यों के माध्यम से विचार करने की आवश्यकता है।

नीति ढांचे को लागू करना नीति में कृषि-प्लास्टिक कचरे के उत्पादन, उपयोग और प्रबंधन की जांच करनी चाहिए। कानूनी रूप से बाध्यकारी ढांचे द्वारा समर्थित समयबद्ध लक्ष्य-उन्मुख रणनीति को लागू करने की आवश्यकता है।

कृषि-प्लास्टिक कचरे के उत्पादन, उपयोग और प्रबंधन के दौरान निर्दिष्ट मानदंडों का उल्लंघन करने वालों के लिए कार्यों और सजा की निगरानी की आवश्यकता है। गैर-जिम्मेदार डंपिंग या एग्री-प्लास्टिक को जलाने पर पूरा रोक होनी चाहिए।

कानूनी ढांचे को प्लास्टिक निर्माताओं को अपने उत्पादों के जीवन के अंत प्रबंधन के लिए जिम्मेदार ठहराना चाहिए।

ग्राम स्तरीय जलवायु कार्य योजना भारत में 665,000 गाँव और 268,000 ग्राम पंचायतें हैं। हर साल, गाँव और ग्राम पंचायतें अपनी वार्षिक विकास योजना (ADP) तैयार करती हैं।

गांवों में जलवायु कार्रवाई के लिए भारत सरकार का दृष्टिकोण मुख्य रूप से जलवायु परिवर्तन पर राष्ट्रीय कार्य योजना और जलवायु परिवर्तन पर इसके बाद की राज्य कार्रवाई योजनाओं द्वारा निर्देशित है। इन चौराहों का उद्देश्य जलवायु चिंताओं को विभिन्न विकासात्मक कार्यक्रमों में एकीकृत करना और स्थानीय स्तर पर जलवायु लचीलापन बनाना है, विशेष रूप से कृषि और ग्रामीण आजीविका पर ध्यान केंद्रित करना है।

गांव की जलवायु कार्य योजना को कृषि-प्लास्टिक अपशिष्ट प्रबंधन, उपयुक्त विकल्पों को अपनाने के साथ एकीकृत किया जाना चाहिए, और जलवायु-लचीला कृषि का भी हिस्सा होना चाहिए। प्लास्टिक कचरे को जलाने, दफनाने या खुली डंपिंग जैसी गैर-जिम्मेदार खतरनाक प्रथाओं को दंडित करने के लिए मजबूत निगरानी होनी चाहिए। इसलिए, अपशिष्ट प्रबंधन के लिए एक समुदाय के नेतृत्व वाली पहल को गांव एडीपी के साथ शामिल किया जाना चाहिए।

पुनर्योजी खेती प्रथाओं का दत्तक ग्रहण संरक्षण कृषि (जैसे, कवर क्रॉपिंग) जैसी प्रथाएं जो प्लास्टिक-गहन तरीकों की आवश्यकता को कम करती हैं, उन्हें अपनाया जाना चाहिए।

कृषि को अधिक लचीला बनाने के लिए स्थायी कृषि प्रथाओं को बढ़ावा देना चाहिए। इन प्रथाओं में वर्मिन-कंपोस्टिंग, बायो-मल्चिंग, बायो-फर्टिलाइजर्स, बायो-कीटनाशक और मिट्टी और नमी संरक्षण शामिल हैं। ये मिट्टी के स्वास्थ्य में सुधार करते हैं, मिट्टी के कार्बन की रक्षा करते हैं और स्थानीय जैव विविधता को पुनर्जीवित करते हैं।

हमें यह देखना चाहिए कि एक आत्मनिर्भर सशक्त कृषक समुदाय कृषि और ग्रामीण आजीविका में सूचित जलवायु कार्रवाई निर्माण लचीलापन का स्वामित्व लेता है और सभी प्रगतिशील कार्य करता है।

भारतीय चेतना, श्रद्धा, विश्वास और समर्पण का प्रतीक है-'रक्षाबंधन'

9 अगस्त 2025 शनिवार को हम भारतीय संस्कृति का पर्व-'रक्षाबंधन' मनाने जा रहे हैं। वास्तव में, 'रक्षाबंधन' सावन पूर्णिमा का सबसे लोकप्रिय और भावनात्मक उत्सव है। इस दिन बहनें अपने भाइयों की कलाई पर राखी (रक्षा सूत्र) बांधती हैं और उनके कल्याण की कामना करती हैं।इस पावन दिन भाई भी बहनों को रक्षा, स्नेह और सम्मान का वचन देते हैं।यह पर्व केवल भाई-बहन के रिश्ते तक ही सीमित नहीं है।राखी या रक्षा-सूत्र केवल भाई-बहन ही नहीं, गुरु-शिष्य, पड़ौसी, सैनिकों और समाज के हर उस व्यक्ति से भी बांधी जा सकती है, जो रक्षा का दायित्व निभाता है या जिससे सुरक्षा की आशा होती है।भारतीय संस्कृति की यह विशेषता रही है कि यहां हर पर्व केवल पूजा का अवसर नहीं, बल्कि जीवन के गहन मूल्यों का भी उत्सव होता है और रक्षाबंधन भी एक ऐसा ही विशेष पर्व है, जो अपने भीतर आध्यात्मिकता, आत्मीयता और बौद्धिकता को समेटे हुए है। कहना ग़लत नहीं होगा कि सावन पूर्णिमा एक धार्मिक पर्व, रक्षाबंधन एक सांस्कृतिक पर्व, और हमारी सनातन भारतीय संस्कृति इन दोनों का आध्यात्मिक आधार है। दूसरे शब्दों में कहें तो यह दिन त्याग, प्रेम, कर्तव्य और रक्षा जैसे मूल्यों को पुनः जागृत करता है। यह पर्व हमें यह सिखाता है कि रिश्ते सिर्फ खून से नहीं, श्रद्धा, सेवा और समर्पण से भी बनते हैं। यहां पाठकों को बताता चलूं कि प्राचीन वैदिक काल में रक्षा-सूत्र केवल भाई-बहन के बीच नहीं, बल्कि यज्ञ करने वाले यजमान और ऋषियों के बीच बाँधा जाता था। यह 'सुरक्षा' और 'आशीर्वाद' का प्रतीक था। कहते हैं कि देवी लक्ष्मी ने राजा बलि को राखी बाँधी थी, ताकि भगवान विष्णु, जो बलि के द्वारपाल बने थे, बैकुंठ लौट सकें। एक अन्य उपलब्ध जानकारी के अनुसार जब भगवान श्री कृष्ण ने सुदर्शन चक्र से शिशुपाल वध किया, तो उनकी उँगली कट गई। उस समय, द्रौपदी ने अपनी साड़ी फाड़कर उनकी उँगली पर बाँधी थी, और तभी भगवान श्री कृष्ण ने उन्हें वचन दिया था, कि वह जीवनभर उसकी रक्षा करेंगे।एक अन्य ऐतिहासिक तथ्य के अनुसार सिकंदर की पत्नी ने राजा पोरस (पुरु) को राखी भेजी थी, और उनसे युद्ध में उसके पति को न मारने की विनती की थी। तब, पोरस ने राखी का मान रखा और युद्ध में सिकंदर को जीवनदान दिया।पाठक जानते होंगे कि राजस्थान के चित्तौड़ की रानी कर्णावती (चितौड़ की रानी) ने बहादुर शाह से युद्ध की आशंका देखकर हुमायूं को राखी भेजकर मदद मांगी थी और हुमायूं ने इसे बहन की पुकार समझकर सेना लेकर उसकी मदद के लिए आया था। यह भी उल्लेखनीय है कि रवींद्रनाथ ठाकुर (टैगोर) ने 1905 में बंगाल विभाजन के विरोध में रक्षाबंधन को हिंदू-मुस्लिम एकता का प्रतीक बनाया। उन्होंने लोगों से एक-दूसरे को राखी बाँधने का आग्रह किया, ताकि सामाजिक एकता बनी रहे। बहरहाल, श्रावण पूर्णिमा के धार्मिक महत्व की यदि हम यहां पर बात करें तो,धार्मिक रूप से यह गुरु पूजन, यज्ञोपवीत (जनेऊ), और समुद्र मंथन की कथा से भी जुड़ा हुआ है। बहुत कम लोग ही यह बात जानते होंगे कि श्रावण पूर्णिमा को गुरु पूर्णिमा भी कहते हैं

(हालाँकि यह कभी-कभी तिथि में अलग भी होती है)। इस दिन वेद व्यास जी का पूजन किया जाता है, जिन्होंने वेदों का विभाजन और महाभारत की रचना की। वास्तव में,

यह दिन गुरु-शिष्य परंपरा को सम्मान देने का दिन होता है। इस दिन ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य वर्ण के लोग यज्ञोपवीत (जनेऊ) का नवीकरण करते हैं। कहना ग़लत नहीं होगा कि इस दिन ऋषियों के संरक्षण के लिए रक्षा-सूत्र बांधा जाता था, जो बाद में रक्षाबंधन के रूप में लोकप्रिय हुआ। पुरोहित आज भी इस दिन यजमानों को 'रक्षा-सूत्र' (मौली) बांधते हैं और वेद मंत्रों से उनकी रक्षा की कामना करते हैं। इस त्योहार (उत्सव) को मनाने के पीछे एक मान्यता यह भी है कि समुद्र मंथन के दौरान देवताओं और असुरों के संघर्ष में, इंद्राणी (इंद्र की पत्नी) ने इंद्र को एक रक्षा-सूत्र बांधा था, जिससे उन्हें विजय प्राप्त हुई थी। एक उपलब्ध जानकारी के अनुसार इस दिन ऋषियों को स्मरण करते हुए ऋषि-तर्पण भी किया जाता है। यहां पाठकों को बताता चलूं कि इस पर्व का 'श्रावणी' नाम इसलिए पड़ा, क्योंकि इस दिन 'श्रवण नक्षत्र' में पूर्णिमा का संयोग होता है। घरों में इस दिन इस नक्षत्र की पूजा की जाती है। वैदिक काल से ही इस दिन को विशेष रूप से उपाकर्म संस्कार के लिए पवित्र माना गया है। उपाकर्म का अर्थ होता है- ज्ञान, तप और जीवन की एक नई शुरुआत। जैसा कि ऊपर जानकारी दे चुका हूं कि इस दिन ब्राह्मण पुरोहित पवित्र नदियों या तीर्थों में स्नान कर तर्पण करते हैं, संकल्प लेते हैं और नया यज्ञोपवीत धारण करते हैं। वैसे, श्रावणी पूर्णिमा का एक रूप 'संस्कृत दिवस' भी है। संस्कृत प्राचीनतम भाषा और सभी भाषाओं की जननी मानी जाती है। हालांकि, संस्कृत केवल एक भाषा मात्र ही नहीं है, बल्कि यह भारत की प्राचीनतम सनातन संस्कृति और ज्ञान परंपरा का मेरुदंड है। यह हमारे वेदों, उपनिषदों, पुराणों, आयुर्वेद, गणित, ज्योतिष और योग की भी भाषा है। सच तो यह है कि संस्कृत में संपूर्ण जीवनदर्शन समाहित है। बहरहाल, रक्षाबंधन ऐसा पर्व है जो परिवारों को आपस में जोड़ता है।यह रिश्तों को मजबूत करता है, रिश्तों को संबल देता है। सच तो यह है कि यह पर्व (रक्षाबंधन) प्रेम, समर्पण और विश्वास का प्रतीक है। यह पर्व 'भाई दूज' (दीपावली पर आने वाले त्योहार) से भी जुड़ता है। इस पर्व का आध्यात्मिक, धार्मिक व सांस्कृतिक महत्व है। बुज़ुर्ग बताते हैं कि कई क्षेत्रों में तो इस दिन आज भी किसान अपने खेतों की मेड़ पर रक्षा सूत्र बाँधते हैं और अच्छी फसल की ईश्वर से कामना करते हैं। सामाजिक समरसता और परस्पर सहयोग का प्रतीक रक्षाबंधन का पर्व सुरक्षा और कर्तव्य बोध का सामाजिक संदेश भी देता है। आधुनिक समय में यह पर्व मित्रता, राष्ट्र सेवा, और नारी सशक्तीकरण का प्रतीक भी माना जाने लगा है। अंत में यही कहूंगा कि

यह पर्व हमें यह सिखाता है कि रिश्तों की रक्षा करना, उन रिश्तों को सम्मान देना और प्रेम से जुड़ना हमारी सनातन भारतीय संस्कृति और हमारी सांस्कृतिक धरोहर का अहम व मुख्य हिस्सा है। श्रावणी पूर्णिमा केवल एक तिथि नहीं, बल्कि भारतीय चेतना का पर्व है। रक्षाबंधन की बधाई और शुभकामनाओं सहित। जय-जय।

सुनील कुमार महला, फ्रीलांस राइटर, कालमिस्ट व युवा

भावनाओं की डोर (कहानी) रक्षाबंधन पर्व विशेष

उत्तराखंड के एक छोटे से पहाड़ी गांव की लड़की कृतिका भले ही एक सामान्य ग्रामीण जीवन जीती थी, पर उसकी सोच असाधारण थी। उसके पिता कैप्टन पीयूष भारतीय सेना से रिटायर्ड थे, जिनके किस्से-कहानियों, बातों से कृतिका का मन और आत्मा देशभक्ति से बचपन से ही ओतप्रोत हो गया था। हर तीज-त्योहार उसके लिए सिर्फ एक परंपरा नहीं, बल्कि देश की सरहद के रक्षकों को याद करने का अवसर भी होता। इस बार सावन पूर्णिमा का पवित्र त्योहार राखी नजदीक आ चुका था। गांव के नजदीक ही एक पहाड़ी पर सशस्त्र सीमा बल (एसएसबी) की एक यूनिट अस्थाई तौर पर तैनात थी। वहां लगभग पचास जवान तैनात थे, जो पिछले दो-तीन सालों से राखी के त्योहार पर अपने घर परिवार से मिलने नहीं जा पाए थे। चूंकि, स्वयं कृतिका के पिताजी सेना से रिटायर्ड कैप्टन थे और उसने घर-परिवार में रहते हुए अक्सर यह महसूस किया था कि उसके पिताजी अनेक बार त्योहार के अवसर पर उनसे मिलने घर पर नहीं आ पाते थे।कृतिका को पता चला कि एसएसबी के जवान भी आपदा प्रबंधन ड्यूटियों के कारण राखी के अवसर पर अपने घर नहीं जा पाए होंगे। यह बात उसके अंतर्मन को छू गई और उसने ठान लिया कि इस बार वह इन वीर जवानों के लिए ऐसा कुछ करेगी जो उनके दिल को छू जाए। राखी से दो दिन पहले, कृतिका ने गांव की अन्य लड़कियों और महिलाओं से मिलकर 'रक्षाबंधन सेवा अभियान' शुरू किया। सभी ने मिलकर राखियां बनाई, मिठाइयाँ पकाई, कुछ ने तो अपने बच्चों की तस्वीरों और चिट्ठियों के साथ राखियां भेजीं—मानो अपने ही सगे

भाइयों के लिए। जिस दिन का इंतजार कृतिका व उसकी सभी सहेलियां कर रही थी, आज वह दिन आ गया था। कृतिका उस दिन बहुत ही खुश व प्रसन्न नजर आ रही थी। रक्षाबंधन के दिन सुबह-सुबह, कृतिका अपने हाथों में फूलों, रंगीन मोतियों तथा गोटा-पट्टी से सजा थाल लिए रोली,मौली, अक्षत-चावल, चंदन, हल्दी, नारियल, दीपक, और खील-बताशों से भरपूर , साड़ी में सजी-संवरी, अपने व सहेलियों के हाथ से बनीं दर्जनों राखियां, मां के हाथ से बने लड्डुओं के डिब्बे और कुछ सहेलियों को लेकर कैंप पहुंची। पहले तो सुरक्षा कारणों से उन्हें रोका गया, लेकिन जब उन्होंने अपना उद्देश्य बताया और जवानों के लिए लाए गए राखी के उपहार दिखाये, तो कमांडिंग ऑफिसर(सीओ) की आंखें भी भीग गईं। कृतिका और उसकी सहेलियों ने एक-एक जवान की कलाई पर राखी बांधी, उनको अक्षत-चावल रौली-चंदन से तिलक किया, आरती उतारी और मिठाई खिलाई। हर राखी के साथ जैसे वे सब मन ही मन यही गा रही थी—'बहना ने भाई की कलाई से प्यार बांधा है, प्यार के दो तार से संसार बांधा है, रेशम की डोरी से संसार बांधा है...!' वह हर जवान के राखी बांधती और कहती-'आप सिर्फ देश के रक्षक ही नहीं, हमारे भी भाई हैं। आज आपकी सगी बहनें भले ही आपसे दूर घर पर हैं, लेकिन हम हैं न!' सभी जवान आज बहुत प्रसन्नचित्त नजर आ रहे थे और बच्चों की तरह मुस्कुरा रहे थे। किसी ने कहा, 'बहना, आज पूरे चार साल बाद राखी बंधवाई है, मां कसम दिल भर आया।' दूसरे ने चुपचाप अपनी आंखें पोंछते हुए यह कहा, 'आज घर की बहुत याद आ रही थी... लेकिन अब नहीं।' कमांडिंग ऑफिसर भी तब तक आ गये थे, उन्होंने भी कृतिका से राखी बंधवाई, मिठाई खाई। जवानों और कमांडिंग ऑफिसर ने सभी बहनों को ढ़ेर सारे उपहार और रूपए भी भेंट किए। बहनों के स्वागत के लिए साउंड सिस्टम और एक छोटा टैंट/शामियाना भी लगाया गया था, रिफ्रेशमेंट की व्यवस्था भी वहां थीं। सच में उस दिन वह कैंप, एक रक्षा चौकी से बदलकर एक बड़ा सा परिवार बन गया था। कमांडिंग ऑफिसर ने कृतिका से कहा, 'आपने आज हमें भाई से ज्यादा इंसान बना दिया। बहुत लोग सीमा प्रहरियों की तारीफ तो बहुत करते हैं, पर आज वह दिन आया है जब, हमें किसी ने दिल से अपना माना है।' शाम को जब कृतिका व उसकी अन्य सहेलियां जब घर लौटी, तो उनके हाथों में खाली थाल थे, लेकिन उनके दिल गर्व, खुशी और आत्मसंतोष से भरे थे। कृतिका की मां ने देखा तो वह मुस्कुरा कर बोलीं, 'आज तूने देश की असली रक्षा की है बेटी।' कृतिका के पिताजी अपने सेवाकाल को याद कर रहे थे और उनकी आंखों में भी आज खुशी के आंसू छलक पड़े थे, उन्हें अपनी बेटी कृतिका पर गर्व महसूस हो रहा था, वे स्वयं को धन्य महसूस कर रहे थे। कृतिका ने आज साबित कर दिया था कि बहनें सिर्फ राखी नहीं बांधतीं, वे भावनाओं की डोर से देश के वीरों को भी जोड़ सकती हैं।

(कहानी पूर्णतया मौलिक और अप्रकाशित है।)

सुनील कुमार महला, फ्रीलांस राइटर, कालमिस्ट व युवा

भारत छोड़ो आंदोलन: आज़ादी के सफर में मील का 'पत्थर'

प्रदीप कुमार वर्मा

विदेशी गुलामी की बेड़ियों में जकड़ी भारत मां को आजाद करने का इतिहास काफी लंबा और पुराना है। यूं तो वर्ष 1857 की क्रांति के बाद स्वाधीनता आंदोलन शुरू हो गया था तथा इस दौरान इस आंदोलन में कई पड़ाव भी आए। लेकिन वर्ष 1942 में स्वाधीनता संग्राम के आंदोलन की यात्रा में सबसे बड़ा रुपड़ावर आया। जब भारतीयों ने रअंग्रेजों भारत छोड़ोर के नारे का ऐलान करते हुए देशव्यापी आंदोलन छेड़ दिया। आजादी के सफर में मील का पत्थर साबित हुए इस एतिहासिक आंदोलन को रअगस्त क्रांतिर के नाम से भी जाना जाता है। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने आजादी की लड़ाई में एक निर्णायक फैसला लेते हुए रकरो या मरोर के नारे के साथअंग्रेजों के खिलाफ बड़ा और तीसरा आंदोलन शुरू किया था। ब्रिटिश की हुकूमत से भारत को आजाद कराने के लिए 1942 में शुरू की गई यही लंबी लड़ाई अगस्त क्रांति दिवस के नाम से देश और दुनिया में चर्चित हुई और भारत की आजादी का सबब भी बनी।

अगस्त क्रांति दिवस यानि 9 अगस्त की तारीख के इतिहास पर गौर करें, तो पता चलता है कि 8 अगस्त 1942 को मुंबई में कांग्रेस की कार्यसमिति की बैठक में रअंग्रेजों भारत छोड़ोर का प्रस्ताव पास किया गया। इस प्रस्ताव में ब्रिटिश शासन की तत्काल समाप्ति, एक अस्थायी सरकार के गठन और ब्रिटिश शासन के विरुद्ध सविनय अवज्ञा की माँग की गई थी। इस आंदोलन का उद्देश्य कांग्रेस की अहिंसा की विचारधारा का पालन करते हुए, अंग्रेजों से भारत को आज़ादी देने का शांतिपूर्ण आग्रह करना था। कांग्रेस के मुंबई अधिवेशन में स्वाधीनता आंदोलन संबंधी प्रस्ताव पारित करने के साथ ही महात्मा गांधी ने विभिन्न समूहों को निर्देश जारी करते हुए आंदोलन में सक्रिय भागीदारी का आग्रह किया गया। इस अपील में सरकारी कर्मचारियों को कांग्रेस के प्रति वफादारी की घोषणा, सैनिकों से अपने देशवासियों पर गोली न चलाने, किसानों को लगान भुगतान ना करने तथा छात्रों को पढ़ाई छोड़ने का विकल्प दिया गया।

इसके साथ ही राजाओं और रियासतों के लोगों से आंदोलन का समर्थन करने का आह्वान भी किया गया। अगले दिन यानि 9 अगस्त को पूरे देश से लोग आज़ादी के इस निर्णायक आंदोलन में शामिल हुए और आंदोलन ने तेज़ी पकड़ी। आंदोलन के दौरान गांधी जी ने आने चर्चित करीब 70 मिनिट के भाषण में कहा कि 'मैं आपको एक मंत्र देना चाहता हूं जिसे आप अपने दिल में उतार लें। यह मंत्र है 'करो या मरो।' इस दौरान 9 अगस्त की सुबह अंग्रेजों ने 'ऑपरेशन जीरो ऑवर' के तहत कांग्रेस के सभी बड़े नेताओं को गिरफ्तार कर लिया था। महात्मा गांधी को पुणे के आगा खां महल में नजरबंद किया गया। स्वाधीनता आंदोलन में शामिल अन्य कांग्रेस कार्यकारिणी के सदस्यों को अहमदनगर के दुर्ग में कैद करके रखा था। अंग्रेजों ने गांधी जी सहित अन्य बड़े आंदोलनकारियों को गिरफ्तार कर लिया। स्वाधीनता आंदोलन में शामिल देश के शीर्ष कांग्रेस नेताओं की गिरफ्तारी के बाद राम मनोहर लोहिया, जेपी नारायण, अरुणा आसफ अली और उषा मेहता जैसे नए आंदोलनकारी आजादी के नए नायकों के रूप में उभरे।

लेकिन इस घटनाक्रम से अंग्रेजों के खिलाफ गुस्सा और भारत की आजादी की जिद भारी पड़ गई। इसके बाद भारतीय नागरिकों के अंग्रेजों के खिलाफ बगावत के सुर तेज हो गए थे। यही वजह रही कि भारत छोड़ो आंदोलन पारंपरिक कांग्रेस के नेतृत्व के बिना भी जारी रहा। छात्रों, मज़दूरों और किसानों सहित विभिन्न पृष्ठभूमि के लोगों ने इस आंदोलन का पुरज़ोर समर्थन किया। नेताओं के गिरफ्तारी के बाद आंदोलन की बागडोर आमजन के हाथों में पहुंच गई थी। यह आंदोलन अहिंसक था,लेकिन किसी ओर ही मोड पर पहुंच गया था। आंदोलनकारियों ने अंग्रेजों की खिलाफ हिंसा का सहारा लिया गया। इस दौरान करीब 250 रेलवे स्टेशन, 150 पुलिस थाने और करीब 500 पोस्ट ऑफिस को आग के हवाले कर दिया गया था। ब्रिटिश सरकार के आंकड़ों के मुताबिक 940 लोग मारे गए थे और 1630 लोग घायल हुए थे। वहीं साल के अंत तक 60,229 लोग अपनी गिरफ्तारी दे चुके थे। लेकिन कांग्रेस के अनुसार करीब 10 हजार लोगों की जान जा चुकी थी।

आंदालोन को रोकना अंग्रेज सरकार के हाथों से बाहर हो रहा था। इसके बाद उन्होंने लाठी और बंदूक के सहारे भीड़ को रोकने की कोशिश की। लेकिन अंग्रेजों के खिलाफ गुस्सा बढ़ता गया। भारत छोड़ो आंदोलन से डरी हुई अंग्रेज सरकार ने सभी तरह के जुलूस पर प्रतिबंध लगा दिया। कांग्रेस को ही अवैध संस्था घोषित कर दिया गया। साथ ही देशभर में हुए नुकसान के लिए गांधी जी को जिम्मेदार ठहराया गया। इस आंदोलन के परिणामस्वरूप, ब्रिटिश अधिकारियों ने भारतीय स्वतंत्रता के बारे में चर्चाओं को अधिक गंभीरता से लेना शुरू कर दिया। कांग्रेस को एक गैरकानूनी संगठन घोषित कर दिया गया और देश भर में उसके कार्यालयों पर छापे मारे गए और उनकी धनराशि ज़ब्त कर ली गई। प्रमुख नेताओं की गिरफ़्तारी के साथ, भारत छोड़ो आंदोलन हिंसक हो गया।

इस दौरान बड़े पैमाने पर सरकारी इमारतों पर छापे मारने और उन्हें आग लगाने जैसी व्यापक तोड़फोड़ की घटनाएँ हुईं। कमज़ोर समन्वय और स्पष्ट कार्ययोजना के अभाव में 1943 तक आंदोलन थम सा गया। वर्ष 1944 में भारत छोड़ो आंदोलन को कुचल दिया गया था और अंग्रेज़ों ने यह कहते हुए तत्काल स्वतंत्रता देने से इनकार कर दिया था कि स्वतंत्रता युद्ध समाप्ति के बाद ही दी जाएगी। इस आंदोलन और द्वितीय विश्व युद्ध के बोझ के कारण ब्रिटिश प्रशासन को यह अहसास हो गया कि भारत को लंबे समय तक नियंत्रित करना संभव नहीं था। इस आंदोलन के कारण अंग्रेज़ों के साथ भारत की राजनीतिक वार्ता की प्रकृति ही बदल गई। भारत छोड़ो आंदोलन ने अंग्रेजों को दिखा दिया कि भारतीय स्वतंत्रता पाने के लिए दृढ़ संकल्पित हैं। इसने अंग्रेजों पर दबाव डाला और अंततः 1947 में भारत को स्वतंत्रता दिलाने में मदद की। इसके बाद 1947 में लॉर्ड माउंटबेटन को भारत का वायसराय नियुक्त किया गया। इसके बाद संघर्ष जारी रहा और 15 अगस्त 1947 को भारत आजाद हो गया।

प्रकृति की नाराज़गी हैं भयंकर ...!

नाराज़ प्रकृति की नाराज़गी हैं भयंकर,
स्वार्थवश संसाधनों का 'दोहन' निरंतर।
प्रकृति-मानव का संबंध सदियों पुराना,
ऊपर उठाया लाभ चुरा लिया खजाना।
पिघल रहे ग्लेशियर जलवायु परिवर्तन,
असमय बाढ़, सूखा, तूफान, भूस्खलन।
प्राकृतिक विपदाओं से जूझ रहा मानव,
मानवीय हस्तक्षेप की भूमिका में दानव।
अचानक बाढ़ गांवों का अस्तित्व मिटा,
घटनाओं ने जन-धन का नुकसान लूटा।
इस भीषण तबाही के हम साक्षी बने हैं,
सालों की मेहनत 30 सेकंड लें चलें हैं।

संजय एम तराणेकर

आदिवासी दिवस: विस्मृति से स्मृति तक की यात्रा

[धरा के असली वंशज, आज क्यों हाशिए पर हैं?]

विश्व आदिवासी दिवस, 9 अगस्त, केवल एक तारीख नहीं, बल्कि एक जागृति का आह्वान है—आदिवासी समुदायों की अनसुनी आवाज़ों, समृद्धविरासत और संघर्षों को सम्मान देने की पुकार। ये समुदाय, जिन्होंने सहस्राब्दियों से प्रकृति की रक्षा की, आज स्वयं संरक्षण की माँग करते हैं। उनकी जीवनशैली, लोकज्ञान, भाषाएँ और परंपराएँ हमें प्रकृति के साथ संतुलित प्रगति का पाठ पढ़ाती हैं। फिर भी, आधुनिकता की दौड़ में उन्हें हाशिए पर धकेला गया, उनके अधिकार छीने गए और उनकी पहचान मिटाने की कोशिशें हुईं। यह दिवस हमें अन्याय के खिलाफ खड़े होने, उनकी आवाज़ बनने और एकजुटता दिखाने का संकल्प दिलाता है।

विश्व आदिवासी दिवस की शुरुआत 1982 में संयुक्त राष्ट्र के स्वदेशी आबादी पर कार्य समूह की पहली बैठक से हुई। 1994 में संयुक्त राष्ट्र महासभा ने 9 अगस्त को यह दिवस मनाने का निर्णय लिया, ताकि आदिवासी समुदायों के अधिकारों, उनकी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और पर्यावरण संरक्षण में उनके योगदान को सम्मान मिले। विश्व भर में लगभग 37-50 करोड़ आदिवासी 7,000 भाषाओं और 5,000 संस्कृतियों की धरोहर संजोए हुए हैं। ये मात्र 5% वैश्विक जनसंख्या हैं, पर 15% से अधिक वैश्विक गरीबी का बोझ उठाते हैं। यह आंकड़ा उनकी सामाजिक-आर्थिक चुनौतियों को उजागर करता है, जो हमें उनके संघर्षों के प्रति जागरूक और संवेदनशील होने का आह्वान करता है।

भारत के आदिवासी समुदाय देश की सांस्कृतिक आत्मा हैं, जो 10.4 करोड़ से अधिक लोगों (8.6% जनसंख्या) के साथ इसकी विरासत को समृद्ध करते हैं। मुख्यतः झारखंड, ओडिशा, छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश, राजस्थान और पूर्वोत्तर राज्यों में बसे ये समुदाय—जैसे राजस्थान के बांसवाड़ा (76.38%), डूंगरपुर (70.82%) और प्रतापगढ़ (63.42%) में—अपनी अनूठी संस्कृति से क्षेत्र को जीवंत बनाते हैं। उनकी परंपराएं, प्रकृति से गहरा जुड़ाव दर्शाने वाले सरहुल, कर्मा, भगोरिया जैसे त्योहार, गोंड-भील नृत्य, वारली चित्रकला और हस्तकला भारतीय विरासत के अनमोल रत्न हैं, जो हर दिल को छूते हैं।

आदिवासियों का प्रकृति के साथ अटूट रिश्ता प्रेरणा देता है—वे नदियों को माँ, पहाड़ों को देवता और पेड़ों को जीवन का आधार मानते हैं। उनकी जीवनशैली सिखाती है कि सच्चा विकास प्रकृति का सम्मान और संरक्षण है, न कि शोषण। संयुक्त राष्ट्र की रिपोर्ट के अनुसार, आदिवासी विश्व की 22% भूमि की रक्षा करते हैं, जो जैव विविधता को संजोए रखती है। लेकिन 'विकास' के नाम पर उनकी जमीनें छीनी जा रही हैं। डूंगरी बांध परियोजना से 20,000 आदिवासी बेघर हो सकते हैं, 3,000 हेक्टेयर जंगल नष्ट हो सकते हैं, और 10,000 हेक्टेयर जमीन उनके हाथ से जा सकती है। यह एक चेतावनी है कि औद्योगिक परियोजनाएं उनके अस्तित्व के लिए गंभीर खतरा हैं।

आदिवासियों की चुनौतियां सिर्फ जमीन छिनने तक सीमित नहीं हैं। शिक्षा, स्वास्थ्य और रोजगार जैसी बुनियादी सुविधाओं से वे अक्सर वंचित रहते हैं। संयुक्त राष्ट्र की एक रिपोर्ट बताती है कि भेदभाव, गरीबी और सेवाओं की कमी उनके जीवन को जकड़ रखती है। भारत में आदिवासी बच्चों में कुपोषण की दर राष्ट्रीय औसत से कहीं अधिक है, और उनकी साक्षरता दर भी पीछे छूटती है। सबसे दुखद, उनकी भाषाएं और संस्कृतियां खो रही हैं। विश्व की 7,000 आदिवासी भाषाओं में से 40% लुप्त होने के कगार पर हैं, क्योंकि ये शिक्षा या सरकारी कामकाज में जगह नहीं पातीं। भारत में भिली, गोंडी, संथाली जैसी भाषाएं धीरे-धीरे गायब हो रही हैं, क्योंकि युवा पीढ़ी मुख्यधारा की भाषाओं को अपनाने को मजबूर है।

विश्व आदिवासी दिवस 2025 की थीम, "आदिवासी लोग और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई): अधिकारों की रक्षा, भविष्य का निर्माण", डिजिटल युग में आदिवासी समुदायों की सशक्त भागीदारी का आह्वान करती है। यह थीम जोर देती है कि तकनीक का लाभ आदिवासियों तक पहुंचे, ताकि वे अपनी संस्कृति, भाषा और अधिकारों को न केवल बचा सकें, बल्कि उन्हें नई ऊंचाइयों तक ले जाएं। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस उनकी लुप्तप्राय भाषाओं को संरक्षित करने, उनकी कला को विश्व मंच पर चमकाने और उनके हकों की पैरवी करने का एक शक्तिशाली हथियार बन सकता है। मगर, यह तभी संभव है जब तकनीक को उनके लिए सुलभ, समावेशी और सांस्कृतिक रूप से संवेदनशील बनाया जाए।

आदिवासी समुदायों के अधिकारों को मान्यता देना केवल नैतिक कर्तव्य नहीं, बल्कि संवैधानिक और वैश्विक जिम्मेदारी है। भारत में, संविधान के अनुच्छेद 342 के तहत अनुसूचित जनजातियों को विशेष दर्जा प्राप्त है, और 13 सितंबर 2007 को संयुक्त राष्ट्र द्वारा अपनाया गया आदिवासियों के अधिकारों पर घोषणा पत्र (यूएनडीआरआईपी) उनकी संस्कृति, भाषा और जमीन के अधिकारों को मजबूती से रेखांकित करता है। मगर, इन अधिकारों का अमल अब भी अधर में लटका है। आदिवासी समुदाय बार-बार विस्थापन, भेदभाव और शोषण का शिकार हो रहे हैं, जो हमें उनके हक के लिए और मुखर होने का आह्वान करता है।

विश्व आदिवासी दिवस हमें झकझोरता है—क्या हम सचमुच उन समुदायों को सम्मान और समानता दे पा रहे हैं, जिन्होंने हमें प्रकृति के साथ सामंजस्य का पाठ पढ़ाया? उनकी लोककलाएं, जैसे वारली चित्रकला और मधुबनी कला, न केवल भारत की सांस्कृतिक धरोहर को चमकाती हैं, बल्कि वैश्विक मंच पर भी गर्व का सबब बनती हैं। मांदर की गूंज और छऊ नृत्य की लय हमें हमारी जड़ों से जोड़ती है। मगर, अगर हम उनकी जमीन, भाषा और संस्कृति को नहीं बचा पाए, तो यह अमूल्य विरासत खोखली होकर रह जाएगी, और हम अपनी आत्मा का एक हिस्सा गंवा देंगे।

आदिवासी समुदायों को मुख्यधारा में लाना उनकी पहचान को मिटाना नहीं, बल्कि उन्हें शिक्षा, स्वास्थ्य और रोजगार के अवसर देना है, ताकि वे अपनी संस्कृति को संजोते हुए आधुनिकता का हिस्सा बन सकें। सरकार, गैर-सरकारी संगठन और समाज को मिलकर ऐसी नीतियां बनानी होंगी जो उनकी अनूठी विरासत का सम्मान करें। विश्व आदिवासी दिवस हमें आदिवासी समुदायों को सम्मान और समानता देने का संकल्प लेने का अवसर देता है। उनकी जमीन, संस्कृति और भाषा हमारी साझा धरोहर हैं। इनके बिना हमारी सभ्यता अधूरी है। इस दिवस पर, उनकी आवाज बुलंद करें, उनके अधिकारों की रक्षा करें और उनके योगदान को गर्व से स्वीकार करें। यह एक दिन का उत्सव नहीं, बल्कि सतत प्रयास का आह्वान है, ताकि आदिवासी समुदाय हमेशा सुरक्षित और सम्मानित रहें।

झारखंड के सरायकेला जिले में पुनः ऐमोनियम नाईट्रेट ,पेट्रोलियम जैली बरामद

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

सरायकेला ,आज सरायकेला खरसावां जिले के कुचाई एवं सिंहभूम जेलें के सीमावर्ती जंगली इलाके से पुनः विस्फोटक सामग्री एमनियम नाईट्रेट की चालिस पैकेट जप्त की गयी है ।

पुलिस के अनुसार एस पी सरायकेला-खरसावॉ मुकेश लुनायत को गुप्त सूचना प्राप्त हुई कि प्रतिबंधित भा0क0पा0 (माओ0) नक्सली संगठन के उग्रवादियों द्वारा कुचाई थाना के दलभंगा ओ0पी0 अन्तर्गत ग्राम-मासीबेरा हिल एरिया के समीप पहाड़ी क्षेत्र में गोला-बारूद छिपाकर सुरक्षा बलों के विरूद्ध उनका अभियान रोकने तथा लक्षित कर क्षति पहूँचाने के उद्देश्य से कुछ वर्ष पूर्व छिपाकर रखा गया है। जिसके आलोक में सरायकेला-खरसावॉ पुलिस के साथ चाईबासा पुलिस, झारखण्ड जगुआर, सी0आर0पी0एफ0 एवं एस0एस0बी0 का एक संयुक्त अभियान का गठन करते हुए वृहस्पतिवार को कुचाई थाना के दलभंगा ओ0पी0 अन्तर्गत ग्राम-मासीबेरा हिल एरिया के आस-पास जंगली/पहाड़ी क्षेत्रों में सर्च अभियान चलाया गया ।

संयुक्त अभियान दल द्वारा अग्रतर सर्च अभियान के दौरान वृहस्पतिवार को कुचाई थाना के दलभंगा ओ0पी0 अन्तर्गत ग्राम-मासीबेरा हिल एरिया के समीप पहाड़ी क्षेत्र में नक्सलियों द्वारा पूर्व में छिपाकर रखे गये 1. एक ब्लू कलर का प्लास्टिक कन्टेनर में अमोनिया नाईट्रेट पाउडर-20 पैकेट (प्रत्येक 01 कि0ग्रा0) 2. बड़ा स्टील कन्टेनर में अमोनिया नाईट्रेट पाउडर-40 पैकेट (प्रत्येक 01 कि0ग्रा0) कुल 60 कि0ग्रा0 अमोनिया नाइट्रेट्स का पाउडर के साथ वैसिलीन पेट्रोलियम जैली-10 पैकेट (प्रत्येक 42 ग्रा0) बरामद कर सुरक्षा के दृष्टिकोण से उसी स्थान पर बम निरोधक दस्ता के सहायता से विनिष्ट किया गया है। इस संदर्भ में विधि-सम्मत अग्रतर कार्रवाई की जा रही है। इस अभियान दल मेंसरायकेला-खरसावॉ पुलिस,चाईबासा पुलिसझारखण्ड जगुआर, सी0आर0पी0एफ0, एस0एस0बी0।

रक्षाबंधन के बदलते मायने: परंपरा से आधुनिकता तक

रक्षाबंधन का धागा सिर्फ कलाई पर नहीं, दिल पर बंधता है। यह एक वादा है—साथ निभाने का, सुरक्षा का, और बिना कहे समझ लेने का। बहन की राखी में वो मासूम दुआ होती है जो शब्दों में नहीं कही जाती, और भाई की आंखों में वो संकल्प होता है जो हर चुनौती से लड़ने का हौसला देता है। समय चाहे जितना बदल जाए, दूरियाँ जितनी भी हो, ये धागा हर बार रिश्तों की गर्मी लौटा लाता है। रक्षाबंधन एक उत्सव नहीं, एक एहसास है—जो हर साल हमें जोड़ता है।

लेखिका: डॉ. प्रियंका सौरभ

भारत विविधताओं से भरा देश है, जहां हर त्यौहार न केवल धार्मिक आस्था का प्रतीक होता है, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक रिश्तों को भी मजबूत करता है। इन्हीं में से एक विशेष पर्व है — रक्षाबंधन, जो भाई-बहन के रिश्ते की मिठास, प्रेम और सुरक्षा का प्रतीक है। लेकिन बदलते समय, समाज, तकनीक और सोच के साथ-साथ रक्षाबंधन के मायने भी बदल रहे हैं। यह बदलाव केवल रस्मों तक सीमित नहीं है, बल्कि इस पर्व की आत्मा, इसके उद्देश्य और इसके सामाजिक संदर्भ में भी स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।

रक्षाबंधन की जड़ें भारतीय इतिहास, पौराणिक कथाओं और सामाजिक परंपराओं में गहराई से जुड़ी हैं। द्रौपदी और श्रीकृष्ण की कथा हो या रानी कर्णावती द्वारा हुमायूं को भेजी गई राखी, यह पर्व सदा से रक्षक और संरक्षित के बीच एक नैतिक संकल्प का प्रतीक रहा है। पहले के समय में राखी केवल भाई-बहन के खून के रिश्ते तक सीमित थी। बहन भाई की कलाई पर राखी बाँधती थी और भाई जीवनभर उसकी रक्षा करने का वचन देता था। यह रिश्ता स्नेह, विश्वास और समर्पण से भरा होता था।

अब रक्षाबंधन का दायरा केवल खून के रिश्तों तक सीमित नहीं रहा। आज कई महिलाएं अपने दोस्तों, सहकर्मियों, शिक्षकों, सैनिकों और यहां तक कि प्रकृति को भी राखी बाँधती हैं। यह दर्शाता है कि "रक्षा" अब केवल एक व्यक्ति विशेष का दायित्व नहीं, बल्कि सामाजिक और भावनात्मक संबंधों की व्यापक जिम्मेदारी बन चुका है। इसका सबसे सुंदर उदाहरण है कि अब बहनें भी अपने छोटे भाइयों को कहती हैं — "मैं भी तेरी रक्षा करूँगी।" यानी सुरक्षा का रिश्ता अब एकतरफा नहीं रहा, यह परस्पर बन गया है।

तकनीक ने आज रिश्तों के समीकरण ही बदल दिए हैं। पहले जहां राखी भेजने के लिए डाकघर जाना पड़ता था, अब एक क्लिक में डिजिटल राखियाँ, वीडियो कॉल, ऑनलाइन गिफ्टिंग और वर्चुअल सेरेमनी हो रही हैं। विदेशों में बसे भाई-बहन अब भले दूर हों, लेकिन वीडियो कॉल पर राखी बाँधने की परंपरा, स्क्रीन पर तिलक और डिजिटल मिठाई ने एक नई तरह की जुड़ाव की भावना पैदा की है। कुछ लोग भले इसे भावनाओं की कमी कहें, लेकिन सच्चाई यह है कि तकनीक ने दूरी को पाटने का जरिया भी दिया है।

पहले रक्षाबंधन पर भाई बहन को मिठाई और उपहार देता था। यह एक तरह से प्रेम की अभिव्यक्ति थी। लेकिन अब कई बहनें कहती हैं — ₹भैया, गिफ्ट नहीं चाहिए, थोड़ी सी फुर्सत चाहिए, समय चाहिए, समझ चाहिए।₹ आज की बहन आत्मनिर्भर है। वह भावनात्मक सुरक्षा, मानसिक सहयोग और बराबरी की भागीदारी चाहती है। उपहार की जगह अब रिश्तों में पारदर्शिता, संवाद और समय की मांग अधिक हो गई है।

पुराने जमाने में रक्षाबंधन का अर्थ था — ₹भाई बहन की रक्षा करेगा।₹ परंतु आज यह परिभाषा बदल रही है। लड़कियाँ भी आज आत्मनिर्भर हैं, अपने भाइयों की मदद कर रही हैं, उन्हें मानसिक और आर्थिक संबल दे रही हैं। रक्षाबंधन अब यह नहीं कहता कि केवल भाई ही रक्षक होगा, बल्कि यह दर्शाता है कि भाई और बहन दोनों एक-दूसरे की ज़िंदगी में सुरक्षा, समर्थन और प्रेरणा बन सकते हैं।

आज के समय में रक्षाबंधन केवल भाई-बहन का पर्व नहीं रहा, यह प्रकृति की रक्षा, सामाजिक सौहार्द और समानता का प्रतीक भी बन चुका है। कई स्थानों पर पेड़ों को राखी बाँधने की परंपरा चल पड़ी है — ₹वृक्ष-रक्षा बंधन₹। बच्चें और महिलाएं वृक्षों को राखी बाँधकर यह संदेश दे रही हैं कि हम केवल मानव की नहीं, प्रकृति की भी रक्षा के लिए प्रतिबद्ध हैं। इसी तरह से सैनिकों को राखी भेजना यह बताता है कि देश की रक्षा करने वाले वीरों के साथ भी हम भावनात्मक रूप से जुड़े हैं।

बहनें अब केवल रक्षा की याचक नहीं, बल्कि स्वाभिमानी, आत्मनिर्भर और संवेदनशील भी हैं। कई परिवारों में बहनें ही भाइयों की आर्थिक, शैक्षणिक या सामाजिक मदद कर रही हैं। यह बदलाव यह संकेत करता है कि रक्षाबंधन अब पौरुष और स्त्रीत्व के सांचे से बाहर निकल कर इंसानी मूल्यों और बराबरी के धरातल पर खड़ा हो रहा है।

आज के इस व्यस्त जीवन में भावनाओं की अभिव्यक्ति के तरीके भले बदल गए हों, लेकिन उनकी अहमियत कम नहीं हुई है। भाई-बहन अब केवल राखी के दिन नहीं, सालभर एक-दूसरे के जीवन में सहयोगी बने रहते हैं। रक्षाबंधन एक बहाना है उन रिश्तों को फिर से जीने का, जिनमें कभी झगड़े थे, कभी मिठास, कभी नाराज़गी और कभी अपार स्नेह। यह पर्व हमें याद दिलाता है कि रिश्ते बनाए नहीं जाते, निभाए जाते हैं।

आज रक्षाबंधन केवल हिंदू धर्म या भारतीय संस्कृति तक सीमित नहीं रहा। यह पर्व अब सांप्रदायिक सौहार्द, राष्ट्रीय एकता और सामाजिक समरसता का प्रतीक भी बन चुका है। कई जगह मुस्लिम लड़कियाँ हिंदू भाइयों को राखी बाँधती हैं, ईसाई बच्चे सैनिकों को राखी भेजते हैं — यह सब इस बात का संकेत हैं कि रक्षा का संकल्प मानवता का संकल्प है, न कि केवल किसी धर्म, जाति या समुदाय का।

रक्षाबंधन के बदलते मायने हमें यह समझाते हैं कि त्योहार केवल रस्में नहीं होते, वे विचार होते हैं, भावना होते हैं। आज का रक्षाबंधन हमें यह सीख देता है: कि रक्षा एकतरफा नहीं, परस्पर होती है। कि रिश्ते खून से नहीं, भावना से बनते हैं। कि प्रकृति, समाज और देश भी हमारी रक्षा के हकदार हैं। और यह कि महिला केवल संरक्षित नहीं, संरक्षक भी हो सकती है। रक्षाबंधन अब केवल एक पर्व नहीं, एक दार्शनिक दृष्टिकोण है — जो कहता है कि प्रेम, समर्पण और समानता से ही समाज और रिश्ते टिक सकते हैं।

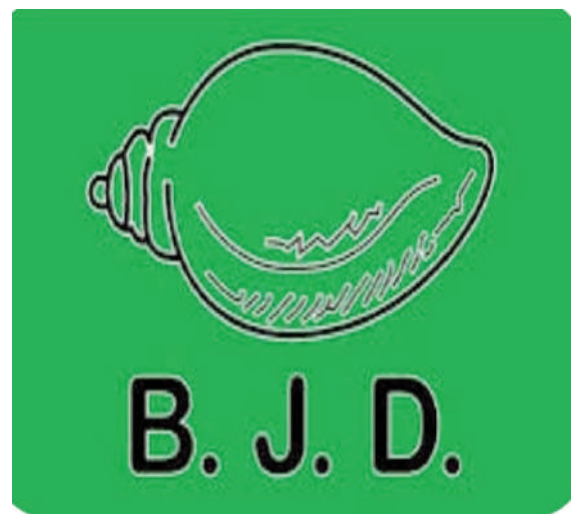

उपराष्ट्रपति चुनाव से पहले बीजद ने लिया बड़ा फैसला

मनोरंजन सासमल , बरिष्ठ पत्रकार

भूबनेश्वर : बीजेडी नेता महेश साहू ने उपराष्ट्रपति चुनाव को लेकर बड़ा बयान दिया है। उन्होंने कहा, ₹बीजेडी एनडीए समर्थित उम्मीदवारों का समर्थन नहीं करेगी। हमने राष्ट्रपति पद के लिए पार्थी का समर्थन ओडिशा की बेटी होने के नाते किया था। अब वह स्थिति नहीं है, इसलिए पूरा विरोध होगा।₹ महेश ने कहा। जगदीप धनखड़ के उपराष्ट्रपति पद से इस्तीफे के बाद राष्ट्रीय और राज्य की राजनीति में एक नया समीकरण उभर कर सामने आया है। चुनाव आयोग ने 9 सितंबर को उपराष्ट्रपति चुनाव कराने का फैसला किया है। धनखड़ के इस्तीफे को लेकर राष्ट्रीय स्तर पर कई तरह की अटकलें लगाई जा रही हैं। हालांकि उन्होंने अपने त्यागपत्र में स्वास्थ्य कारणों का हवाला दिया है, लेकिन विपक्षी दल इसे लेकर संशय में हैं। चूंकि धनखड़ ने दिन में राज्यसभा की कार्यवाही हमेशा की तरह समाप्त होने के बाद रात में अचानक अपने इस्तीफे की घोषणा की, इसलिए विपक्ष अनुमान लगा रहा है कि इसके पीछे भाजपा की कोई योजना होगी। इस संबंध में, वे भाजपा के दृष्टिकोण पर कई सवाल भी उठा रहे हैं। इसे देखते हुए, इस बात पर संदेह है कि अगला उपराष्ट्रपति चुनाव आम सहमति के आधार पर होगा। अगर 'इंडी मेंट' उपराष्ट्रपति पद के लिए अपना उम्मीदवार उतारती है, तो ओडिशा में विपक्षी दल बीजद क्या रुख अपनाएगा, जबकि राज्य का राजनीतिक परिदृश्य चर्चा का विषय बना हुआ है, अब बीजद ने इस पर प्रतिक्रिया दी है।

माला, मीटिंग और मौन हसला: हरियाणा की शिक्षक ट्रांसफर ड्राइव का कटु सच

(MIS डेटा, ट्रांसफर नीति और कैबिनेट बैठकों की चर्चाएँ केवल लटकाने की औपचारिकता)

शिक्षकों के बीच यह धारणा गहराती जा रही है कि MIS डेटा, ट्रांसफर नीति और कैबिनेट बैठकों की चर्चाएँ केवल औपचारिकता बनकर रह गई हैं। कई बार इन्हें निर्णयों को टालने या प्रक्रिया में पारदर्शिता के भ्रम को बनाए रखने के साधन के रूप में देखा जाता है। शिक्षक स्थानांतरण प्रक्रिया अब पारदर्शिता और निष्पक्षता की कसौटी पर खरी नहीं उतर रही है। MIS पोर्टल, नीति और मीटिंग अब बहाने लगने लगे हैं। संगठन मौन हैं और शिक्षकों में असंतोष गहराता जा रहा है। शिक्षा विभाग को चाहिए कि वह नीति को स्पष्ट, तिथि को निश्चित और प्रक्रिया को जवाबदेह बनाए। वरना यह असंतोष आंदोलन में बदल सकता है। शिक्षक सम्मान के साथ कार्य करें, यह तभी संभव है जब उन्हें उनके अधिकार बिना अपील के प्राप्त हों।

डॉ. सत्यवान सौरभ

हरियाणा में शिक्षक ट्रांसफर ड्राइव अब एक सामान्य प्रशासनिक प्रक्रिया न रहकर, एक गंभीर शैक्षिक और सामाजिक मुद्दा बन चुका है। हर साल शिक्षक समुदाय इस प्रक्रिया से जुड़ी पारदर्शिता, समयबद्धता और न्यायसंगत व्यवहार की उम्मीद करता है, लेकिन हर बार उन्हें निराशा ही हाथ लगती है। हाल ही में सोशल मीडिया पर एक फूलों की माला वाली तस्वीर वायरल हुई, जिसमें लिखा था: "आज की मीटिंग के बाद ट्रांसफर ड्राइव।" यह व्यंग्य मात्र नहीं, बल्कि शिक्षक समाज की वेदना का प्रतीक बन गया।

ट्रांसफर प्रक्रिया आज भी एक कठिन पहेली बनी हुई है, जहाँ शिक्षक की मेहनत, समर्पण और सेवा से अधिक महत्व तकनीकी पेचिदगियों और प्रक्रियात्मक अस्पष्टताओं को दिया जा रहा है। MIS पोर्टल की शुरुआत पारदर्शिता के उद्देश्य से की गई थी, लेकिन व्यवहार में यह कई बार शिक्षकों के लिए भ्रम और हताशा का कारण बना है।

MIS पोर्टल पर शिक्षकों से उम्मीद की जाती है कि वे अपनी वरीयताएँ भरें, उपलब्ध स्कूलों के विकल्प चुनें और एक निष्पक्ष प्रक्रिया के तहत स्थानांतरण प्राप्त करें। लेकिन प्रक्रिया की गति, स्पष्टता और परिणामों को लेकर निरंतर संशय बना रहता है।

कई बार ट्रांसफर ड्राइव शुरू होने की तिथि तय नहीं होती, बार-बार प्रक्रिया स्थगित होती है, और शिक्षकों को यह जानकारी नहीं मिलती कि सूची कब जारी होगी, किस आधार पर स्थानांतरण किया जाएगा, या यदि उनका ट्रांसफर नहीं हुआ तो उसके कारण क्या हैं। यह सब शिक्षक समुदाय में विश्वास की कमी और प्रशासनिक पारदर्शिता पर सवाल खड़े करता है।

शिक्षक संगठनों की जिम्मेदारी है कि वे शिक्षकों की समस्याओं को सामने लाएँ, उन पर संवाद करें और समाधान की दिशा में दबाव बनाएँ। लेकिन जब शिक्षक सोशल मीडिया पर यह पूछने लगें—"हसला चुप क्यों है?"—तो यह केवल एक सवाल नहीं, बल्कि एक गहरी पीड़ा का संकेत है।

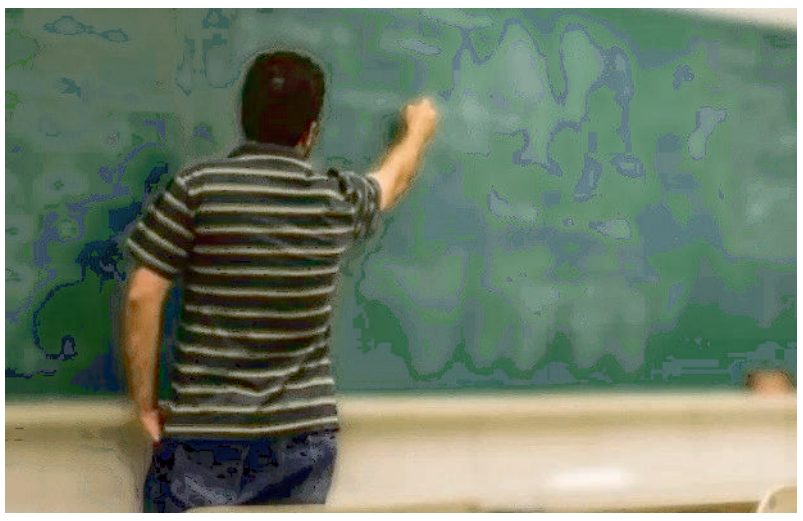

शिक्षकों की अपेक्षा है कि संगठन उनकी आवाज़ बने, लेकिन यदि वे केवल बयानबाज़ी तक सीमित रहें या जमीनी स्तर पर निष्क्रिय दिखें, तो उनका भरोसा डगमगाने लगता है। संगठनों को यह आत्ममंथन करना होगा कि वे शिक्षकों की आकांक्षाओं पर कितना खरा उतर पा रहे हैं।

हालिया ट्रांसफर ड्राइव से पहले हरियाणा के मॉडल स्कूल के लिए चयन परीक्षा का आयोजन किया गया, जिसमें हज़ारों शिक्षकों ने भाग लिया। यह परीक्षा बताई गई आगामी ट्रांसफर नीति का आधार होनी थी, लेकिन आज तक उस नीति को अंतिम रूप नहीं दिया गया है। जब तक कोई स्पष्ट नियमावली नहीं होती, तब तक किसी भी चयन प्रक्रिया का कोई औचित्य नहीं बचता।

यह स्थिति शिक्षकों के मन में भ्रम उत्पन्न करती है और उनकी मेहनत को व्यर्थ साबित करती है। नीति पहले बने, फिर परीक्षा हो—यह एक बुनियादी प्रशासनिक सिद्धांत है, जिसका पालन आवश्यक है।

शिक्षकों के बीच यह धारणा गहराती जा रही है कि MIS डेटा, ट्रांसफर नीति और कैबिनेट बैठकों की चर्चाएँ केवल औपचारिकता बनकर रह गई हैं। कई बार इन्हें निर्णयों को टालने या प्रक्रिया में पारदर्शिता के भ्रम को बनाए रखने के साधन के रूप में देखा जाता है।

जब ठोस परिणाम सामने नहीं आते, तो यह संदेह स्वाभाविक है कि पूरी प्रक्रिया कहीं न कहीं किसी रणनीति से प्रेरित हो रही है। इस प्रकार की सोच प्रशासन और शिक्षक समुदाय के बीच विश्वास की खाई को और गहरा कर देती है, जो कि किसी भी स्वस्थ शिक्षा व्यवस्था के लिए घातक सिद्ध हो सकता है।

शिक्षक आज केवल पढ़ाने तक सीमित नहीं हैं। वे डाटा एंट्री, दीवार लेखन, विभिन्न प्रकार के सर्वेक्षण, वोटर सूची निर्माण, मिड-डे मील की निगरानी, आपदा प्रबंधन जैसे कई दायित्वों में लगाए जाते हैं। लेकिन जब वे अपने स्थानांतरण की बात करते हैं—परिवार के पास जाने की, स्वास्थ्य कारणों से पास के स्थान पर नियुक्ति की, तो उन्हें केवल प्रक्रिया, मीटिंग और पोर्टल की बाधाओं में उलझा दिया जाता है।

यह व्यवस्था केवल असंतोष नहीं, बल्कि शिक्षकों की कार्यक्षमता और मनोबल को भी प्रभावित करती है।

यदि ट्रांसफर ड्राइव एक नीतिगत प्रक्रिया है, तो उसके सभी चरणों की स्पष्टता ज़रूरी है। हाल में हुए चयन परीक्षाएँ और उनके परिणामों को लेकर कोई स्पष्ट दिशानिर्देश नहीं है। न तो वरीयता सूची जारी हुई, न ही यह बताया गया कि इनका ट्रांसफर प्रक्रिया में क्या स्थान होगा।

शिक्षकों को हर स्तर पर यह जानकारी दी जानी चाहिए कि कौन सी प्रक्रिया कब और क्यों हो रही है। पारदर्शिता केवल डिजिटल प्रणाली से नहीं आती, बल्कि सटीक जानकारी और संवाद से आती है।

स्थानांतरण नीति को शीघ्र और स्पष्ट रूप से अधिसूचित किया जाए, जिसमें प्रक्रिया, समयसीमा, अपील प्रणाली, और वरीयता निर्धारण के स्पष्ट बिंदु शामिल हों। MIS पोर्टल की कार्यप्रणाली की स्वतंत्र समीक्षा की जाए, जिससे यह सुनिश्चित हो सके कि कोई भेदभाव नहीं हो रहा। सभी चयन परीक्षाओं की नियमावली और उद्देश्य स्पष्ट हों, ताकि शिक्षक भ्रमित न हों। शिक्षक संगठनों की जवाबदेही तय की जाए, और उनसे अपेक्षा हो कि वे समय पर शिक्षकों के पक्ष में प्रभावी रूप से आवाज़ उठाएँ। स्थानांतरण प्रक्रिया को RTI के तहत पूरी पारदर्शिता में लाना भी उपयोगी होगा।

शिक्षक समाज का शिल्पकार होता है। यदि उसे स्थानांतरण जैसी मूलभूत सुविधा के लिए भी संघर्ष करना पड़े, तो यह केवल एक व्यक्ति का अपमान नहीं, बल्कि पूरे शिक्षा तंत्र की विफलता है। हमें यह समझना होगा कि शिक्षकों को केवल कर्तव्यों से नहीं, बल्कि अधिकारों से भी सशक्त बनाया जाना चाहिए। संस्थान, नीति और प्रशासन का दायित्व है कि वे शिक्षक की गरिमा को बनाए रखें। प्रक्रिया को जटिल नहीं, सरल और पारदर्शी बनाना होगा। शिक्षक से अपेक्षा तभी की जाए जब उन्हें उनका हक बिना माँगे मिले।

बाबाधाम में प्रोटोकॉल उलंघन पर सांसद निशिकांत तथा मनोज तिवारी पर मामला दर्ज

पंडा धर्म रक्षिणी के कार्तिक नाथ ठाकुर ने जहां दर्ज कराया केस वहीं निशीकांत ने कहा दिल्ली से कल आ रहा हुं थाने में जाकर गिरफ्तारी दुंगा .

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड झारखंड

रांची। भाजपा नेता सांसद निशिकांत दुवे तथा मनोज तिवारी पर श्रावणी मेला के दौरान बैधनाथ मंदिर में जबरन गर्भगृह में घुसने एवं पूजा पाठ करने को लेकर

एक प्राथमिकी दर्ज हई है. वीवीआईपी दर्शन और गर्भगृह में पर रोक के बावजूद भाजपा नेता मनोज तिवारी और निशिकांत दूबे से सारे प्रोटोकॉल को तोड़ते हुए मंदिर की गर्भगृह में घुसने पर पंडा धर्म रक्षिणी के पूर्व महामंत्री कार्तिकनाथ ठाकुर ने एफआईआर दर्ज करा दिया है.उधर निशीकांत दुवे ने कहा है कल मैं दिल्ली से आऊंगा . पूजा के कारण मामला हुआ है मैं सीधे थाना जाऊंगा गिरफ्तारी दुंगा .

दुवे ने भाजपा सांसद मनोज तिवारी के लिए वीवीआईपी दर्शन की व्यवस्था करवाई. पंडा धर्मरक्षिणी महासभा के पूर्व महासचिव कार्तिक नाथ ठाकुर ने आरोप लगाया है कि निशिकांत दुबे ने अपनी शक्तियों का इस्तेमाल कर मंदिर परिसर में अराजकता पैदा की और

भारी विरोध के बावजूद मनोज तिवारी को वीवीआईपी दर्शन कराया गया .

श्रावणी मास के दौरान बीजेपी सांसद मनोज तिवारी ने सुल्तानगंज से गंगाजल लेकर पैदल कांवर यात्रा की. इसी महीने की 2 तारीख को वह देवघर पहुंचे थे. रास्ते में गोड्डा सांसद निशिकांत दुबे भी उनके साथ रहे. दोनों सांसदों के अलावा निशिकांत के बेटे कनिष्कान्त, पीए शेषाद्रि दुबे, मनोज तिवारी के पीए समेत अन्य लोग कांवरिया पथ से होते हुए बाबा मंदिर पहुंचे. रात 8:45 से 9 बजे के बीच तीर्थ पुरोहितों द्वारा बाबा मंदिर के गर्भगृह में शाम का कांचा जल चढ़ाया जा रहा था. इसी बीच गर्भगृह के निकास द्वार पर हंगामा शुरू हो गया. गर्भगृह के पास मौजूद पंडा, धर्म रक्षिणी सभा के पूर्व महासचिव सह झारखंड प्रदेश आदित्य वाहिनी के महासचिव कार्तिकनाथ ठाकुर हंगामा सुनकर निकास द्वार पर पहुंचे. उन्होंने देखा कि सांसद निशिकांत दुबे, मनोज तिवारी, निशिकांत दुबे के पुत्र, दोनों सांसदों के पीए और देवघर के कुछ भाजपा कार्यकर्ताओं ने निकास द्वार पर मौजूद पुलिस और प्रशासनिक अधिकारियों के साथ धक्का-मुक्की की और जबरन गर्भगृह में प्रवेश कर पूजा की और फिर सभी वहां से चले गए. कार्तिकनाथ ठाकुर ने बाबा मंदिर थाने में इसकी लिखित शिकायत की. उन्होंने आरोप लगाया है कि जब सावन माह में मंदिर में किसी प्रकार का कोई वीआईपी ट्रीटमेंट नहीं मिलता है तो फिर वे लोग मनिकास गेट से धक्का-मुक्की कर कैसे प्रवेश कर गए. जबरन प्रवेश के समय मंदिर परिसर में भगदड़ जैसा माहौल हो गया था.

श्रद्धालुओं के साथ कोई भी अप्रिय घटना घट सकती थी. सांसदों द्वारा जबरन प्रवेश कर पूजा करने से पूजा बाधित हुई और व्यवधान भी हुआ. कार्तिकनाथ ठाकुर की शिकायत पर बाबा मंदिर थाने में सात अगस्त को मामला दर्ज किया गया है. सभी आरोपियों पर बीएनएस की विभिन्न धाराओं के तहत मामला दर्ज किया गया है, जिसमें जानबूझकर धार्मिक पूजा में बाधा डालना, शांति भंग करने वाले कृत्य, लोक सेवक पर हमला, दूसरों की जान या सुरक्षा को खतरे में डालने समेत कई आरोपों के तहत प्राथमिकी दर्ज की गयी है. कांड संख्या 4/25 में धारा 52/54/56/57/59/61/125/127/132/135/189(1)ए/190/195(1)/196(1)बी/221/292/298 व 300 बीएनएस लगाया गया है.

जंगल में महिला से सामूहिक बलात्कार: 3 आरोपी गिरफ्तार, इनमें दो नाबालिग भी शामिल

मनोरंजन सासमल , बरिष्ठ पत्रकार

भूबनेश्वर : अंगुल जिले के छेंदीपाड़ा ब्लॉक और बागेड़िया थाना क्षेत्र में पिछले रविवार को एक शर्मनाक घटना घटी। पल्लहाड़ा इलाके से अपने रिश्तेदारों के घर आई एक महिला के साथ तीन ट्रैक्टर मज़दूरों ने सामूहिक बलात्कार किया। कल थाने में शिकायत दर्ज होने के बाद, पुलिस ने 24 घंटे के भीतर तीनों आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया।आरोपियों में दो नाबालिग भी शामिल हैं। पुलिस ने इसे 'विशेष रिपोर्ट' और 'रेड फ्लैग केस' के रूप में वर्गीकृत किया है और एक महीने के भीतर आरोप पत्र दाखिल करेगी, एसपी राहुल जैन ने बताया। एसपी श्री जैन की देखरेख में, IUCAW (महिलाओं के विरुद्ध अपराध की जाँच इकाई) की डीएसपी योगेश्वरी बेहरा को मामले की जाँच सौंपी गई है।बताया गया है कि पीड़िता का घर पल्लहाड़ा इलाके में है। वह 3 तारीख को छेंदीपाड़ा में अपने एक रिश्तेदार के घर आई थी। उस दिन दोपहर 3 बजे वह अपने रिश्ते के भतीजे के साथ बाइक पर घर लौट रही थी। रास्ते में वह एक होटल में खाना खाती और चारबतिया में बाइक में पेट्रोल भरवाती। हालांकि, अधरास्ता

में जब महिला शौच के लिए गई थी, तो ट्रैक्टर से आ रहे बरमंचा गांव के रंजन कुमार मुखी (28) समेत दो नाबालिगों ने उसे देख लिया। महिला को अकेला देखकर आरोपी उसे पास के जंगल में ले गए। विरोध करने पर आरोपियों ने उसके रिश्ते के भतीजे की पिटाई की और उसे भगा दिया। कल बगेड़िया थाने में शिकायत दर्ज कराई गई कि रंजन समेत दो नाबालिगों ने पीड़िता के साथ दुष्कर्म किया और मोबाइल फोन में वीडियो बना लिया।ऐसी संवेदनशील घटना की शिकायत मिलने के बाद, बुधवार को पुलिस डॉग स्क्वायड और वैज्ञानिक टीम के साथ मौके पर पहुँची और जाँच की। पुलिस ने धारा 70(1), 351(3) और बीएनएस एक्ट की धारा 66(ई) के तहत मामला दर्ज कर जाँच शुरू कर दी है। एसपी की निगरानी में पुलिस की तीन टीमें गठित की गईं और आरोपियों का पता लगाकर उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। पुलिस ने इस काम में लगे ट्रैक्टर चालक के दो मोबाइल फोन और कपड़े भी जब्त कर लिए हैं। जिला पुलिस ने बताया है कि पीड़िता और आरोपी का मेडिकल परीक्षण करा लिया गया है।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023